गली अनारकली

मूल्य : पच्चीस रुपये (25.00)

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006 द्वारा प्रकाशित

GALI ANARKALI (Novel) by Dr. Lakshmi Narayan lal

गली अनारकली

डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल

राजपाल एण्ड सन्ज़

हना आरेण्ट की एक पुस्तक के पहले पेज पर पढ़ा था :
"शहर बनाने वाले काम के देवता उदास हैं।"

एक

मकान के फाटक के सामने एक पर्दाबन्द तांगा आकर रुका। ऊपर की मंजिल से अम्मी जान की आवाज आई—अरे अलीरज़ा आ गए बंबई से!

यह जगह, जहा से यह दास्तान शुरू हो रही है, यह उन्नीस सौ अस्सी के भी आगे सन बयासी का लखनऊ! उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ शहर! लखनऊ मे हुसैनाबाद। हुसैनाबाद में गली अनारकली। गली अनारकली में अली बहादुर का गुलफिशा। गुलफिशां के इस पुराने मकान की बनावट पुरानी नवाबी नही, कपनी के वक्त की नवाबी शैली की है। बड़े-बड़े पीलपाये, चौड़ा बरामदा और दरवाज़ों पर झिलमिलिया। कमरों में बेलबूटेदार काम। आगन से खंडहर—गिरा-बिखरा हुआ खंडहर—लखारी ईंटों और पत्थरो का जखीरा। मकान मालकिन आयशा बेगम, जिन्हें गली-मोहल्ले के लोग अम्मी बेगम के नाम से जानते हैं, अपनी तीन बेटियो के साथ यहा रहती थी। इन लोगो का धधा, बस ज़िन्दा रहना था।

तांगे से बीस नही, बाइस साल की लडकी जिसे लोग जनम से ही लाइलाज बीमार मानते है, सम्हालकर उतारी गई। मकान के अन्दर ले जाई गई। इस लडकी का नाम है अपाला। यह नाम इसकी हालत देखकर इसे किसी साधु ने दिया था बचपन में ही। यह अपाला, अप्पी के नाम से पुकारी और जानी जाती थी। क्या बीमारी है, इलाज क्या है, इसीलिए बबई ले जाई गई थी, मामू के लडके अलीरजा के साथ। बबई मे अप्पी के अब्बा जान आयशा बेगम को तलाक देकर रह रहे थे। अलीरज़ा को एक तरफ ले जाकर बड़ी बहन—तहमीना ने पूछा—बीमारी का कुछ पता चला?

—कोई कहता है कोई सदमा है। नर्वस थाइसिस है। जिगर का तपेदिक है। किसी की राय है खून का कोई अजूबा कैंसर है।

—छोटी बहन, गुलनार के पूछने पर अलीरज़ा ने बताया कि बंबई के सबसे बड़े अस्पताल जसलोक के डाक्टर की राय है कि अप्पी की बीमारी साइकोलॉजिकल है।

अम्मी जान ने कुछ भी न पूछा। अपाला के पीले मुख को अपने अंक में छिपाकर कहा—इशाअल्लाह। मेरी बेटी पर खुदा का रहम होगा। उस साधु की दुआ जरूर लगेगी''। यह कहते-कहते अम्मी जान फफक कर रो पडी। बडी बहन तहमीना सकते के आलम मे अपनी जगह वही की वही बैठी रह गई।

तहमीना की उमर अब चालीस के आसपास हो चुकी थी। बीस साल की उमर से लेकर अब तक उसके तीन निकाह और तीन तलाक हो चुके हैं, मगर उसकी खूबसूरती और जवानी में जैसे कही कोई फर्क नही आया। अलीरज़ा ने आज जैसे इतने सालों बाद देखा, तहमीना की खूबसूरती में कितनी संजीदगी है।

शाम को अलीरज़ा ने पूछा—तहमीना बी, अब क्या प्रोग्राम है जिन्दगी का?

—यह तो बड़ा जबर्दस्त सवाल है। आपका क्या प्रोग्राम है?

—मैं बेहद उलझा हुआ हूं'''जैसे कोई अपने ही बनाए जाल में गिरफ्तार हो।

—बहुत खूब।

यह कहकर अपाला हंस पड़ी, बेतहाशा।

—यह हसती है तो डर लगने लगता है।

यह कह कर गुलनार वहा से हट गई।

अलीरज़ा साहब मुंह लटका कर चुप थे। सचमुच सब अपने जाल में गिरफ्तार हैं? अपाला यानी अप्पी बडी बहन के पास आकर बोली—अलीरज़ा भाई को अब मालूम हुआ कि 'पुलेसरात' पर से चलना क्या मानी रखता है। वहा इंसान खुद को धोखा देने के लिए चाहे जितना हिंदू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, बौद्ध बन ले, मगर सब की रूहे तो एक हैं। बटी हुई दुनिया मे रूहों को तकलीफ लाजमी है।

अलीरज़ा मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ के पढ़े हुए थे—अरबी और अंग्रेजी मे एम० ए०। सन् सत्तर से बहत्तर तक माट्रियल, कनाडा में मेकगिल यूनिवर्सिटी के इस्लामिक स्टडीज मे फैलो रहे। उसके बाद बी० बी० सी० लदन मे उर्दू प्रोग्राम से जुडे थे। आजकल पिछले चार सालों से बंबई मे फ्री लांस कर रहे हैं। कभी-कभार फिल्मों में डायलॉग लिखना, नही तो इधर-उधर हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी यहां तक की फिल्मी मैगजीनों में भी अलीरज़ा साहब लिखने से बाज नही आते।

बंबई से लखनऊ आने का कोई बहाना यह अपने हाथ से नही जाने देते। इन्होंने भी दो शादियां कीं मगर तलाक देकर मेहर की

रकम अदायगी से डरे नहीं।

सुना जाता है कि तहमीना से इनका इश्क है, मगर तहमीना को कोई यकीन नहीं। तहमीना को पता है, यह बातें बहुत करते है, बातों को अमल में लाने से जैसे डरते है। इन्हीं की वजह से उसने दूसरे शौहर से बिना मेहर के तलाक लिया, मगर अलीरजा साहब निकाह नहीं कर सके। तहमीना को पक्का यकीन है - अलीरज़ा साहब हिंदुस्तान के उन लोगों में हैं जो लफ्ज़ों के व्यापारी हैं, जो लफ्ज की ताकत और खोखलेपन मे पूरा यकीन रखते है। तहमीना अपनी इतनी जिन्दगी जीकर, अपने आस-पास की सच्चाइयों को देखकर इस नतीजे पर पहुच चुकी है कि सबके अपने-अपने प्राइवेट नरक, निजी तहखाने और पर्दों मे छिपी हुई बेहद तकलीफदेह दुनियाएं है जिनमें से निकलने का कोई रास्ता नहीं है क्योंकि वे दूसरों से चोरी की मदद से खुद की बनाई हुई हैं।

अगले दिन गुलफिशां के बाहरी बड़े कमरे मे आसपास की तमाम औरतें, लड़कियां, कुछ बुर्कों मे, कुछ खुले मे, कुछ रिक्शों मे, कुछ पैदल इकट्ठा होने लगीं।

अलीरजा ने पूछा—यह सब क्या चक्कर है ?

तहमीना बोली बस, देखते जाइए।

—काश, देखना इतना आसान होता।

—देखिए, लखनऊ की चिकनकारी।

—तो यहां चिकन का काम होने लगा है ? इस पैमाने पर ?

तहमीना अपने काम मे लग गई। एक ओर चौदह साल से लेकर चालीस साल तक की मुसलमान औरतें, लडकियां, दूसरी ओर चिकनकारी में काम आने वाली चीजें, कपडे, फ्रेम, सुई-तागे और कढाई की बेशुमार डिजाइनें। कपडों मे भी ज्यादातर मलमल, आरगंडी और कैंमरिक। कुछ सूती, कुछ रेशमी, कुछ जापानी-अमेरिकन सिंथेटिक कपड़े। मगर जब से नाइलोन के कपडों पर कढाई होना शुरू हुआ है, तब से पर्दगी और बेपर्दगी में एक अजीब लड़ाई छिडी है।

गुलफिशां के पडोस में असद मंजिल से लगी हुई तमाम नई-पुरानी, छोटी-बड़ी इमारतें हैं। इमारतें कहना ठीक न होगा, उन्हें मकान ही कह सकते हैं। गुलफिशां से चार मकान छोडकर जो मकान है—आधा नया, आधा पुराना सुलतानखाना, उसके पीछे जो कुछ पर्दे में हो रहा है, वह सब इस बात की गवाही देता है कि कैसे लखनऊ के नक्खास निकसन बाजार हुए और किस तरह, कैसे नीले खून वाले नवाबजादे रिक्शे चला रहे है।

और कैसे औरतें, लड़कियां इंसान से माल और सामान हो रही हैं।

छोड़िए इस बात को। आइए, यहां से थोड़ा आगे बढ़िए, देखिए। छोटा इमामबाड़ा, बड़ा इमामबाड़ा के चारों ओर बने हुए तमाम इतने छोटे-छोटे कमरों क्या, सिर छुपाने की जगह में पूरा का पूरा परिवार कैसे रह रहा है! दरवाजों पर टाट के मोटे-मोटे गंदे पर्दे। पर्दों के भीतर एक पूरी स्याह दुनिया—गरीबी, बेकारी और हर तरह की गंदगी में डूबी हुई बेपनाह-मनहूस दुनिया।

अब यहां से लखनऊ डेवलेपमेंट एथारिटी दफ्तर में आइए। डालीगंज रोड की कचहरी में या लखनऊ के हस्पतालों में आइए। लखनऊ चिकन के तमाम कारखानों में जाइए—चाहे वे प्राइवेट हों, चाहे सरकारी, जहां कहीं भी मुसलमान औरतों से किसी चीज का रिश्ता है—चाहे वह कोई हुनर हो या पेशा, बीमारी हो या गमी, खुशी हो या हार, जिस्म हो या कोई सलूक, मोहब्बत हो या धोखा, हर जगह जैसे किसी ढहती हुई इमारत का नक्शा तैयार किया जा रहा है। ढहती हुई इमारतें, चाहे वे पुराने मकान हों चाहे नए, चाहे वे स्लम के दड़बे हों चाहे किसी शाही इमारत के हुजरे हों, सब जगह जैसे देखी-अनदेखी चिकनकारी हो रही है। असंख्य उंगलियां, असंख्य आखें, बेहिसाब कसीदाकारी में लगी हुई सांसें मानो कह रही हैं—हमारे रब! हम पर सब्र के दहाने खोल दे और हमें इस हालात से ऊपर उठा कि हम मुसलमान बने रहें।

लखनऊ चौक से लेकर अमीनाबाद और हजरतगंज के बाजार में यह बात गर्म है, कि बंबई, अमृतसर और बड़ौदा से चिकनकारी कपड़े के बड़े व्यापारी एक्सपोर्ट करने वाले ट्रेडर्स आए हैं। उनकी मर्सीडीज, इम्पाला गाड़ियां एजेंटों के साथ हुसैनाबाद, मुफ्तीगंज, कश्मीरी मुहल्ला, हसनपुरिया, बजीर बाग, ठाकुर गंज, नूरबाड़ी, शहादतगंज, मोतीमहल और राजा बाजार में दौड़ रही हैं।

दोनों इमामबाड़ों के बीच हुसैनाबाद रोड पर खाली रिक्शा चलाते हुए कमाल के कानों में रुकी हुई मर्सीडीज में बैठे किसी मुसाफिर के मुंह से निकली यह बात टकराई—दौलत की तरक्की से मजहब का क्या ताल्लुक? आज की दुनिया नफरत के ताने-बाने पर जिन्दा है···।

कमाल रिक्शे से कूदकर मोटरगाड़ी के सामने आ खड़ा हुआ। आदाब अर्ज कर कड़ककर बोला—तुम इंडिया में रहते हो?

—कौन हो तुम?

—तुम हिंदू व्यापारी हो न?

—जी नहीं।

—अच्छा, मुसलमान हो ?

—जी।

कमाल ने बड़ी बेतकल्लुफी से कहा—तो खुदा की बांटी की हुई रोटी तुम इस तरह झूठ बोलकर कमाते हो ?

—ओह ! तुम हो कौन ?

—जो तुम हो।

मोटरगाड़ी से बाहर निकलकर एक्सपोर्ट व्यापारी आमीर रज़ा एकटक कमाल को देखते हुए बोला—तुम्हारा नाम क्या है ?

—कमाल।

—लखनऊ के हो ?

—हर जगह का हूं—गोंडा, लखनऊ, फैजाबाद, दिल्ली, बम्बई, अहमदाबाद, कलकत्ता, लाहौर, ढाका…

—बस, बस, बस। यहां क्या करते हो ?

—फिलहाल रिक्शा चलाता हूं।

—गाड़ी चलाना जानते हो ?

—बेशक, क्या नहीं जानता !

—तो आ जाओ।

—लो, आ गया।

कमाल उसी बेतकल्लुफी से मर्सीडीज चलाने लगा।

—हुज़ूर आदाब करता हूं। कहां किधर जाना है ?

—किसी हसीना के पास ले चलो।

कमाल ने सिर घुमाकर देखते हुए कहा—हुजूर, आप इतने उदास क्यों हैं ? आपकी तबीयत ठीक नहीं। गम बेकार है। आइए, मैं आपको एक खूबसूरत औरत का गाना सुनाता हूं।

यह कहकर कमाल ने अपने मुंह से झंकार के साथ आरकेस्ट्रा संगीत बजाना शुरू किया—

…इधर हम अपनी रसेलो के पास नहीं गए, हशीश पीते रहे।
और हमारी दाश्ताएं अपने को अकेला पाकर आपस में लड़ती रहीं।
और एक-दूसरे के मुंह और बाल नोचती रहीं।
जाहिर है, इससे बहुत नुकसान हुआ
नुचे हुए मुंह, गंजे सिर वाली औरत
हमारी निगाह में मुकम्मल हुस्नवाली नहीं होती।

मुसाफिर के मुंह से निकला—अरे, क्या बकता है ?

कमाल चुप हो गया।

बोला—हुजूर, आपको औरत चाहिए या लड़की ?
—अरे, कोई बढ़िया माल हो, 'ए वन'।
—ए टू से काम नहीं चलेगा ?
—बको मत ! आई एम ए बिजनेस मैन !

जिस समय हुसैनाबाद रोड पर उस व्यापारी से कमाल की ये बातें हो रही थीं, उसी समय वहां से डेढ़ किलोमीटर दूर गली अनारकली में अलीबहादुर के गुलफिशां घर में अम्मी आयशा बेगम अपनी बेटी अपाला से पूछ रही थीं—तुम्हें तुम्हारे अब्बा जान ने इतने दिनों तक अपने साथ रखा ?

—जी हां, अम्मी। अब्बा जान ने तुम्हें तलाक दिया है मगर वह हम सबको भूले नहीं हैं। एक दिन अब्बा जान के मुंह से ये निकला कि अम्मी, मैंने तुमसे ही डरकर [illegible] ब्बा जान आप मुझसे डरकर भागे हैं [illegible] क्यों दिया ? ये कहां की इंसानियत है ? इस पर अब्बाजान के मुंह से निकला कि अगर मैं यह इंसान ही होता तो इस कदर भागता क्यों ? और अम्मी एक दिन अब्बा ने मुझसे कहा मैं क्यों इस तरह तुमको छोड़कर लखनऊ से बंबई चला आया ? सिर्फ रुपये कमाने के लिए ? जानती हो इसकी वजह क्या है ? इसके जवाब में मेरे मुंह से निकला कि अब्बा जान आप खुदा से डरकर भागे हैं। मुझे देखकर शायद आपको खुदा की याद आती थी। मेरी बीमारी वही ईश्वर का रूप है। मेरी यह बात सुनकर अब्बा जान वहां मेरे सामने से हट गए और फिर तीन दिनों तक नहीं लौटे।

अम्मी जान ने कहा—तुम्हारे मुंह में जो आता है तुम बिना सोचे-समझे बक जाती हो।

अपाला ने कहा—जी हां, अम्मी, ये मेरी मजबूरी है। मैं क्या करूं ?

रात को खाने के बाद अम्मी, बड़ी बहन तहमीना, छोटी बहन गुलनार और अलीरजा सब अपाला को घेरकर बैठे हुए थे। अपाला कह रही थी - लोग डर के मारे खुदा के पास से इस कदर भाग रहे हैं कि वे मुड़कर पीछे भी नहीं देखना चाहते। मेरे अब्बा जान उन्हीं में से एक हैं। मेरे आसपास के कितने लोग उसी भगदड़ में शामिल हैं।

इतना सुनना था कि अलीरजा मारे गुस्से के कांपने लगे—ये बेवकूफ जाहिल लड़की की इस तरह की बकवास से मैं बहुत परेशान हो गया हूं। इस तरह से यह बंबई में लोगों से बकवास करती थी। रास्ते भर इसने मेरे साथ इसी तरह की बदतमीजियां की हैं। बंबई में अपने अब्बा जान के

साथ इसने न जाने कितनी बदतमीजियां की हैं। इसे कभी खुदा भी नही माफ करेगा।

गुलनार को भी अपाला पर गुस्सा आ रहा था। उसे महसूस हो रहा था कि जैसे अपाला कोई जलती हुई लकड़ी लेकर उसके मुह पर लकीरें खींच रही है। अलीरज़ा के साथ वह भी गुस्सा दिखाती हुई चली गई।

यह कैसा हादसा था। अम्मी जान और तहमीना बहुत घबरा गई थीं। अपाला रोशनी की तरफ दोनो हाथ उठाकर कहने लगी—या अल्लाह, जो लोग भाग रहे हैं उन्हें तुम रास्ते मे क्यों रोक लेते हो? रोक-कर उन्हें फिर तुम छोड़ क्यों देते हो? तुम उन्हें भगाते भी हो तुम्हीं उन्हें रोकते भी हो? कमाल हो तुम।

अम्मी जान और तहमीना दोनो उसके सिर और पीठ पर हाथ फेरने लगी। अम्मी कह रही थी—या खुदा, मेरी बेटी पर रहम कर।

अम्मी कह रही थीं—अप्पी बेटे, कुछ बोलो नहीं, खामोश रहो। बोलने से तुम्हारी कमजोरी और बढ़ जाएगी।

अपाला बहुत धीरे-धीरे कहने लगी—आखिर भागने का वह मरकज खुदा ही तो है। जो उसके जितने नजदीक होता है वही उससे उतनी ही दूर भागता है। और हैरत की बात ये कि उसे इसका पता भी नही होता। मेरी अम्मी ने मेरे अब्बा को भागते हुए देखा है। देखती हू लोग छोडकर कैसे भागते है। ईसा मसीहा को छोड़कर उनके वे शिष्य भागे थे जो उनके बहुत नजदीक थे। रसूल को छोड़कर उनके अपने लोग भागे थे। महात्मा बुद्ध को छोडकर उनके भक्त ही तो भागे थे। तब से लोग भाग ही तो रहे है। लोग कहते है, शैतान, अज्ञान, भूख, लालच लोगो को भगाते हैं। अम्मी जान, लोग तब भागते हैं जब उन्हे उस जगह खुदा का अहसास होता है। यह अहसास उस अंधेरे मे होता है जहां थोड़ी-थोड़ी रोशनी चमकती रहती है। हम उस रोशनी को देखते तो हैं, समझ नही पाते और हमेशा नादान बच्चों की तरह बेतरह परेशां होकर उस अंधेरे से छुटकारा पाने के लिए भागते है···मैं आज आप लोगों को बताती हू, तब मेरी उम्र यही चार-पाच साल की रही होगी। रात के अंधेरे मे मेरी नींद अचानक खुल जाती। मैं धीरे से अब्बा जान को जगाती और पूछती कि अब्बा जान, मेरी बीमारी क्या है? मुझे लोग बीमार क्यो कहते है? और लोग क्या बीमार नही हैं? मैं तो अपने ईश्वर से सीधे बातें करली हूं। अपने खुदा से गाने सुनती हूं, उसके साथ गाती-नाचती हूं। इसे लोग बीमारी क्यों मानते हैं? अब्बाजान मुझे दुलारकर कहते, सो जाओ, मेरी बच्ची, इस तरह की बातें नहीं करते। तुम इस कदर इतनी परेशां क्यों

होती हो ? फिर अब्बाजान चुपचाप मेरे मुंह में कोई दवा डाल देते और मैं उनकी खुशी के लिए चुप हो जाती। मुझे हफ्तों नींद न आती। मैं ये बातें सबसे छिपाती। इस राज़ को सिर्फ मेरे अब्बाजान जानते थे। इसी लिए अब्बाजान मुझसे दूर भागे।

दो

लखनऊ के जिस इलाके मे कमाल, आमीर रज़ा को उसी की वेशकीमती कार में धीरे-धीरे घुमा रहा था, बाहर वालो के लिए इस इलाके के चप्पे-चप्पे अजीबो-गरीब किस्से-कहानियों से भरे पड़े थे। कमाल बड़ी खास-खास बातें बता रहा था, खासकर लखनऊ की हसीन खूबसूरत लड़कियों के बारे में। मगर आमीर रज़ा को बदशक्ली, गंदगी, गरीबी, मनहूसियत के अलावा कही कोई खास बात नज़र न आती। चारों ओर खंडहर, बदबू, फटेहाली, गमखोरी और खटराग के, जो जमाने ने फैला रखा है।

आमीर ने परेशान होकर पूछा—हे, तुम्हारा नाम क्या है ?

—कमाल !

—मुझे कहां ले जा रहे हो ?

कमाल ने कहा—हुज़ूर। कब, कहां, क्यों, कैसे…क्या आदमी बगैर किसी सवाल के कुछ नही कर सकता ? आदमी कुछ चाहता है इसीलिए कुछ कर रहा है। इतनी सी बात और दुनिया भर के सवाल-जवाब।

आमीर ने फिर पूछा—कमाल ! तुम क्या करते हो ?

—हुज़ूर ! मैं सब काम करता हूं—खानसामा, बावर्ची, ड्राइवर, धोबी, मोची, मजदूर, सिपाही, शिकारी, पहलवान, नाचने-गाने वाला… झाड़ू देना, शायरी, इश्क, लड़ाई, बगावत, जादू-टोना, लकलका, ज्योतिष…!

—बस बस भाई, बस !

आमीर रज़ा बड़े गौर से कमाल को देखने लगा। लम्बा, हट्टा-कट्टा, जवान, सख्त हाथ, मजबूत जबड़े। बडी-बड़ी आंखें। फटे-मैले कपड़े, साफ-सुथरे मजबूत दांत। लम्बी मोटी उंगलियां। बड़े-बड़े कान। सीना, बाज़, कल्ला, पीठ, जांघ पर सख्त मांसपेशियां।

कार रुकी हुई थी। आमीर ने पूछा—अब कहां क्या करना है ?

—मतलब…?

— · मतलब यह कि माल ?

—हुजूर ! यह देखिए भापड़ूम छाप चाय की दुकान ! सौ-सौ के महज दो नोट सामने की पाकेट में रख लीजिए। चाय पीने बैठिए। जब तक चाय आएगी, उससे पहले कोई आदमी आएगा, चाय का प्याला लिए हुए। आपके सामने बैठकर चुपचाप चाय पिएगा। जैसे ही आपकी चाय आएगी, वह आदमी धीरे से पूछेगा, हुजूर, कहां बाहर से तशरीफ लाए हैं ? आप कोई जवाब न दीजिए। बस, एक अंगड़ाई लीजिए। वह कहेगा पचास मेरे ! आप सौ का एक नोट दिखाइए। वह इशारे से उठेगा—आइए हुजूर, मेरे साथ। आप उसके साथ। वह आदमी आप से इतनी दूरी पे चलेगा कि कोई हादसे की बात हो तो वह आपकी पकड़ में न आ सके। मतलब आप पुलिस के आदमी हों, कोई अफसर हाकिम हों तो वह आसानी से रफूचक्कर हो सके। हां, तो आप उसके साथ चलेंगे। वह आपको जगह-जगह ले जाएगा। पर्दा उठाकर दिखाएगा। जिस मकान में आपको जो चीज जंच जाए, आप उस मकान के मेहमान···।

आमीर रजा ने एक लंबी सांस ली—यार ! इतना वक्त किसके पास है ? और तिस पर इतनी मेहनत, मुझसे न होगा।

—तो होटल के कमरे में ही ?

—उससे तंग आ चुका हूं।

—फिर तो 'चेंज' के लिए थोड़ी जेहमत उठानी ही पड़ती है। जैसे आप जंगल में शिकार खेलने जाएं, गोया मछली पकड़ने, पतंग लड़ाने···!

यह कहते-कहते कमाल ने मोटरगाड़ी के सब शीशे चढ़ाकर गाड़ी को एक किनारे 'लॉक' किया और चाभी देते हुए बोला—हुजूर, आप बेफिक्र होकर जाइए। किसी चीज का गम न कीजिए। आप कहें तो मैं यहीं आपका इंतज़ार करूं। गाड़ी की रखवाली करूं। यों अभी यहां मोटरगाड़ी की चोरी नहीं होती। ना ही किसी ने लड़कियों के मामले में किसी मुसाफिर को धोखा दिया है। सब पर्दे में शरीफाना ढंग से होता है···।

—सुनो, तुम भी मेरे साथ चलो।

—शुक्रिया हुजूर। मुझे इस चीज का जरा भी शौक नहीं।

—कमाल है !

—यही तो मेरा नाम है। तभी तो !

—तुम आदमी हो या···?

—हुजूर ! मैं खाक हूं !

—चुप बे !

—खुदा हाफिज !

—मेरा इंतजार करना !

—बेशक !

—ये लो सौ रुपए का नोट। खा-पी लेना।

कमाल कुछ बोले, इससे पहले ही आमीर रज़ा चला गया।

कमाल की बताई हुई सारी बातें आमीर रज़ा को याद थीं। दरअसल सब कुछ उसी तरह होने लगा। चाय की प्याली लिए एक बुजुर्ग-सा आदमी आया, ठीक उसी तरह आंखें मिलीं। इशारे भरी बातें हुईं। सौदा तै हो गया। अब माल देखने की बात रह गई।

असद मंजिल के आगे चलते हुए खुली गंदी नालियों से जो बदबू फैल रही थी, उससे आमीर का दम घुटने लगा। आदमी ने कई दरवाज़ों के पर्दे उठा-उठाकर कई लड़कियां दिखाईं मगर आमीर का भेजा आसपास की बदबू और गंदगी से इस कदर भन्ना रहा था कि उसे जैसे कोई लड़की ही नहीं दिख रही थी।

गुलफिशां वाली गली में वही टूटा-सा मकान। सुलतानखाना। दरवाजे पर लटके हुए हैंडलूम के पर्दे को उठाकर जो मंजर दिखाया गया वह बड़ा ही दिलचस्प था। दो लड़कियां थीं, बाकायदे बुर्के में। मुंह पर से पर्दा उठाकर एक-एक कर दोनों ने कहा—आदाब अर्ज़ !

आदमी को पचास रुपए देकर आमीर दरवाज़े के अंदर चला गया।

शाम अभी-अभी जा चुकी थी। बस रात शुरू हो रही थी। बरामदे में एक बुढ़िया बैठी थी जिसके मुंह से निकला—या रसूल, दुनिया का यही कायदा है, लोग आते-जाते रहते हैं।

बगल के कमरे से एक बूढ़े की आवाज आई—अरे ! यह तो मुझे भी मालूम है कि लोग आते-जाते रहते हैं, मगर यह गलत है। सही यह है लोग आते नहीं चले जाते हैं—फिर कभी नहीं आते।

भीतर के कमरे में आकर दोनों लड़कियों ने अपने-अपने बुर्के उतार दिए थे। बड़ी लड़की की जवानी चढ़त पर थी। चेहरे पर गजब का शरीफाना अंदाज था। मामूली-सी साड़ी में भी उसका गोरा खूबसूरत बदन दिलकश था। छोटी लड़की बड़ी के सामने से हटकर कमरे से बाहर चली गई।

आमीर रज़ा की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कुछ बोले। उसने हाथ मलते हुए कहा—मेरा नाम आमीर रज़ा है। मैं एक व्यापारी हूं। लखनऊ में चिकन के कपड़े…।

यह कहते हुए उसने कनखियों से उस लड़की को देखा। उसके मुख पर इतनी शांति थी कि वह इससे कुछ समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या

सोच रही है और उसके साथ अब क्या करना चाहिए।

—आपका नाम ?

—कायनात।

—कायनात ? यह कैसा नाम ?

—खाने से पहले आप कुछ पीना पसंद करेंगे ?

—क्या ?

—जी हां, आप हमारे मेहमान हैं।

कायनात ने ऐसी भरपूर मुस्कराहट के साथ कहा कि आमीर रज़ा के दिल में अगड़ाइया लेती हुई लहरें छलक पड़ी।

आमीर ने बढ़कर कायनात को अपनी बांहों में भर लिया। उसने देखा कायनात के गालों पर न जाने कहा से हल्की लाली दौड़ने लगी थी। उसका सिर झुका हुआ था। होंठ खुले हुए थे।

—क्या यह हसीना मेरी हंसी उड़ाना चाहती है ? मैं इसका मेहमान ?

आमीर सोच रहा था। कायनात खामोश थी।

—आज की रात कितनी खूबसूरत है।

आमीर ने उसे पलंग पर बिठाते हुए कहा। कायनात शरमा गई। वह कुछ कहने जा रही थी, पर रुक गई। आमीर भावुक होने लगा। अपने कारोबार के बारे में बताने लगा। बंबई, अहमदाबाद, सूरत के अपने मकानों के बारे में कहता रहा। वह बिल्कुल भूल गया कि वह किसलिए कहां आया है। इस बीच खाना हुआ।

सौ सौ के पांच नोट कायनात को दिए।

कायनात की खूबसूरती और उससे अपनी मुलाकात के बारे मे वह तहे दिल से शुक्रिया अदा कर रहा था। मुलाकात पर ताज्जुब करता हुआ वह खुद अपने आप पर हैरत कर रहा था। इसके बारे में बातें करते हुए बोला —मैं भी कितना लापरवाह हूं। कोई कमी मेरी जिंदगी में नही है, मगर मैं इतना अकेला-उदास क्यो हूं मेरी जान ? काश, मेरी जिंदगी का कोई मकसद होता। मुझे किसी की मोहब्बत मिली होती। ओह, तब मैं किस तरह अपनी ताकत धन-दौलत का बेहतर इस्तेमाल करता।

कायनात ने कहा—आप मजाक करते है।

—आह ! तुम भी ऐसा सोचती हो।

—क्योंकि आप एक आजाद धनी इंसान हैं।

—अब तुम मेरी हंसी उडा रही हो।

—जी नही, मैं आपकी हंसी उड़ाने वाली कौन हूं ?

इतने में अचानक बाहर दरवाजे पर से एक आवाज आई—फर्माया अल्लाह के रसूल ने, हर औरत के लिए दो पर्दे हैं—एक शौहर, दूसरा कब्र। मिलो तो सिर्फ अपने शौहर से। सुनो मुसलमानो। औरत मर्द के लिए आजमाइश है। पहले मर्द से खाविन्द बनो, औरत को बीवी बनाकर ही उसे कबूल करो…।

आमीर को लगा—यह आवाज कमाल की है। वह लपककर दरवाज़े पर आया। सचमुच कमाल खड़ा था।

आमीर ने कहा—यह क्या बदतमीजी है?

—हुजूर आला। बेशक औरत पसली से पैदा की गई। तो औरत के साथ अगर फायदा उठाना चाहो, तो इस हालत में उठा सकते हो कि उसका टेढ़ापन उसमे बाकी रहे। यह न हो कि उसकी टेढ दूर करके फायदा उठाओ, तो सीधा करते-करते उसको तुम तोड़ दोगे, और उसका तोड़ना उसकी तलाक है…।

—चुप रह उल्लू का पट्ठा!

आमीर का गुस्सा देखकर कमाल जब खामोश न हुआ, तो उसका चेहरा उदास हो गया।

कमाल ने कहा—हुजूर, आप शिया मुसलमान हैं। और शियों के मजहब में मुतआ (एक खास अवधि के लिए किया गया निकाह, विवाह) बिना किसी रोक-टोक के जायज़ है। मुतआ किए बगैर किसी औरत के साथ सोना क्या, उसकी सूरत देखना भी गुनाह है!

यह कहकर कमाल दौड़ता हुआ निकल गया। आमीर लौटकर कमरे में आया। कायनात जरी के काम किए हुए नाइटी में पलंग पर लेटी थी। वह सोई हुई फितने जगा रही थी। उसकी रगें ऐंठने लगी। वह झुककर कायनात को चूमने जा रहा था, तभी वह झिझक गया! कमाल की आवाज़ आ रही थी, वह ढोल पीटकर गा रहा था :

जिसने अपने नफस को पहचाना
उसने उसको पहचाना।

कायनात पलंग से उठकर बोली—क्यों क्या बात है? चुप क्यों हैं? शर्म आ रही है?

—नहीं तो।

—हां, मर्द को शर्म क्यों आएगी? शर्माना भी औरत को पड़ता है।

उठकर उसने भीतर से कमरा बंद कर दिया। अब वह बत्ती बुझाने लगी तो आमीर ने कहा—अभी रहने दो।

—नहीं, मुझे नींद लगी है।

—सो जाओ।
—आप क्या सोच रहे हैं ?
—हम शिया हैं।
—तो ?
—चलो मुतआ कर लें।
—यह क्या है ?
उसने बताना चाहा। वह हसकर बोली—वह पुराना जमाना गया, आप भी किस दुनिया की बातें कर रहे हैं ?
—एक बात पूछू ?
—पूछिए, शौक से।
—मैं तुम्हें कैसा लगता हूं ?
वह एकटक देखती रह गई।
बंद कमरे के भीतर कमाल का गाना सुनाई दे रहा था।
खुले आसमान के नीचे बीत ? अक्तूबर की आधी रात का समय, कमाल नाच-नाचकर गा रहा था। लोगों की भीड़ उसके चारों ओर जमा थी।
वह नाचकर, भावाभिनय कर गा रहा था :

अच्छी सूरत जो दे
तो यह सीरत भी दे।
हुस्ने तकरीर भी हो
खूबिये तहरीर भी हो।
यह फकत आपकी इनायत है
वर्ना मैं क्या, मेरी हकीकत क्या ?
न जाने रात को था
कौन जीनते पहलू
मचल रही है हवा में
शरार की खुशबू ।

कमाल के संगीत से वह इलाका गमक रहा था। गरीब, बेपनाह लोग उसे एकटक निहार रहे थे।
कोई कहता—यह कोई पागल है।
—नहीं, यह ड्राइवर है इस गाड़ी का।
—यह मुसाफिर है।
—नहीं यार, यह कोई सी० आई० डी० है।
—साला कोई फक्कड़ है।
—कोई पहलवान है।

—औलिया है औलिया।

लोग आपस में कानाफूसी भी कर रहे थे, मज़े भी ले रहे थे।

एकाएक गुलफिशा के ऊपर वाले कमरे मे रोशनी हुई। अपाला ने इतनी दूर से खिड़की से झाककर न जाने क्या देखना चाहा। वह कमाल की आवाज़ मे अपनी आवाज़ मिलाकर न जाने क्या गाने लगी। तहमीना और अम्मी जान दोनों ने दौड़कर उसे पकड़ा और उसे चुप कराते हुए नीचे ले आईं।

अम्मी ने पूछा—बेटी, वह कौन था ?

अपाला ने पूरे यकीन के साथ कहा – वह कमाल था।

तहमीना ने पूछा—कमाल कौन ?

अपाला ने जवाब दिया—कमाल···कमाल···।

अम्मी ने पूछा—तुम उसे जानती हो ?

—हां।

तहमीना बोली—कौन है वह ?

—जो मैं हूं। अच्छा आप लोगों को ताज्जुब हो रहा है ? मैं लड़की हूं, वह मर्द है। मैं यहां हूं, वह वहां है। मगर इसमें ताज्जुब कैसा ?

सारी रात अम्मी और तहमीना दोनों अपाला के साथ जागती रहीं। वह उनसे कहती रह गई, आप लोग सो जाइए, मगर वे टस से मस न हुईं। उन्हें डर था कि अपाला कहीं घर से बाहर निकल कर उस आदमी के पास न चली जाए। उन्हें लगा, उसकी तबीयत आज इस वक्त बहुत ज्यादा खराब है।

इतनी रात गए वे जब डॉक्टर को बुलाने की कोशिश करने लगीं तो अपाला ने कहा—आप लोग क्यों इतने परेशां हैं ? जो होने वाली बात थी वह तो हो गई। मैं उसी का तो अब तक इंतज़ार कर रही थी। देखो न अम्मी, हम सिर्फ इंतज़ार कर सकते हैं। हम सिर्फ उसकी तैयारी कर सकते हैं। जो हुआ वह हो ही सकता था, किया नहीं जा सकता था। अगर किया जाता तो वह झूठा होता। जो हुआ उसके लिए मैंने कभी सोचा ही नहीं था। तभी तो वह घटना की तरह घट गया। तहमीना बहन, ये जो रास्ता है, इसी का नाम मुसलमान है।

यह घटना गुलफिशां में घटी थी।

पर जो कुछ उधर दूसरी तरफ सुलतानखाना में हो रहा था, बिल्कुल इससे अलग था।

सारी रात आमीर और कायनात जागते रह गए। कमाल की बात से आमीर ने अपने दिल को टटोलना शुरू किया। उसी खेल मे कायनात खेलती रह गई। दोनों भूल गए, वे यहां किसलिए क्यों कर मिले थे। आमीर उसे निहार-निहारकर सोचता, हुस्न और शराफत की यह मूर्ति किस गदी नाली में फेंकी पड़ी है। इस्मतफरोशी के बारे में जितना कुछ सुना देखा था, सबका सब जलकर खाक हो गया। मगर दूसरी बात भी आमीर को रह-रहकर कचोट रही थी—व्यापारी को इन जजबातों से क्या सरोकार ? उसके लिए सब कुछ माल-सौदा है। लिया और आगे बढ़ गए।

सुबह ही सुबह आस-पडोस में यह खबर फैली कि कायनात के कोई खास मेहमान आए हैं। वह बडी गाड़ी इन्हीं की है। वह नाचने-गाने वाला इन्हीं का ड्राइवर है।

कायनात नहा-धोकर सफेद साड़ी मे चाय-नाश्ते की ट्रे लिए कमरे में आई। बैठते हुए बोली—रात को मेरा सोलह सिंगार बेकार गया।

आमीर हंस पड़ा, बेतहाशा। ऐसी हंसी उसे जिंदगी मे पहली बार आई। वह टूटा-सा मकान, जिसका नाम सुलतानखाना था, वह सिर्फ मकान था, घर नही।

आमीर ने पूछा—मैं क्या तुम्हारा मेहमान हूं ?

कायनात बोली—पर्दे की जिंदगी मे जितनी बेपर्दगी है, उसे ढकने के लिए सिर्फ झूठ की मदद ली जाती है। जहां इज्जत-आबरू सौदा है, वहीं इज्जतदार बने रहने का इतना दिखावा है।

यह मकान है, घर नही ? यह जिंदगी का दिखावा है, जिंदगी नही ? यह बेपर्दगी है पर्दे के भीतर। बरामदे से छोटी लडकी नूरी की आवाज़ आने लगी—अल्लाह ! रसूलल्लाह ! रसूल से बस्ती वालो ने कहा—हमने एक दीवार उनके आगे खडी कर दी है। और एक दीवार उनके पीछे। और हमने उन्हें ढांक दिया है, अब उन्हें कुछ नही सूझता ''।

तीन

बड़ी बहन तहमीना ने ग़ुसलखाने से आवाज़ दी—गुल, मेरे लिए एक साड़ी निकाल देना।

मगर गुलनार थी कि बीच वाले कमरे में ही एक रिकार्ड बार-बार

बजाए जा रही थी और उस पर बेतरह नाच रही थी। बड़ी बहन की आवाज़, अपाला के कानों में पड़ी। बहन की आलमारी में देखा—इवनिंग गाउन, साड़ियां, पैंजामे, कुर्ते, सलवार-कमीज, दुपट्टे, जूते-जूतियां, चप्पल और बैग···। एक फिरोजी रंग की साड़ी निकाल कर गुसलखाने में दे आई।

अपाला अलस्सुबह से एक साड़ी में चिकनकारी पूरी करने में लगी थी। वह लौटकर उसी काम मे लग गई। जापानी नाइलोन की सफेद साड़ी में चिकन कढ़ाई के खास टाके लगा रही थी। हथकटी, उल्टी बखिया, फंदा पूरा कर मुर्री की कील भर चुकी थी। लंबी-लंबी पत्तियां भी काढ़ी जा चुकी थी। डंडी टेपची से बना रही थी।

गुल अब तक अपने कमरे को भीतर से बंद कर रिकार्ड के उस संगीत पर नाच रही थी।

तहमीना साड़ी पहने, बाल तौलिए मे लपेटे गुसलखाने से बाहर आई। गुल को आवाज़ देकर कहा—गुल! यह क्या हो गया है तुझे। आ, मेरी बात सुन···। इसकी भी क्या जिंदगी है।

गुलनार ने कमरे से बाहर आकर नाचते हुए हवा में बाजू फैलाए। खुशी से बोली—मेरे लिए जिंदगी है—खुश, मगर, नाचती हुई।

गुलनार लाल रग की साड़ी पहने हुए थी। उसके कपड़ो से विदेशी 'सेंट' की तेज खुशबू आ रही थी। पिछली रात कोई कार से करीब डेढ़ बजे रात को छोड़ने आया था। तहमीना ने तौलिए से बाल सुखाते हुए कहा—जिंदगी मेरे सामने सहमी खडी है। सुर्ख साड़ी पहने।

गुलनार ने कहा—डोंट यू वरी, मैं कैरियर उमन हू, समझी या नही?

अपाला ने पत्ती के बीच में टाके भरते हुए कहा—औरत अपने आप में ही खुद एक 'कैरियर' है। यह कुदरत की खास कारीगरी है।

गुल बोली—तुम्हारा मतलब है पेट मे बच्चा पालना? वह मैं हर्गिज नही करूंगी।

अपाला मुस्करा पड़ी। तहमीना कहने लगी—सुनो। आज करीब ग्यारह बजे दिल्ली से कोई सरकारी टीम आ रही है, मुआयना करने या खुदा जाने क्या सिर पटकने। समाजकल्याण के फील्ड इस्पेक्टर, लखनऊ चिकन बोर्ड के सेक्रेटरी के साथ वे लोग कल मुझे चौक मे मिले थे। आज वही दिल्ली पार्टी हमारा निराश्रित मुस्लिम महिला केन्द्र देखने आ रही है।

—मुझसे कोई मतलब नहीं। मैं सोने जा रही हूं।

यह कहकर गुल चली गई। चिकन की दुनिया में लखनऊ की मुसलमान औरतों की संख्या जब से इतनी बढ गई कि उसे 'इंडस्ट्री' कहा जाने लगा, तब से सरकार की रिसर्च टीमें और अफसर इन गली-कूचों में चक्कर मारते नजर आते हैं।

'निराश्रित मुस्लिम महिला केन्द्र' का रजिस्टर्ड आफिस अमीनाबाद में है। मगर असली चिकन कर्मशाला तहमीना के यहां, गुलफिशां मे ही है। वजह, पर्देदार औरतो का मामला है। इनमे ज्यादातर वे औरतें और जवान लडकियां हैं, जिन्हें उनके शौहरों ने तलाक दिए हैं। बेवा हैं। गरीब मजदूर है। बिना ब्याही सयानी लड़कियां हैं। छोड़ी हुई धोखा-फरेब खाए हुए मजदूर लड़कियां हैं। तहमीना इन्हें चिकन, कसीदाकारी और सिलाई की ट्रेनिंग देती है। इनके लिए सरकारी-प्राइवेट मार्किट से काम लाती है। इनसे काम लेती है। पूरी मजदूरी पर काम देती है।

ठीक चार बजे दिल्ली की अफसर पार्टी आई। देख-दाखकर, पूछ-पाछकर चली गई।

पर इसी बीच एक वाकया हुआ। बंबई से आए हुए मामू जान के लड़के अलीरजा से दिल्ली के अफसर हरीशचंद्र सिन्हा से, मुस्लिम औरतों के बाबत कुछ कहा-सुनी हो गई। हुआ यह कि सिन्हा साहब को अपना परिचय देते हुए अलीरज़ा ने बताया कि वह इन औरतों पर कोई उपन्यास लिखने जा रहे है।

यहां तक तो, बात ठीक थी। मगर अलीरजा ने यह बताया कि वह यहां एक होटल मे पचास रुपए रोज़ के किराए के कमरे में ठहरे हुए हैं, तो सिन्हा ने कहा - कमाल है, आप तहमीनाजी के इतने नजदीक के रिश्तेदार, आप यही इनके साथ रहते और पचास रुपए रोज के हिसाब से इन्ही को देते। बात यहा तक भी नही बिगडी। बिगड़ी बात तब—जब बातों की बात में अलीरजा के मुह से यह निकला कि वह एक माडर्न आदमी हैं। तब हरीशचद्र सिन्हा के मुह से यह निकला—मुसलमान और माडर्न? तौबा कीजिए। रुके हुए रह रहे हैं मध्ययुग में, जीना चाह रहे हैं आधुनिक मौजूदा समय मे—क्या बात है! अलीरजा का चेहरा तमतमा आया। पूछा—आपका मतलब क्या है? सिन्हा ने कहा—जो कही रुक गया है, वह सिर्फ चलाया जाता है, वह खुद नही चलता। वह खुद जीता नही, इस्तेमाल होता है दूसरों के जरिए।

इस पर अलीरजा भाई का गुस्सा? बाप रे। लगे अंग्रेजी मे डांटने। सिन्हा साहब मुस्कराते रहे। अली भाईसाहब उतना ही आग-बबूला होते गए।

अगले दिन शाम चार बजे अलीरजा तहमीना के यहां आए। वहां बड़े कमरे मे इतनी सारी लडकियां और औरतें चिकनकारी में लगी थी। कुछ सीख रही थी। कुछ सिखा रही थी। कुछ सिलाई कर रही थी और बाकी सब चिकनकारी में लगी थी।

लखनऊ नवाबो का शहर रहा है। पर आज तो ऐसा नहीं है। आज लखनऊ अग्रवाल, रस्तोगियों का शहर है। आज लखनऊ राजनेताओ, अफसरों, हुक्कामों का शहर है। यह लखनऊ के नवावो व उनकी ऐय्याशी और नजाकत का ही नतीजा है कि यहां तव चिकनकारी का जन्म हुआ। मोटे कपडो का स्थान बारीक मलमल, अरगंडी और तंजेब ने लिया। इन महीन-बारीक कपड़ो को और सुदर व कीमती बनाने के लिए उस पर इस तरह कसीदाकारी की गई। पर आज लखनऊ में वह जिंदगी कहां है? आज यहां चिकन के कढ़े हुए कुर्ते, पर्दे, पटके, साडियां, जामे, मशरू, गुलवदन, नीमा, अंगरखे कहां हैं?

ये सारे सवालात लेकर अलीरजा आए थे। तहमीना अपने काम मे लगी थी। अपाला अपने आप में मगन चिकन के काम मे हथकटी, उल्टी बखिया, फंदा, मुर्री, टेपची और जाली करती हुई दिखती। वह और उसके काम दोनो मे फर्क कर पाना गैरमुमकिन था। छोटी बहन गुल एक बजे दिन के बाद से एक बजे रात तक कभी वहा किसी काम में नहीं होती। यह बात गुल की कही हुई है, दोनो बहनो, मम्मी और रजा भाई साहब के रूबरू कि मुसलमानो के पास मकान, इमारत, हवेली, किले होते है, घर नही। इमारतों, मकानों मे कोई कितना, कब तक रहे? इमारतो, मकानो मे सामान होते हैं—सजावट के, आराम के, भोग-विलास के सामान—मुसलमान औरत भी वही एक खास सामान है। वह न किसी की मा है न बहन है। वह सिर्फ एक मुसलमान औरत है—जिसकी जन्नत मर्द की खुशी मे है। जहन्नुम मर्द की नाखुशी मे। औरत का हम्माम मे नहाना तक हराम है।

अपाता हर लम्हा अपने साथ रहती है। अपने काम के साथ, चिकन का फंदा, बलदा, जाली, मुर्री, दरज**। काम और खुदा में, चिकनकारी और खुदा की रहमत में उसे कोई फर्क नही दिखता।

तहमीना बोली—रजा साहब! यहा आप किस चक्कर मे खामखा *अपना वक्त बरबाद कर रहे हैं? अरे, हम पर कितने उपन्यास, कहा-*नियां, ड्रामे लिखे जाएं, कितने अखबारो और रिसालों के पन्ने काले

किए जाएं, सरकारी, गैरसरकारी रिसर्च हों, कमीशन बैठें, मगर हमारी ज़िंदगी कोई नहीं जान-समझ सकता।

—ऐसा ?

—जी, रज़ा साहब, औरत का जनम मर्द की पसलियों से हुआ है।

यह कहकर तहमीना हंस पड़ी। अलीरज़ा उसका मुंह देखते रहे। उसने पूछा – आप दिल्ली के उस सरकारी अफसर सिन्हा साहब पर क्यों आग-बबूला हो गए ?

—वह बिल्कुल नासमझ था। हमारे बारे में उसे कुछ भी पता नहीं।

—तो हुज़ूर उसे आप सही पता दे देते।

—क्या फरक पड़ता ?

—यही है असली वजह। यहां कोई मरद-औरत नहीं है। यहां है एक मुसलमान दूसरा है हिन्दू। इसलिए कोई 'डायलॉग' नहीं।

—मुझे पता है।

—सब यही कहकर रह जाते हैं।

तहमीना अपने काम में लग गई।

अक्तूबर के आखिरी दिन। साढ़े पांच बजे ही लखनऊ के मोहल्लों में शाम घिर आती है। लड़कियां, औरतें दिन भर का अपना हिसाब-किताब ले-देकर जाने लगीं। कुछ बुर्कों में कुछ ऐसे ही। गरीब औरतों और लड़कियों के शौहर, मरद, अब्बा, चाचे, मामे, भाई कहीं मजदूर हैं, ड्राइवर, मिस्त्री, दर्जी, नाई, धोबी या रिक्शा चालक, चाय-साग-सब्जी, फल-अंडा, बिस्कुट की सस्ती दुकानें किए हुए। कुछ हैं ऊपर कारीगर दुकानदार। जो इंटर, बी० ए० हैं, वे कहीं चपरासी हैं, कहीं क्लर्क, रेलवे लोको में कर्मचारी, सारंगीबाज, तबलदार। इससे ऊपर, जो मुट्ठी भर लोग हैं, वे हर वक्त कहीं जाने, भागने के चक्कर में लगे रहते हैं, या पुराने ज़माने की यादों में खो जाना चाहते हैं। जैसे अपनी कोई जगह नहीं है, इसलिए कहीं और जाने-भागने के लिए दो ही जगहें हैं—एक पाकिस्तान, अरब की खाड़ी या सियासत। हिंदुस्तान सियासत में ये खालिस बिकाऊ वोटर माल हैं। उसी तरह भारतवर्ष से बाहर जाने वाला हर मुसलमान जैसे कोई रिफ्यूजी है, जिसका अपना कहीं कोई मुल्क नहीं है।

अलीरज़ा के साथ चाय पीते हुए तहमीना ने पूछा—अप्पी की बीमारी की क्या दवा की जाए ? अप्पी कहती है, वह इसी तरह पैदा हुई है। खुदा के अलावा उसका कोई और पालने-पोसने वाला नहीं, तभी उसका नाम उस फकीर ने अपाला रखा। मम्मी का ख्याल है, अप्पी को

कोई बीमारी नही है, सितारो की छाया है उस पर।

तहमीना यह कहती हुई अलीरज़ा को अपने संग लेकर अपाला की अलमारी के पास चली गई। लोहे की अलमारी खोलकर दिखाई। चंदन की छोटी सी तख्ती पर हाथी दात का एक छोटा-सा मदिर था—जिसमें कई नन्ही-नन्ही मूर्तिया रखी थी—ताजे फूलों के बीच।

अलीरज़ा ने गुस्से मे आकर अप्पी से पूछा—मुसलमान होकर मूर्ति-पूजा करती हो ?

उसने मुस्कराते हुए कहा—हम सब के तहखानों में एक छोटी-सी 'श्राइन', काबा, देवालय है, जिसमे कोई अनजान मूर्ति रखी है—पता नही उस मूर्ति का नाम क्या है ? राम, कृष्ण, ईसा, बुद्ध, अल्लाह, नबी, सल्ललाहोअलहेसल्लम···।

इतने मे ही पड़ोस से कही कमाल की आवाज़ आई। वह आमीर की मरसीडीज़ मोटरगाडी की छत पर खडा नाचता हुआ गा रहा था—

ले चल हां मझधार मे ले चल
साहिल साहिल क्या जाना।
जी चाहता है रोने को,
है कोई बात आज होने को,
ले चल हां मझधार में ले चल।
दिल को क्या हो गया वही जाने
क्यों तू उदास क्या जाने ?
ले चल हां मझधार में ले चल।
साहिल-साहिल क्या जाना···

अपाला ने पिछले दिनों जब से कमाल का नाम सुना है, तबसे उसके दिलो-दिमाग मे एक अजीब-सी सनसनी पैदा हुई है। आज जब फिर उसकी आवाज कानों मे पड रही है, तो ऐसा लग रहा है जैसे वह पुराना, आधा टूटा-फूटा गिरा हुआ मकान, जिसका नाम है गुलफिशा, जिसमें उसका जन्म हुआ, जिसमे पलकर वह इतनी बडी हुई, वह आज सचमुच 'गुलफिशा' हो रहा है।

अपाला नगे पैर दौडकर बाहर आ गई। उस गाने की आवाज़ से मकानो और पेडों पर उनके आरपार जैसे चारो तरफ वही गुलफिशा मौजूद था। गुलफिशा कमाल के लिए अजनबी था, मगर उसमे वह जैसे *सदा मौजूद था। वह, जिसका महज नाम सुना था—कमाल—उस नाम* मे इतनी कशिश। नाम से रूप। रूप से रस। अब उसका गीत—ले चल *हां मझधार मे ले चल, साहिल साहिल क्या जाना—है कोई बात आज*

होने को'''। 'वह' जो उसका हाथ थामेगा, वह उसके रास्ते पर चलेगी। आखिर ज़िन्दगी यही इतनी ही नही है। यह तो परछाईं है। असली ज़िन्दगी तो वही है, जो है। वह उससे कहेगी, अच्छा ! तो आप है वह ? कमाल है वल्लाह। सुनने वाले रो दिये सुनके मरीजे गम का हाल, देखने वाले तरस खाकर दुआ देने लगे। अब तो बीमारे मुहब्बत तेरे काबिले गौर हुए जाते है'''। उसके मुह से कुछ निकले न फूटे, वह अपनी खामोशी से ही कहेगी—लो यार मैं यहा हूं। सब धोखा खाते रहे, मै लाइलाज बीमार हू। कब्र में पड़ी हू। मुझे बोलना नही आता। मैं बदकिस्मतवार हू। मुझे ताज़िन्दगी रोना है। कोई मेरा नही होगा। उस फकीर ने मुझे देखकर कहा था। मुझे कहा था, सुनोगे क्या कहा था ? बस, नही बताती। जनावेआली, वह भी कोई बताने की चीज है। देखो न, आखें भर आईं। आह ! सिर्फ तुम्हें, कमाल हो गया, तुम्हें कमाल, धोखा न हुआ ? तुमने मुझे पहचान लिया। लो देखो, आओ मेरे दामन मे। तुम मुझे छिपा लो, मैं तुम्हें। लोगो को संघर्षो, दुखो, अभावों की वादी मे पागलो की तरह अपने बाल नोचने और खाक छानने दो। वे जब हमें देखेंगे तब उन्हें अहसास होगा कि अरे यह क्या है ?

अपाला नंगे पैर चलने लगी। अम्मी आयशा बेगम घबड़ाकर दौड़ी—सभालो, रोको मेरी बेटी को। देखो कहां चली जा रही है ?

तहमीना, अलीरजा दौडे। मोहल्ले के लोग बाहर आ देखने लगे—कमाल आमने, अपाला सामने। दोनों एक-दूसरे से कह रहे हैं—रुको, हम तुम्हारे पास आ रहे हैं।

दोनो अजनबी एक दूसरे के दामन में। लोग दग रह गये।

मगर लोगो को जैसे होश हुआ तो वे धीरे-धीरे गुस्से से भरते चले गए—ये क्या बदतमीजी है ? एक अजनबी, आवारा, बेवकूफ इस तरह मोहल्ले की एक बीमार लड़की के साथ ऐसा सलूक करे, इसकी गर्दन उड़ा दो।

इससे कही ज्यादा गुस्सा वे लोग अपाला पर उतारने को हुए—यह कैसा पागलपन है ? हम ये बदतमीजी बर्दाश्त नहीं कर सकते। एक मुसलमान लड़की किसी ऐरे-गैरे से इस तरह सलूक करे, इसे किसी तरह माफ नहीं कर सकते।

लोग कमाल को घेरे हुए खडे थे। कोई गालियां बक रहा था। कोई मुट्ठिया भीच रहा था। कुछ लोग उससे तरह-तरह के सवाल कर रहे थे।

अम्मी और तहमीना दोनों अपाला को खींचकर घर में ले जाना चाहती थी। मगर अपाला कह रही थी - मैं उन्हें इस तरह अकेले छोड़कर किसी भी कीमत पर यहा से नही जा सकती।

अपाला बिल्कुल निडर होकर कमाल के पास जा खड़ी हुई। सबको देखती हुई बोली—कहिए, किसे क्या कहना है ?

एक अजीब-सी चुप्पी छा गई। लोग आपस में खुसर-पुसर करने लगे।

एक ने पूछा—इस गली में क्या यही सब होना है ?

दूसरे के मुह से निकला—गुलफिशां का तो बड़ा नाम है।

तीसरे ने कहा—एक बीमार, दूसरा पागल। क्या जोड़ी है !

कमाल ने पूछा—किसी को और कुछ कहना हो तो शौक से कहे।

लोगो के चेहरे पर जैसे लिख उठा था— और अब क्या कहना बाकी रह गया है ?

कमाल कहने लगा—यहां जो कुछ हुआ उसे किसी ने नही देखा। नफरत की आंख से वह नही देखा जा सकता। उस नजर से देखने पर मेरी महबूबा सिर्फ एक बीमार लड़की है और मैं—उसका महबूब सिर्फ एक पागल है। जैसी हमारी आंखें होती हैं वैसी ही चीजें हम देखते हैं। आप सबकी भीड हमारे बारे मे यही सोचती है कि ये दोनों अंधे हो गए हैं।

तब एक ने चिल्लाकर कहा—अबे, उल्लू के पट्ठे, क्या तू अंधा नहीं हो गया ?

कमाल ने धीरे से कहा—जी हां हुजूर, मुझे अपाला के सिवा और कुछ नही दिखाई पड़ा, सिवाय अपाला के। इसकी सजा जो चाहे आप हमे दे सकते है। हम आपके हैं। आपकी नज़रो के बीच में है। इन नज़रो की बनावट मे हमारा भी हाथ है।

फेंके हुए पत्थर की तरह एक आवाज आई—क्या बकवास करता है ?

कमाल ने कहा – जिससे हम नफरत करते है वह हमें बीमार, पागल और बदशक्ल दिखाई पड़ता है। देखने की अपनी आंखें है। यकीन करो लोगो, आज जब मेरी इस गुलफिशा की ओर आखें खुली, तब मैंने जाना कि आंख क्या होती है और देखना क्या होता है ? मैं तो हुजूर हैरान हू, सिर्फ हैरान हू। यकीन कीजिए, ऐसा लगता है, जो है, यही है।

गुलफिशां और सुलतानखाना के बीच तमाम लोग अपाला और कमाल के आसपास खड़े थे। कुछ लोग गुस्से मे थे। कुछ लोग हैरत में। पर किसी की हिम्मत नही हो रही थी कि कमाल पर हाथ लगा दे।

कमाल ने अपाला का हाथ पकड़कर कहा—वक्त हो गया। हम फिर मिलेंगे।

—अभी रुको। यह कहकर अपाला दौड़ी हुई घर में गई। आलमारी

से शंकर-पार्वती की तसवीर के बीच संभाल कर रखे कुरानशरीफ को हाथ में लिए आई। कमाल के मुह से उन दोनों चित्रों के साथ कुरानशरीफ को माथे से लगाते हुए सिर्फ यही निकला—आह!

कमाल वहां से जाने लगा। अलीरज़ा के मुह से निकला—तू है कौन? क्या है तेरा नाम?

—मेरा नाम? सुनो।

लोग कमाल को सुनते रह गए – मेरा नाम है कमाल—जी हा कमाल, अमन मे खलल डालने वाला। फूट और फसाद फैलाने वाला। गुनहगार'''।

अपाला ने उसके मुह पर दायां हाथ रखकर चुप कर दिया।

—अलविदा।

कमाल तेज़ी से चला गया।

हुसैनाबाद का चौराहा पार करते-करते कमाल को लगा, कोई उसका पीछा कर रहा है। रुककर देखा तो वही सेठ आमीर रज़ा।

—कमाल?

कमाल ने रुककर आमीर रज़ा को देखा—चलो आमीर, कही इत्मीनान से बैठकर तुम्हें सब कुछ बता दू—जितना कुछ बताना मुमकिन है। हालांकि यह जानता हूं कि व्यापारी-सेठ को एक लमहे के लिए भी इत्मीनान नही है। मै तुम्हारा तहेदिल से शुक्रगुजार हूं। मुझे एक ही लमहे में सब कुछ मिल गया।

न जाने किस मन्त्रशक्ति से बधा-खिंचा हुआ आमीर, गोमती नदी के किनारे बैठे हुए कमाल की वे बातें सुनता रहा।

कमाल अपने आपको बता रहा था—दुनिया में उसका कोई नहीं था, न माता-पिता, न भाई-बहन। बचपन में मा-बाप के मर जाने पर वह एक बाजीगर का जमूरा बना। कुछ अरसे बाद वह एक जादूगर का सहायक रहा। उसने उससे कई खेल-करतब सीखे।

जब वह सोलह साल का हुआ तो मस्जिद के एक मियां ने मस्जिद में झाड़ू-बुहारी का काम दिया। साथ ही वहां उसे नमाज अदा करने का इलम भी मिला। वही एक फकीर ने बताया कि कोई एक गवार आदमी था। उसके मन मे खुदा के लिए जबर्दस्त श्रद्धा थी। वह जब भी खुदा की इबादत करता तो यही कहता कि अल्लाहताला, मैं बिलकुल मूरख गंवार हूं। मुझे इबादत करना बिल्कुल नहीं आता। मैं तो आपसे मुहब्बत करता हूं, बस। यही उसकी इबादत थी। आखिर एक दिन वह मर गया। लोगो ने देखा कि उसकी इबादत के ये शब्द गुलाब के फूल बनकर उस मस्जिद में

गिरने लगे। फकीर की इस बात का कमाल पर बेहद असर हुआ। एक दिन कमाल मस्जिद के कमरे में छिपकर अपने ढग की एक अजीबो-गरीब इबादत करने लगा। मस्जिद का मियां इस बात पर हैरान हो गया कि आखिर कमाल सुबह-दोपहर-शाम को इतनी देर क्या इबादत करता है। मियां ने मस्जिद के सबसे बड़े मियां से जिक्र किया तो बड़े मिया ने खुद कहा मैं इस बात का पता लगाऊगा कि वह कमरे में किस तरह की इबादत करता है। छोटे और बड़े मिया ने छिपकर देखा तो वे हैरान रह गए। कमाल खुदा का नाम लेकर बेतरह नाच-गा रहा है, और बीच-बीच मे खुदा को बाजीगर और अपने आपको उसका जमूरा बनाकर बाजीगरी दिखा रहा है। दोनो मिया, कमाल की यह हरकत देखकर गुस्से से चिल्ला पड़े। मस्जिद में यह बदतमीजी! निकल जा यहां से।

कमाल जब से उस मस्जिद से इस तरह निकाला गया, तब से आज दस साल गुजर गए। सोलह साल का कमाल अब छब्बीस साल का हो गया, वह पूरे हिंदुस्तान में कहां-कहां नही गया, क्या-क्या काम उसने नही किये, यह बता पाना अब मुश्किल है।

आमीर रजा ने पूछा—उस बीमार लडकी से तुम्हारी उस समय की हरकत, यह क्या चीज है? मुझे साफ-साफ बताओ।

कमाल ठठाकर हंस पड़ा। बोला—तुम इतने बड़े सेठ, साहूकार हो, इतने पैसे वाले हो, मगर तुम इन्सानी रिश्तो के बारे में इतने जाहिल हो कि तुम्हें उस मामले मे कुछ नही बताया जा सकता। क्योंकि वह तुम्हारी दुनिया ही नही है। तुम्हारी दुनिया सिर्फ व्यापार की दुनिया है।

थोड़ी देर चुप रहने के बाद कमाल ने पूछा—रजा साहब, आप बताइये, सुलतानखाना मे उस लड़की के साथ, जिसका नाम कायनात है, आपका क्या हश्र हुआ?

आमीर रजा ने कहा—यार, मुझे उस लड़की से न जाने क्या हो गया है, वह अजीव ढग से मुस्कराती रहती है, और मुझे अपने हुस्न की रंगरलियों में बेतरह फंसाना चाहती है।

कमाल हंसते-हसते लोट-पोट हो गया। आमीर रजा को बड़ा गुस्सा आया और उसने डांटकर कमाल को चुप कर दिया। आमीर रजा ने बताया कि वह अपने बिजनेस के सिलसिले मे अहमदाबाद, बडौदा, पूना, बंबई, बंगलौर, मद्रास, कलकत्ता, भुवनेश्वर, पटना, दिल्ली, अमृतसर, श्रीनगर वगैरह हर जगह हो आया है। इसके अलावा देश-विदेश जहां भी वह गया है, कभी न भुलाई जा सकने वाली याद छोड़ आया है। हर शहर मे उसने महबूबाएं ढूंढी हैं।

कमाल ने जम्हाई लेते हुए कहा—अमां चुप भी कीजिए। फिजूल बातों से मेरा वक्त जाया न कीजिए।

अचानक वहां एक रिक्शा वाला रुका। सलाम किया, फिर कहा—रजा साहब कौन है ? दोनों को चुप देखकर उसने कहा—बीबी ने रजा साहब को बुलाया है।

रजा साहब ने पूछा—कौन बीबी ?

रिक्शे वाले ने कहा—बीबी ने कह दिया है कि नाम न बताना, आगे आपका जो हुक्म।

आमीर रजा ने कहा- कमाल, चलो तुम भी मेरे साथ चलो। बीबी माने मेरी वही कायनात।

कमाल ने कहा—हुजूर, अब मैं तब तक उस गली में नहीं जाऊंगा, जब तक ''। उसकी आंखों से झर-झर आंसू बरसने लगे।

आमीर रजा अकेले उस रिक्शे वाले के पीछे चलता चला गया। वह जिस इलाके मे जा पहुचा जो सुलतानखाना से बिल्कुल दूसरी तरफ था। फिर भी न जाने क्यों उसके पांव उस इलाके की तंग गलियों में बढ़ते ही जा रहे थे। वह एक ऐसी दुनिया में पैर बढ़ाता जा रहा था जहां दिन में ही सूरज की रोशनी पीली पड़ती जा रही थी। चारों ओर गंदगी, कालिख लगे बर्तन, पेशाब और पाखाने की बदबू से सिर भिन्नाने लगा था। दिन-दहाड़े गली के मोड़ों पर इस गरीबी और गंदगी के बावजूद चल रहे हैं, दारू के गिलास—पैसे एक हाथ पर रखो, दूसरे हाथ से गिलास। पैसे दो तो झट सामने तली मछलियां, कबाब, अंडों के पकौड़े। एक टूटी हुई झोंपडी के आगन मे बैठी है सिर पर हाथ रखे बनी-ठनी रंडियां। एक सवाल—लो और दो। मुझे लो, मुझे दो। कैसे जले चूल्हा, उस आंगन में आ जा रहे हैं कार के ड्राइवर, भागे हुए नौकर, घर से दूर रहने वाले मजदूर, रिक्शेवाले।

आमीर रजा ने अपने चारों ओर देखा। वह रिक्शा वाला न जाने कहां गायब हो गया था। वह तेजी से पीछे मुड़ने ही जा रहा था कि एक औरत ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा—बीबीजी आपको अन्दर बुला रही है।

—कौन बीबी ?

—आइए तो।

आंगन को पार कर एक टूटे हुए घर के कमरे में जाकर उसने जो देखा, वह देखता ही रह गया।

जमीन पर एक गद्दा बिछा है। गद्दे पर कसीदाकारी की हुई एक

चद्दर बिछी हुई है। इधर-उधर गाव तकिये रखे हैं। सिगरेट पीती हुई एक मोटी ताजी औरत पसरी हुई बैठी है।

वह देखते ही बोली—वल्लाह, आइए तशरीफ रखिए। आप तो हमें भूल ही गए।

आमीर रज़ा वहा से भागने लगा तो दौड़कर उस औरत ने उसे पकड़ लिया।

बोली—अरे माल चख कर तो देखिए।

आमीर मुस्कराते हुए बोला—ये सब तो सही है, पर मुझे यह बताओ तुम लोग मर्दों को बेवकूफ कैसे बनाती हो?

उस औरत ने कहा—हुजूर इसकी वजह यह है कि इंसान के मिज़ाज में जज्बात-पसंदी है। एक ही हालत में जिंदगी बसर करने से, वह कैसी भी उम्दा क्यो न हो, तबीयत उकता जाती है। वह चाहता है कि किसी न किसी तरह की तबदीली उसकी हालत में पैदा हो। शायद हम बाजारियों से ऐश करने में उसे एक किस्म की नई लज्जत मिलती है। यही वजह है कि मर्द नईयों की तलाश में रोज नये कमरों पर पहुंचता है और नयी चीजों को देखता है।

आमीर ने कहा— मगर सब मर्द ऐसे नहीं हैं।

वह औरत नयी सिगरेट जलाकर बोली—हां, इसकी वजह यह है कि तहजीब के कानून ने इस मर्द को बुरा करार दिया है। जो शख्स ऐसा करता है, उसके अज़ीज-रिश्तेदार, दोस्त-अहबाब मलामत करते है। इस खौफ से अक्सर हिम्मत नही पड़ती। मगर जब शैतान के भाइयों की सोहबत मे बैठने का इत्तफाक होता है तो वह तरह-तरह की लज्जतों का जिक्र करके एक अजीब किस्म का शौक इनकी तबीयत में पैदा कर देते हैं। इसीलिए वह खौफ इनके दिल से निकल जाता है। आपको इस बात का अच्छी तरह अंदाजा हुआ होगा कि जो लोग पहले-पहल रंडी के मकान पर जाते हैं, उनको यह भेद छिपाने का किस कदर ख्याल रहता है। कोई देखता न हो। कोई सुन न ले। दो आदमियो के सामने बोलने का जिक्र क्या, अकेले मे भी मुह से बात नही निकलती। मगर रफ्ता-रफ्ता यह हालत बिल्कुल मिट जाती है। खुलासा यह कि चद ही रोज मे पूरे बेगैरत हो जाया करते हैं। फिर क्या है, दिन-दहाड़े सरे चौक रंडियो के कमरो पर खट-खट करके चढ जाते हैं। गाड़ी मे खिडकियां खोलकर साथ बैठा-कर सैर करना, हाथ मे हाथ डाल के मेले-तमाशों में लिए फिरना, इन सब बातों को फख्र समझने लगते हैं।

आमीर ने कहा—यह तो सही है, मगर आज शहरों में इन बातो को

इतना बुरा नही समझते।

उस औरत ने कहा—खासकर देहली और लखनऊ जैसे शहरो में। यही इन शहरों की तबाही और बर्बादी की वजह भी है। शहरों में आज इतनी आज़ादी है कि कोई किसी को नहीं मानता।

आमीर ने पूछा—आपका नाम क्या है ?

वह अगड़ाई लेती हुई बोली—अजी, नाम मे क्या रखा है, सब कुछ इसी जिस्म मे है, देखिए न।

फिर एक ही कश में उसने सिगरेट खत्म करते हुए कहा—वैसे मेरा नाम नौची है।

आंगन से लड़ाई-झगडे की आवाज आने लगी। नौची उठकर तेज़ी से आंगन में गई और लडकियों को धड़ाधड़ मारने लगी। ग्राहकों को गंदी से गंदी गालिया सुनाती हुई बोली—सालो, हरामजादों! ये मछली बाज़ार नही, औरतों का बाजार है।

नौची का गुस्सा देखकर सारे लोग खामोश हो गये। वह रुका हुआ बाज़ार फिर चलने लगा। लेना देना। देना लेना।

नौची अपनी गद्दी पर आकर आमीर से बोली—सुलतानखाना में रहने वाली कायनात के क्या हाल-चाल हैं ?

ऐसा सवाल, आमीर रज़ा नौची को देखता रह गया। बड़ी हैरत से बोला—सुलतानखाना की कायनात को तुम कैसे जानती हो ?

नौची बोली—जनाब, मैं पूरे लखनऊ को जानती हूं।

लखनऊ की किस गली और मुहल्ले मे कहां क्या कुछ हो रहा है—पर्द में या पर्दे के बाहर, सबकी जानकारी मुझे रखनी पडती है। हुसैनाबाद से लेकर मुफ्तीगंज, ठाकुरगंज, नूरबाड़ी, सहादतगंज, मोती महल, खुर्दमहल, और गली अनारकली के दोनों छोरों पर बसे गुलफिशां और सुलतानखाना में कहां क्या गुल खिल रहा है, इस सब की जानकारी अगर हमें नहीं होगी तो हमारा ये कारोबार एक दिन में ही खत्म हो जाएगा।

आमीर रज़ा ने नौची के सामने सौ-सौ रुपये के दो नोट रखकर कहा—मैं व्यापारी हूं। मतलब व्यापार के हिसाब-किताब, कायदे-कानून से पूरी तरह वाकिफ हूं। शुक्रिया।

आमीर रज़ा के हाथों में दोनों नोट वापस रखते हुए नौची ने कहा—जनाबेआली, यहां इस बाज़ार में मुफ़्तखोरी नही चलती। आपको इसलिए यहां तक आने की तकलीफ दी कि आपसे मेरी मुलाकात हो जाये। आपको इस बाज़ार में कही भटकना न पड़े। आप थोक माल के

व्यापारी हैं और मैं खुद थोक बाजार हूं। आदाब अर्ज।

आमीर रज़ा सीधे सुलतानखाना आया। जी अब तक भिन्ना रहा था। तीसरे पहर का वक्त। मई के दिन। कायनात और नूरी दोनों बैठी ताश खेल रही थी कमरे में। आमीर के आने की आहट से ही कायनात झट कमरे से बाहर आकर बोली—बहुत इंतज़ार कराया।

आमीर चुप था। दो गिलास पानी पीकर भी कुछ न बोला।

—बात क्या है ? ऐसे चुप क्यों हैं ?

—कोई खास बात नहीं।

—नहीं, जरूर कोई खास बात है।

—नहीं है न।

—अच्छा यह बताइए—कमाल को कहां छोड़ा ?

आमीर को कायनात की बातें गुदगुदी जैसी असर जरूर करती हैं। उसने पूछा—तुम किसी नौची को जानती हो ?

—नहीं, बिल्कुल नहीं।

—नौची तुम्हें जानती है।

—कौन है यह नौची ?

—नौची कैसे जानती है ?

—पता नहीं।

फिर आमीर ने खुद सारी ही बात काट दी। बिल्कुल नए सिरे से बात शुरू की। व्यापारी की तरह नहीं, नये बने पूंजीपति की तरह।

—कहिए, क्या हालचाल हैं ?

कायनात पहले मुस्कराती रही। फिर संभलकर बोली—आपकी मेहरबानी।

—मेरी ?

—जी हां, आपके आने से यहां रौनक लग जाती है, वर्ना यहा क्या रखा है।

—मेरे साथ चलोगी ?

—ज़रूर, मगर कहां ?

—गोमती के किनारे।

—बुर्के मे चलूं या ?

—जैसी तुम्हारी खुशी।

—मेरी खुशी ?

धूप जा चुकी थी। गोमती के किनारे बड़ी भीड़ थी। कायनात को अपने संग लिए हुए आमीर रज़ा उस भीड़ में खड़े होकर एकटक

कमाल को देखने लगा।

कमाल बाजीगरी के अजीबोगरीब करतब-खेल दिखा रहा था। लोग खुशी से तालियां बजा रहे थे।

आमीर ने पुकारा—कमाल ! यह क्या कर रहे हो ?

कमाल ने आकर आमीर के कान में कहा—अपाला।

लोग तालियां बजाते, फिर एकाएक लोग चुपचाप उसके करतब देखने में खो जाते।

कमाल अपनी जीभ पर नंगी तलवार की नोक टिकाए नाच रहा था।

आमीर अवाक बना वह अजीबोगरीब मंजर देखता रहा। कायनात की आंखों से आंसू छलक उठे।

कमाल दोनों हाथ उठाकर बोला—अपाला। अपाला…!

सुबह के नौ बज रहे थे। एक बड़े झोले में संतरा, सेब, अंगूर, अंडे, पूरी दो किलो की मछली और कुछ हरी सब्जियां लिए हुए अचानक कमाल गुलफिशां में दाखिल हुआ। इस तरह उसे देखकर सारे लोग ताज्जुब में पड़ गए। सिर्फ अपाला ने बढ़कर उसके हाथ का झोला ले लिया। उसे जरा भी हैरत न थी।

अम्मी जान कमाल को एकटक देखती जा रही थीं। तहमीना अम्मी जान के कान में कुछ कह रही थी। गुलफिशां के आंगन में कमाल चारों तरफ न जाने क्या देख रहा था। अपाला बड़े करीने से झोले का एक-एक सामान सहेज रही थी। अम्मी और तहमीना दोनों उस पूरे मंजर को बडी डरी-डरी सी देख रही थी। उनके मुंह से कोई भी अल्फाज नहीं निकल रहा था।

कमाल अम्मी जान के दोनों हाथ पकड़कर बोला—अम्मी जान मैं आपका बेटा हूं।

अम्मी जान फफककर रो पड़ीं और कमाल को अपनी बांहों में भर लिया। आसुओं के बीच वह पूछने लगीं—बेटे तुम कौन हो ? मेरी बेटी को तुम कब से जानते हो ? कहां के रहने वाले हो ?

कमाल ने जिन नजरों से चुपचाप अम्मी को देखा, उससे अम्मी को जैसे उनके सारे सवालों का जवाब मिल गया।

कमाल गुलफिशां में करीब दो घंटे रहा। इस बीच उसने कितना मना करने पर भी अपने हाथ से मछली, चावल और सलाद बनाकर सबके साथ दोपहर का खाना खाते हुए कहा गोमती के पानी में क्लोरीन की बहुत कमी है। उत्तर प्रदेश के पूर्वी हिस्से में इसकी और भी कमी है

इसलिए हमारे खाने में विटामिन और फास्फोरस का मिकदास जितना अधिक हो उतना ही ठीक है। वहां से जाने से पहले कमाल अपाला के कमरे में गया। अपाला का पलंग जिस जगह बिछा हुआ था, उसे उठाकर उसने उस तरफ किया जिधर से उस कमरे में पूर्व से सीधी हवा और पूर्व व पश्चिम दोनों तरफ से रोशनी आ सके।

जाते-जाते कमाल ने अम्मीजान और तहमीना दोनों के सामने खड़े होकर कहा—ऐसा नहीं है कि मैं किसी तरह से काबिल हूं। मेरे पास ऐसा कुछ नहीं है जिसे कोई खास बात कही जाए। खास सिर्फ अपाला है, मुझे आज की किसी लिखी हुई चीज पर कोई ऐतबार नहीं है। मुझे सिर्फ ऐतबार है तो अपने ऊपर। अपने ऊपर भी उतना ही जितना कि उस ताकत पर, जो मेरे हाथों से काम कराता है, जो मेरी जुबान से बोलता है, जो मेरी आखों से देखता और मुझे दिखाता रहता है।

चार

अलीरज़ा साहब अपने हज़रत गंज होटल के कमरे में बैठे अंग्रेजी में एक लेख लिख रहे थे। वह लेख किसी खास अंग्रेजी रिसाला में छपना था। अपने लेख में *अलीरजा साहब अपना यह विचार रख रहे थे कि मौजूदा हिंदुस्तान में* मुसलमानों की राजनीतिक हैसियत का मसला बहुत टेढ़ा बनता जा रहा है। हिंदू दो सौ साल से अंग्रेजी शिक्षा को अपना चुके हैं। मुसलमानों के शासनकाल में हिंदुओं ने फारसी पढ़कर मुसलमानी शासन में भाग लिया। ईस्ट इंडिया कंपनी आई, तभी हिंदुओं ने फौरन उस हाल से समझौता कर लिया। मुगलों का नौकर, मुंशी, पल की पल में ईस्ट इंडिया कंपनी के क्लर्क में बदल गया। पिछले सौ सालों से हिंदू पश्चिमी दर्शन का असर भी लेता रहा। मुसलमानों को अंग्रेजों ने सन सतावन के बाद हर तरह से कुचला। हिंदुओं के यहां एक 'बुर्जुआजी' भी पैदा हो चुकी थी, जो लीडर-शिप और लिबरल राजनीति के लिए तैयार थी, मगर मुसलमान अभी 'फ्यूडल स्टेज' से आगे नहीं निकले।

अंग्रेज और ज़मींदार तबके का गठजोड़ बिल्कुल सही साबित हुआ। बंगाल में मुसलमानों के शासनकाल में माफी की जमीनों की आय से स्कूल चलते थे। *ईस्ट इंडिया कंपनी ने इन ज़मीनों पर अधिकार कर लिया।* स्कूल बंद हो गए और मुसलमान पिछड़ गए। उनके मुकाबले में हिंदू

अंग्रेजी पढ़ रहे थे। मुसलमान-जागीरदार खत्म हो चुके थे। मुसलमान कारीगर तबाह कर दिये गए। इस सबकी जगह लार्ड कार्नवालिस के स्थाई बंदोबस्त के नये हिंदू जमींदारों और हिंदू मध्यम वर्ग ने ले ली थी। अब बंगाल के अधिकतर किसान मुसलमान थे और जमीदार हिंदू। वर्गों की उलट-फेर की इस पृष्ठभूमि के साथ बंगाल मे सबसे पहले जागृति आई। नई हिंदू 'बुर्जुआजी' नेतृत्व संभालने के लिए तैयार थी, वगैरह-वगैरह।

अपना यह लेख तैयार कर अलीरजा साहब गुलफिशा आए। वहां तहमीना को अपना वह लेख पढ़ने को दिया। तहमीना लेख को इधर-उधर देखकर अलीरजा से बोली—तवारिख की ये बातें हिंदुस्तान के मुसलमानो को समझने के लिए बिल्कुल नाकाफी हैं। मुझे तो इसी बात पर ताज्जुब है कि मुसलमान 'इंटेलक्चुअल' असली बात कहने से क्यो इस कदर भागता है।

अलीरजा साहब चुप थे।

तहमीना चिकन कढाई मे लगी हुई बीस-बाइस लड़कियो, औरतों की ओर देखते हुए बोली—पता नही लोग इतना झूठ क्यो बोलते है ! सही बात क्यो नही कहते ?

अलीरजा का चेहरा उतर गया था। तहमीना से यह जानना कि सच्चाई क्या है, मारे घंमड के इस बाबत वह बिल्कुल चुप थे।

तहमीना बैठी हुई रेशम की एक साडी मे फंदा और मुर्री लगा रही थी। मुर्री लगाते-लगाते वह बोली—मुसलमान के लिए मजहब एक नैतिक फलसफा ही नही है, उसके अलावा भी बहुत कुछ है।

इसान अपने हर काम के लिए खुदा के सामने जवाबदेह है। मुसलमान की सारी दिक्कत यह है कि उसके सारे कायदे-कानून आठवी शताब्दी के है और वह जिंदगी जी रहा है बीसवी सदी मे। कानून और जिंदगी के बीच यह जो बारह सौ साल का फासला है, इतनी गहरी खाई है, इतना गहरा सन्नाटा है, यही है मुसलमानो की सारी दिक्कतों की दास्ता।

तहमीना ने यह बात बड़े इत्मीनान से कही, जिसे सुनकर अलीरजा साहब गुस्से से लाल हो गए। बोले—यही वजह है, तुम्हे तीन शौहरों ने तलाक दिए।

दोनो के बीच एक गहरा सन्नाटा छाया रहा।

तहमीना पर दूसरी तरह से रौब डालने के मकसद से अलीरजा ने कहा—तुम्हारी बहन अपाला ने उस बेवकूफ कमाल के साथ जैसी हरकत की है, वह तुम्हारी नजर मे ठीक है ?

तहमीना बोली—मेरी बहन ने जो कुछ किया, वही ठीक है। अली

साहब, आप अपाला को इतना ही जानते हैं कि वह जन्म से लेकर अब तक एक बीमार लड़की रही है। यह उसकी जिंदगी का बाहरी रूप है। मगर अपाला की अपनी जिंदगी से उस बीमारी का कोई रिश्ता नही है। वे हमारी बीमारियां है, जिसे हम नही कबूलते। आप जैसे लोग, जिन्हें अपनी पढाई-लिखाई और अक्लमदी का ही भरोसा है, अपाला को नहीं जान सकते। वह अनजान है। देखिए न, आपकी नजरों मे वह कमाल बेवकूफ है, लेकिन जिसके साथ अपाला ने ब्याह किया, जाहिर है, वह कमाल बेशक कमाल ही है।

थोड़ी देर खामोश रहने के बाद तहमीना एक नई साड़ी लेकर उस पर कसीदाकारी करते हुए कहने लगी—जिस समहा अपाला उस कमाल से मिलकर गुलफिशां लौटी थी, मेरा हाथ पकड़कर कहा था—दीदी जान, मेरा तुर्क मेरा दिल ले गया और यह मुनासिब ही है, क्योंकि सब तुर्कों मे से मेरे तुर्क जैसा आज और कहा है? आप जानते हैं अलीरजा साहब, तुर्क के मायने क्या होते हैं? मेरी बहन ने मुझे बताया तो मैं उसके चेहरे को देखती रह गई। तुर्क के मायने माशूक। और माशूक के मायने आईना, दर्पण…।

बरामदे के एक सिरे पर अपाला चुपचाप बैठी मलमल की साड़ी मे मुर्री की कील से छोटे-छोटे फूल बना रही थी। फूलों के बीच मे फंदे से कील बनाकर उसके चारों ओर टाके से घेरा बना रही थी। वह धीरे-धीरे न जाने क्या गुनगुना रही थी।

—क्या गा रही है?

—गा नही गुनगुना रही है।

—क्या?

'दरसन एकै नारि को, सब आदरस मझार'

तहमीना ने अलीरजा से पूछा—दर्पन, दरसन, आदरस के मायने आप जानते हैं?

अलीरजा ने कहा—यह सब बकवास, फजूल बातें हैं।

तहमीना ने हंसते हुए कहा—अपाला से बातें करके देखिए।

अलीरजा ने कहा—अपाला क्या किसी से बातें कर सकती है? मुझे तो वह गूंगी-बहरी भी लगती है।

तहमीना बोली—सुनिए, अपाला गा रही है—इंसान के चारों ओर रखे हुए तमाम दर्पनो मे, उसकी छाया सारी कायनात पर पड़ रही है। यह तभी मुमकिन है जब दर्पन साफ-सुथरा रहे।

अलीरजा ने कहा—ये सब बकवास है।

तहमीना कहती जा रही थी—आपको अपने अलावा सब कुछ बकवास लगता है। सिर्फ आप ही समझदार है, बाकी सब बेवकूफ और पागल है।

—ओ हो, आप तो नाराज हो गई।

—सुनिए, मैं अब नाराज नही होती। सिर्फ देखती रह जाती हूं।

अलीरज़ा अपाला के करीब जाकर बैठ गए। वह चुपचाप कसीदा-कारी का काम इस तरह कर रही थी, जैसे इबादत कर रही हो। सुई, धागा, उगलियां और डिजाइन, सब एक सुर-ताल में। फंदे से कील, कील से टाका। टाके से घेरा। फिर डिजाइन के हिसाब से चारों ओर हथकटी।

अलीरज़ा ने अपाला को छेड़ते हुए पूछा—क्या हाल हैं तुम्हारे ? मेरी भी मुबारकबाद ले लो।

—शुक्रिया भाई साहब।

—सुनो, कमाल को कब से जानती थी ?

—इसका कोई हिसाब-किताब नहीं है।

—तुम दोनो की जरूर कभी भेंट-मुलाकात हुई होगी।

—हां जरूर।...सुनिए, क्या कभी पहले भी उससे मेरी मुलाकात हुई है ?

—बताओ न !

—नही जानती।

—तुम्हारी तबीयत ठीक नही है। 'ब्लडप्रेशर' चेक कराया ?

अपाला मुस्कराते हुए बोली—उससे पहले वह हमारे घर के पास कभी नहीं आया था।

अलीरज़ा ने पूछा—लेकिन वह था कौन ?

इस सवाल से अपाला घबरा-सी गई। वह उस मासूम की तरह झेंप गई, जिसे किसी ने उसके माशूक के साथ देख लिया हो।

उन्होने पूछा—उससे फिर मुलाकात हुई ?

अपाला चुप थी। उसके चेहरे पर न जाने कहां की लाली दौड़ गई।

'पुलसरात' के मज़ार पर उस दिन बड़ी भीड़-भाड़ थी। बेशुमार हिंदू और मुसलमान स्त्री-पुरुष वहां आए थे। बहुत आ रहे थे। बहुत जा रहे थे।

मज़ार का लंबा-चौड़ा सहन औरत-मर्दों से भरा था। हाजतमंद लोग मज़ार पर आकर दुआ मुराद मांग रहे थे। सबको यकीन था इस औलिया की दरगाह से बिना मुराद पूरी किए कोई वापस नही लौटता। उर्स का जुलूस था। शानदार मजलिस दरगाह पर जम रही थी। दूर-दूर से दफाली,

कव्वाल आए थे। बहुत लोग फातिहा पढ़ रहे थे। बहुत लोग मज़ार के चारों ओर घेरा डालकर बैठे कुरान की आयतें और दूसरे पवित्र पाठों को गा रहे थे।

बुर्का ओढ़े अपाला अपनी ममी आयशा बेगम के साथ रिक्शे से उतर कर धीरे-धीरे मजार की तरफ बढ़ी। दरगाह की ड्योढ़ियों पर पहुंचकर दोनों ने बुर्के उठा दिए। अपाला फिरोजी रंग की ओढनी और ज़री के काम का सुथना पहने थी। उसकी बड़ी-बडी निर्मल आंखें, शुद्ध मोती-सा रंग और ताज़े फूल के समान चेहरा, ऐसा अजीब था कि उसे देखकर उस पर से आंखें वापस खींच पाना नामुमकिन सा था।

ममी आयशा बेगम को खुद ताज्जुब था कि जन्म से ही इस तरह बीमार बेटी, जिस पर कभी किसी दवा-इलाज-हकीम, वैद्य, डाक्टर का कोई असर न हुआ, उस अपाला पर इस तरह उस कमाल का क्या असर हो गया।

मज़ार के सामने खडी ममी दुआ मांगती हुई कह रही थी—पीरे मुंगा पीर ! शुक्र है तेरी मेहर का !

अपाला ने देखा—नहा-धोकर नए सलीकेदार कपड़ों मे कमाल आ रहा है। ममी को दिखाया अपाला ने। ममी की आंखो से आसू बरस पड़े। जैसे ही कमाल ने आकर ममी के पैर छुए, ममी ने कमाल को अपने दामन से लगा लिया

अपाला और कमाल दोनों ने एक साथ दरगाह की ड्योढ़ियों पर जाकर घुटने टेक दिए। मुजाविर ने दो फूल मज़ार से उठाकर अपाला-कमाल के हाथों मे दिए। दोनो ने उसे आंखो से लगाया।

ममी ने भरे कंठ से कहा—या हज़रत, मेरी बेटी को फरहत बख्शना।

ममी जानबूझ कर एक तरफ हट गईं।

अपाला के सामने कमाल एक बच्चे की तरह लजाया-शर्माया हुआ खडा था। बिलकुल चुपचाप सिर नीचा किए हुए। दोनों जैसे एक-दूसरे की सासों का संगीत सुन रहे थे। एक-दूसरे से नज़र मिलाए बिना ही दोनों आमने-सामने खड़े थे। ममी की नज़रें सडक के उस पार के हरे-भरे पेड़ों पर टिकी थी।

अपाला के मुह से निकला—तुम्हें कैसे पता कि मैं यहां आऊंगी ?

कमाल बोला—सब पता हो जाता है।

—कैसे ?

—पता नही।

—मुझे भी तुम्हारे बारे में सब पता हो जाता है।

—कैसे ?

—पता नहीं।

दोनों मुस्करा पड़े। अपाला ने अपनी अंगिया के भीतर से जामदानी पर कसीदा की हुई एक टोपी निकाल कर कमाल के सिर पहना दी। जैसे इबादत के लहज़े में बोली—तुर्क मेरे ! मोहब्बत मे दुनिया और ज़िंदगी को न भूलना ! यानी हर वक्त इंसान बने रहना। हम हर वक्त एक-दूसरे के संग-साथ रहें।

मर्मी ने कमाल से कितना कहा साथ घर चलने के लिए, मगर कमाल लाजवाब था, साथ नहीं गया।

कमाल अकेले मज़ार की तरफ मुंह किए चुपचाप खडा रह गया था। अचानक उसने भीड़ में देखा—नौची के साथ वही आमीर रज़ा।

कमाल ने भीड में छिपकर आमीर रज़ा को बिल्कुल पास से देखा। उसने नौची के साथ अपनी ऐसी सूरत बना रखी थी, जिसे देखकर बेवकूफों को भी डर लगता है और अक्लमंदों को हंसी आती है।

उस भीड़ में एक किनारे नौची के साथ खड़े होकर आमीर कह रहा था—लखनऊ मे जहां-जहां भी चिकनकारी हो रही है, मेरे आदमियो ने अब तक उन सबका पता लगा लिया है। मैं चाहता हूं लखनऊ व लखनऊ के आसपास गांव तथा कस्बों मे, जितनी भी चिकनकारी हो रही है वह सारा माल सस्ते से सस्ते दामो पर मैं खरीद सकू। इस काम में तुम मेरी मददगार हो, इसके लिए मैं तुम्हें मुह मागे पैसे दूगा।

नौची ने बडे गौर से आमीरको देखा। मुस्करा कर बोली—आप तो असली चिडीमार है, लेकिन अभी आपको मुर्गबाज़ी सीखनी होगी।

आमीर ने कहा—इतने दिनों से लखनऊ की सड़कों और गलियों मे जो खाक छान रहा हूं, इससे मैंने पूरी तरह से मुर्गबाजी सीख ली है।

नौची आंख मारकर बोली—तो आप चिड़ीमार है।

—लो, तुम मजाक करती हो।

—नौची बोली—रंडियां भी तुम लोगों की तरह अगर व्यापारी के काम-धंधों में हाथ बंटाने लगें फिर तो चारों तरफ तबले बजने लगें।

इतने दिनों तक आमीर लखनऊ में चिकन की कढ़ाई और चिकन-कारी करने वाली सब तरह की औरतें, उनकी जीविका के साधन, उनके एजेंट, लेन-देन, बाजार-भाव वगैरह के बारे मे पूरी जानकारी ले चुका था। वह इस नतीजे पर आ चुका था कि लखनऊ की चिकनकारी का अव्वल दर्जे का माल पर्दों में रहने वाली औरतों के ही हाथों से तैयार होता

है। उन तक पहुंचना किसी सौदागर के लिए इतना आसान नहीं है। पर्दों में रहने वाली औरतें चाहे जितनी गरीबी मे क्यों न हों, उनमें एक अजीब तरह का स्वाभिमान है। इसलिए चिकनकारी का जितना भी उम्दा से उम्दा माल, पर्देवालियो से मिल सकता है, उतना खुले घरो की औरतों से मुमकिन नही। मगर उन पर्दों के भीतर पहुच पाना इतना आसान नहीं। वहां पहुचने के लिए लड़किया और चालाक औरतें ही जरूरी हैं।

आमीर की समझ मे एक खास बात और आई। चिकनकारी वाले घरों से बाज़ार के जो नये रिश्ते बन रहे हैं, उनमें कई तरह के तनाव और खिचाव हैं। दूसरी खास बात यह कि लखनऊ के पुराने रंडी कोठे टूट कर न जाने कहा-कहा नई सूरतेहाल मे बिखर गए हैं। नाम भी अब बदल गए हैं—'लड़कियां'। अब 'कोठे' नही 'ठीके' हैं। पहले उन्हें 'बाई', 'जान' और 'बेगम' कहा जाता था—गौहरजान, शांतिबाई, सितारा बेगम''' अब उनका कोई नाम नही, कोई दर्जा ठिकाना नही, कोई भाव नही, अब बेनाम, थोक माल, जिनका सौदा आमने-सामने नहीं, टेलीफोन पर होता है। पहले आदाब-दुआ-तसलीम होता था, अब 'आर्डर' होता है। आर्डर और सप्लाई। लड़की-माल के इस नए बाज़ार और मेहनतकश चिकनकारी के बाज़ार से एक अजब तरह की लड़ाई छिड़ी है।

जिस वक्त व्यापारी आमीर रज़ा ने नौची के मुंह से यह सुना कि अगर चिकनकारी के कारोबार में ही सारी लड़कियां लग गईं तो हमारे काम-धंधे का क्या होगा, उसका चेहरा खिल गया।

नौची की भी समझ खूब है।

औरत और व्यापार, बिजली की तरह अखड है—उसे तोडा नही, *किया जा सकता है।*

गुलफिशा मे दिन के तीन बजे थे। तहमीना सेक्रेटेरियेट गई थी। अपाला लड़कियो और औरतों के बीच सबके साथ कसीदाकारी मे लगी थी। सबकी उगलियां, आखें, कान, नाक सबका सारा वजूद कपड़ो पर फूल उगाने में लगा हुआ था। उसी हालात में अपाला बोली—सुनो, एक दास्तान कहती हूं। बहुत पुराने ज़माने की बात है, एक गांव था। शाम का वक्त था। गांव के लोग बैठे आपस मे बातें कर रहे थे। उन सबमे बिल्कुल पीछे अधेरे मे कोई एक दूसरे गाव का गरीब, बेपनाह आदमी बैठा था। सारे लोग आपस मे तरह-तरह की बातें कर रहे थे। अधेरे मे बैठा वह आदमी बिल्कुल चुप था और सबकी बातें बड़े गौर से सुन रहा था। बातों ही बातों मे लोगो ने यह फैसला किया कि हर आदमी अपनी वह ख्वाहिश

बताए, जिसे पूरा कर उसे सबसे ज्यादा खुशी होगी। एक आदमी ने कहा कि मुझे दौलत चाहिए। दूसरे ने कहा कि मुझे एक खूबसूरत बीवी चाहिए। तीसरे ने कहा कि मुझे एक और बेटा चाहिए। चौथे ने कहा कि मुझे एक खूबसूरत घर चाहिए। इस तरह से बारी-बारी सबने अपनी-अपनी ख्वाहिशें बताईं। सिर्फ वह गरीब बेसहारा आदमी रह गया जो डरा हुआ अंधेरे मे बैठा था। जब उससे पूछा गया कि बता तेरी क्या ख्वाहिश है? तब वह बोला कि मेरी यह ख्वाहिश है कि मैं बादशाह हो जाऊं। मेरी बादशाहियत इतनी लम्बी-चौडी हो कि उसमे कभी सूरज न डूबे। मेरी तमाम बीवियां हों, बाल बच्चे हों, और तमाम नौकर-चाकर हों। फिर ऐसा हो कि एक रात जब मैं अपने महल मे गहरी नींद सोता रहूं तो अचानक दुश्मन मेरे महल पर हमला कर दे। मेरी सारी फौज को हराकर वह दुश्मन मेरे शाही महल को तोडते-बरबाद करते हुए मेरे कमरे के पास पहुंच जाए। फिर मेरी नींद खुल जाए। वह शोर-शराबा, दौड़-धूप, चिल्ल-पौं के बीच मेरे पास इतना भी वक्त न रहे कि मैं अपने कपड़े भी बदल सकू। मैं अपने उसी सिर्फ पायजामे और कमीज में नगे पैर दुश्मनों से बच कर महल से ज़िंदा भाग निकलू। दुश्मन मेरा लाख पीछा करते रहें, मगर मैं भागता चला जाऊं। जगल, पहाड़, नदी-नाले सबको पार करता हुआ मैं फिर यही पहुंच जाऊं जहा मैं इस वक्त हूं।

गांव वाले ताज्जुब में पड़ गए। लोग पूछने लगे कि अरे भलेमानुष इससे तुम्हें क्या मिलेगा? उस आदमी ने जवाब दिया कि इस तरह मुझे एक पायजामा और कमीज मिल जाएगा।

अपाला की कही हुई इस दास्तान को सुनकर सारी लड़कियां खिल-खिला कर हंस पड़ी मगर औरतें और उदास हो गईं। उनके मुह से इतना ही निकला कि हाय, बेचारा!

पांच

आमीर रज़ा ने खूब सोच-समझकर कमाल को अपनी कंपनी 'रजा ट्रेडिंग कारपोरेशन' में मैनेजर की नौकरी पर रख लिया। फिलहाल उसकी तनख्वाह कुल सात सौ रुपए और ऊपर से दो परसेंट कमीशन थी।

आमीर ने गोमती के उस पार न्यू हैदराबाद कालोनी में डेढ़ लाख रुपए में एक छोटा-सा मकान खरीद लिया। आमीर ने बहुत कोशिश की, कमाल उसके साथ ही रहे, लेकिन उसने साफ कह दिया कि वह ऐसा नहीं

कर सकता । मैनेजर को मालिक के साथ कभी नही रहना चाहिए। कमाल आमीर के साथ सुबह आठ बजे से लेकर रात आठ बजे तक बराबर रहने लगा । बाकी कमाल कहा रहता है, क्या करता है, यह किसी को नही मालूम ।

लखनऊ के आसपास गावो तथा कस्बों मे चिकनकारी का काम काफी बढ़ता जा रहा था । लखनऊ की ही तरह यहा के गावों मे हर तीसरे घर की स्त्रियां चिकन की कढाई जानती है । अपने खाली समय मे वे यही काम करती हैं । इससे उन्हे दो लाभ हैं । एक तो खाली समय का सदुपयोग हो जाता है, दूसरे आमदनी हो जाती है ।

लखनऊ शहर के अमीनाबाद मे रजा ट्रेडिंग कारपोरेशन का छोटा-सा दफ्तर और नीचे बड़ा-सा गोदाम । रजा कंपनी के दो दलाल—सतराम और अनवर, कमाल के हुकम के मुताबिक साडियों और कुर्तों के आर्डर लेकर कपडों समेत गांवो में ले जाते हैं और घर-घर स्त्रियों को चिकन काढने को देते है । कपडों पर पहले से ही डिजाइन छपा होता है । स्त्रियां महीने पन्द्रह दिनों मे काढ़-काढ कर पूरा कर देती हैं । कपनी के वही दलाल फिर आकर तैयार कपडे शहर वापस ले जाते हैं । जब से इधर आमीर रजा की कंपनी से चिकन की कढ़ाई का कारोबार बढा है, तब से इस काम की कीमत भी बहुत बढ गई है । पहले से कई गुनी मजदूरी काढ़ने वालियों को मिलने लगी है । अगर एक औरत पांच-छ. घटे काढने का काम करती है तो वह आठ से दस रुपये तक दिन-भर मे कमा लेती है । कढ़ाई का दाम टाको की बारीकी पर मुनहसर करता है । साडी पर काम के दाम इच के हिसाब से मिलते हैं और बूटियों के सैंकडे के हिसाब से ।

दस बजे का समय था । कमाल अपने दोनो दलालों के साथ लखनऊ से लगे हुए शाहपुर गाव मे जा रहा था । रास्ते मे उसे एक रोता हुआ बूढा मिला । वह शाहपुर गाव का सबसे पुराना बाशिंदा था, वह रोते हुए कह रहा था—खुदा से दुआ मागता हू कि मुझे जल्द ही उठा ले ।

कमाल उसके पास रुककर बोला—बूढ़े बाबा, तुम ऐसी बातें क्यों करते हो ? तुम्हारी परेशानी क्या है ? बूढा बोला—सूदखोर रतन रस्तोगी से मैं बहुत परेशान हू । मेरे घर पर उसका कर्ज है । सो उसने मुझे मेरे घर से ही निकाल दिया, जहां मेरी सारी उम्र गुजरी है । धीरे-धीरे पिछले पांच सालो में उसने मेरी सारी जायदाद लूट ली है ।

बूढे की आंखें आंसुओ से तर हो गईं । उसकी आवाज कापने लगी ।

कमाल ने पूछा—बाबा, कितना कर्ज है तुम पर ?

बूढ़ा रोते हुए बोला—मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूं। लाला ने मुझे फंसा रखा है।

—फिर भी कितना कर्ज होगा ?

—यह आठ-नौ सौ रुपये।

—अरे बाबा, इतनी सी मामूली रकम के लिए कोई इंसान मरना चाहता है ?

यह कहकर कमाल अपने पाकेट से एक कागज पर अपना पता-ठिकाना लिख कर बूढ़े को देकर बोला—लाला रतन रस्तोगी को यह कागज दे देना, और कहना लाला मुझसे मिले।

कमाल आगे बढ़ा तो एक औरत अपने गोद में बच्चे को लिए हुए रो रही थी। कमाल को देखते ही वह औरत कमाल के पैरों पर गिर पड़ी। ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए उसने अपना बच्चा उसकी तरफ बढ़ा दिया—देखो सरकार, यह बीमार है, मेरे मरद ने मुझे घर से निकाल दिया है।

कमाल ने बच्चे के पतले सूखे चेहरे को देखा। उसके पतले हाथ देखे, जिनमें होकर सूरज की रोशनी गुजर रही थी। फिर उसने आस-पास गांव के बैठे हुए लोगों के चेहरों को देखा। दुःख की लकीरों और झुर्रियों से भरे चेहरो, और लगातार रोने की वजह से लोगो की धुंधली आंखों को देखकर उसे लगा, जैसे किसी ने उसकी छाती में गर्म छुरा भौंक दिया हो। कमाल का गला भर आया। रहम और गुस्से से उसका चेहरा तमतमा उठा।

रोती हुई औरत कह रही थी—मैं बेसहारा हूं। मेरे दूसरे शौहर ने छः महीने मुझे रखकर घर से निकाल दिया, लाला के दो सौ रुपये उसे देने थे। मगर मेरा मर्द कहता है वह कर्ज अब मुझे चुकाना है। कमाल ने अपने दोनों दलालों के जरिए गाव की कढ़ाई करने वाली सारी औरतों को वही बुला लिया। सूदखोर लाला रतन रस्तोगी के खिलाफ बहुत सारे लोग उससे बातें करने लगे। कमाल ने अपने दलाल संतराम को आर्डर दिया कि उस बेवा औरत को चिकन की कढ़ाई की तालीम दी जाए। लाला के कर्ज की अदायगी इसके नाम एंडवास के रूप में कर दी जाए।

वहा जमा हुए लोगो मे से एक ने कहा—लाला रतन रस्तोगी से हुज़ूर आप होशियार रहिएगा।

कमाल बोला—शायद तुम लोग यह नही जानते कि रज़ा कम्पनी के मालिक आमीर रज़ा साहब से ज्यादा मेहरबान और दानिशमद दूसरा कोई शख्स इस समय नही है। अगर कोई इस बात में शक करता है ।

इतना कहकर उसने अपने चारों ओर खड़े लोगो की ओर देखा और धीरे से बोला—

—अरे, वह सूदखोर लाला रतन रस्तोगी मेरे सेठ का नाम सुनते ही गिड़गिड़ाने लगेगा। सुनो, अगर लाला ने तुममें से किसी को कोई तकलीफ दी तो फौरन हमारे कंपनी के मालिक आमीर के पास सीधे आना।

गरीब बूढ़े ने कमाल के सामने दुआ करते हुए कहा—खुदा तुम्हे वहिस्त दे, मेहरबान!

कमाल हंस पड़ा—बाबा, क्या तुम समझते हो कि बहिस्त मे काफी बेवकूफ लोग नही हैं? मैंने सुना है कि आजकल जन्नत और दोजख दोनों जगह बेवकूफ भरे पड़े हैं। वहां और ज्यादा बेवकूफों के लिए गुंजाइश नही है।

बूढ़ा दौड़कर अपने घर गया। कुरान शरीफ लाकर कमाल के हाथों में देते हुए कहा—हुजूर इसे ले लो और खुदा करे इस दुनिया में तुम रास्ता दिखलाने वाली रोशनी बनो।

कमाल के लिए मजहबी किताबें बेकार थी। मगर बूढ़े के दिल को ठेस न पहुंचाने की गरज से किताब ले ली।

बूढ़े ने हाथ जोड़कर पूछा—हुजूर अपना नाम तो हमें बताते जाओ, ताकि मैं इबादत में आपके लिए दुआ मांगूं।

कमाल ने चलते हुए कहा—मेरे लिए दुआ मांगने की कोई जरूरत नही। रही मेरे मालिक की ओर से नेकी की शोहरत की बात, सो अल्लाह के बहुत से फरिश्ते हैं जो उसे नेक कामों की खबर देते हैं। फरिश्ते अगर काहिल और लापरवाह हुए और टांग पसारकर सोते रहे, और इस दुनिया के पाक और नापाक के कामों का हिसाब न रखा, तो तुम्हारी इबादत का कोई असर नहीं होगा। क्योंकि बिना ईमान वाले लोगों से बात पक्की कराए, सबकी बातों पर यकीन करना, खुदा के लिए बेवकूफी ही होगी।

अगले दिन लाला रतन रस्तोगी अमीनाबाद के दफ्तर मे आमीर रजा से मिला। रस्तोगी ने आमीर को समझाया कि गांव के लोग जब तक पैसे की तंगी में नही रहेंगे तब तक उनसे कोई काम-धाम नही होगा। [illegible] होंगे, उतने ही वे कर्ज के बोझ से दबे रहेंगे, जरूर करेंगे कि वे और भी अधिक मेहनत से ज्यादा से ज्यादा चिकन के काम की मजदूरी करें।

रस्तोगी ने आमीर को यह भी समझाया कि आप अपने मैनेजर कमाल साहब को मना कर दें कि वह गांव में जाकर मेरे बारे में अनाप-शनाप न बके। उन्हें गांव वाले अपना दुखड़ा रोने का नाटक कर बेवकूफ

बनाते हैं। वह गाव वालों को कतई नही जानते, गांव वाले कितने लुच्चे, बदमाश और कामचोर होते हैं और उनकी औरतें कितनी झूठी और बातूनी होती हैं। यह उन्हें पता नहीं।

आमीर रजा लाला रतन रस्तोगी की बातें बड़े ध्यान से सुनता जा रहा था। इस तरह चुपचाप सुनते रहने के लिए कमाल ने ही राय दी थी।

लाला रतनलाल लखनऊ शहर के बड़े महाजनों में से एक थे। इनकी सूदखोरी का बहुत बड़े पैमाने पर कारोबार बस्ती, गोरखपुर, फैजाबाद, देवरिया, आजमगढ़, बनारस, मिर्जापुर तक के गांव मे दूर-दूर तक फैला हुआ था। लखनऊ के आस-पास के गाव में इनकी सूदखोरी काफी बढ़ी-चढ़ी थी।

इनके पहलवान सिपाही गांव में कर्ज़ देने के लिए एक से एक नए तरीके अपनाते थे। फिर उन्हें कर्ज़ की रस्सियो में उलझाते और बांधते चले जाते थे।

बगल के कमरे में मजे से बैठा हुआ कमाल, लाला रतन की सारी बातें बड़े गौर से सुन रहा था। एक कागज पर लाला का चित्र खींचता हुआ सोच रहा था। सूदखोरों का सरदार, ठहर, तुझे देखूगा। एक न एक दिन मेरी-तेरी मुलाकात होगी ही, फिर शामत आएगी तेरी। मक्कार, शैतान, जोंक की तरह तूने दुखी आवाम का खून चूसा है। लालची लकड़-बग्घा, गीदड़, हमेशा तेरी दाल नहीं गलेगी। न ही आवाम पर हमेशा मुसीबत बरपा होगी। अगर मैंने तुझसे उस सारे गम और मुसीबत का हिसाब न लिया, जो तू गरीबों पर लादता रहा, तो मेरा नाम कमाल नहीं।

लाला चला गया तो आमीर ने कमाल को आवाज दी।

—देखो भाई, हम तो बिजनेसमैन हैं—व्यापारी, हमें किसी से उलझना नही है। हमें तो सबसे फायदा और काम लेना है, वह चाहे कोई हो, समझे न !

कमाल ने कहा—बिल्कुल ठीक। हमारा काम इसी लाइन पर है।

—तो यह रस्तोगी···?

—जनाब, यह रस्तोगी नही, लाला है। लाला, 'बिजनेसमैन' को अपना जानी दुश्मन समझता है। रस्तोगी इस बात को खूब समझता है कि अगर गांव वाले चिकन की कढाई से मजदूरी पाकर इतना धन कमाने लगेंगे तो किसी को कर्ज़ लेने की जरूरत ही नही पड़ेगी। कर्ज़ के लिए बेकारी जरूरी शर्त है।

कमाल और आमीर में बातें चल रही थी कि वहां कायनात आ गई। आमीर उसे देखकर चुप हो गया और सिगरेट पीने लगा। कायनात उसके सामने कुर्सी पर बैठ गई।

कमाल वहा से हटकर बगल के कमरे मे चला गया।

कायनात ने पूछा – आपको मेरी इस तरह की मुलाकात मे किसी जुर्म का एहसास तो नही हो रहा है ?

आमीर ने कहा – मेरी जान, माफी चाहता हूं, कई दिनों से तुम्हारे यहां नही आ पाया। तुम्हें कई बार अपने नये घर में आने की दावत दी मगर तुम नही आईं। आज तुम इस तरह दफ्तर चली आईं। मुझे इस मुलाकात से खुशी भी है और बदगुमानी भी।

—आपकी बातों का सही मतलब क्या समझूं ?

—अपनी बातों का सही मतलब मुझे खुद भी समझ में नही आ रहा है। बात दरअसल यह है कि मैं तुम्हें बेहद चाहता हूं।

कायनात ने पूछा—क्यो ?

यह सवाल करके कायनात को खुद हंसी आ गई, बढ़कर उसने आमीर का हाथ पकड़ लिया।

आमीर को कायनात की भावनाओं की कोमलता का अनुभव होने लगा। वह बोला—मैं तुमसे कितनी बार मिल चुका हूं, लेकिन आज की मुलाकात का तसव्वुर बिल्कुल नया तजरबा है।

कायनात ने निगाहें नीची कर ली। कायनात हल्के से बोली—खुशी भी और बदगुमानी भी ?

ऐसा क्यों ? बदगुमानी किससे ?

—खुद अपने से।

—क्यों ?

—खुदा जाने।

कुछ देर बाद आमीर किसी से टेलीफोन पर बातें करने लगा। कायनात बगल के कमरे में कमाल के पास जा खड़ी हुई।

बोली—आज आप इतने खामोश क्यों हैं ?

कमाल ने कहा —तुमसे मुझे कुछ बहुत जरूरी बातें करनी हैं।

छह

कमाल के सामने कायनात चुपचाप बैठी थी। कमाल उससे कह रहा था—मैं समझता हूं तुम अल्लाह-फज़ल से काफी समझदार हो। मैं यह भी जानता हू कि तुम जो भी कदम उठाती हो, काफी सोच-समझकर उठाती हो, मगर फिर भी तुम्हें कुछ ऐसी बातें बता देनी ज़रूरी है, जिनसे तुम अपने हालात के मुताबिक फायदा उठा सको। इस सिलसिले में सबसे पहली बात जो दिल में बिठा लेनी चाहिए, वह यह है कि शादी है क्या चीज ? हकीकत में शादी किसी की गुलामी नही, बल्कि खुदा रसूल के हुक्म के मुताबिक, एक-दूसरे के साथ मिलजुलकर रहना और काम करना है।

यह कहते-कहते अचानक कमाल रुक गया। उसने पूछा—मगर क्या तुम सचमुच आमीर से शादी करना चाहती हो ? आमीर से शादी करने का मतलब समझती हो ? हर शहर में उसकी एक बीवी है। कोई रखैल है, कोई टाइपिस्ट है, कोई नौकरानी है, कोई शादीशुदा बीवी है। मगर इन सबसे महज एक ही रिश्ता है—अपने फायदे का। औरत उसके लिए एक सामान है, इस्तेमाल करने की चीज़ ''और माल'''

कायनात के मुह से निकला—अब मेरी तबीयत सुलतानखाना मकान से हद से ज्यादा उकता गई है।

कमाल ने कहा—इसके माने शादी तो नही है।

—फिर मैं क्या करूं ?

—तुम क्या करना चाहती हो ?

—ये मुझसे निकाह करना चाहते हैं।

—निकाह कर तलाक भी तो दे सकते है। ऐसा करो, कुछ दिन अभी सब्र करो और आमीर से इसी तरह का रिश्ता बनाए रखो। वह जिस तरह तुम्हारी कमज़ोरियों का फायदा उठा रहा है, उसी तरह तुम भी उसकी कमजोरियों का फायदा उठाओ। मेरा ख्याल है 'कमजोरी' और 'फायदा' का सही मतलब तुम खूब समझती हो। आमीर शादी और निकाह या किसी भी रिश्ते मे कतई कोई यकीन नही रखता। वह एक ही चीज जानता है, अपना मतलब और फायदा। आमीर एक नई गरीब कौम का एक नया गरीब आदमी है बेचारा, रुपयों की कब्र में बिल्कुल अकेला'''। वह बिल्कुल जज्बाती नहीं है। मगर उसका नाटक यह कभी-कभी कर देता है। तुम्हारे साथ यही नाटक उससे हो गया है बस !

कायनात भरे गले से बोली—हाय, अब मैं क्या करूं ?

कमाल ने जैसे हुक्म दिया—तुम फौरन यहां से सीधे गुलफिशां जाओ और वहां तहमीना से मिलो, अपने बारे मे उसे सब कुछ बता दो। वह जैसा कहें, वैसा करो।

कायनात वहां से सीधे नीचे उतर गई। उस समय वहां आमीर रजा नही था। थोड़ी देर में जब आमीर रजा वापस आया तो कमाल ने बता दिया कि कायनात घर वापस चली गई है। अपनी तरफ से कमाल ने जोड़ दिया कि कायनात कह गई है कि आज रात उसके साथ आप सुलतानखाना में ही रहें।

कायनात अपनी जिन्दगी में पहली बार गुलफिशां मकान मे दाखिल हुई। चार बजे का वक्त था। भीतर बरामदे में तमाम लडकियां और औरतें चिकन की कढाई के काम मे लगी हुई थीं। तहमीना के पास जाकर कायनात ने अपना परिचय दिया और बड़े अदब से बोली—मैं अपने बारे में पहले पूरी बात आपसे बता देना चाहती हू, फिर आप जो···।

तहमीना बीच मे ही बोली – तुम्हें यहां किसने भेजा ?

कायनात बिल्कुल चुप थी।

तहमीना बोली—तो कमाल ने भेजा है।

—आपको कैसे पता चल गया ?

कायनात तहमीना का मुंह देखती रह गई।

उस दिन शाम के छ: बजे तक कायनात गुलफिशां में ही बैठी रह गई। अपने बारे मे तहमीना को सब कुछ बता देने के बाद वह हैरत मे पड़ गई कि उस घर में सुलतानखाना के बारे मे कोई भी जानकारी नही है।

शाम के वक्त कायनात की मुलाकात अपाला से हुई। कायनात उसे एकटक देखती रह गई। बड़े संकोच के साथ उसने पूछा—आप वही अपाला हैं, कमाल की अपाला ?

—जी हां, मैं वही हू।

तभी अचानक बगल के कमरे से तहमीना की आवाज आई।

—माली तरक्की से मजहब का क्या ताल्लुक ? और शादी से मजहब का कोई ताल्लुक नही। आज की दुनिया नफरत के ताने-बाने पर जिंदा है···।

कहती हुई तहमीना भीतर कमरे से बरामदे में आ गई। सामने अलीरजा साहब बिल्कुल तमतमाये हुए आ खड़े हुए थे—तुम मेरे बारे में इतनी गलत बात सोचती हो। मुझे 'रिएक्शनरी' कहती हो ? मैं नफरत फैलाता हू ?

—मैं नही जानती आप क्या-क्या हैं ? सिर्फ इतना जानती हूं कि हिन्दुस्तान मे जितने भी साप्रदायिक दगे-फसाद होते है, उसमे सिर्फ गरीबों का खून बहता है। असली वजह इकनॉमिक है। मगर उस पर रंग चढा दिया जाता है दो जातियों, दो संप्रदायो और मजहबों का, ताकि सच्चाई पर पर्दा पड़ा रहे।

अलीरजा साहब तहमीना से लडने के लिए बिल्कुल आमादा हो गए थे। लेकिन तहमीना उनके पास से हटकर कसीदाकारी करने वाली लड़कियों, औरतों के बीच चली गई। आज दिन भर का कारोबार खत्म हुआ था, औरतो को अपने-अपने कामों का हिसाब भी देना था, और उन्हें आज मजदूरी भी मिलनी थी। तहमीना अपने हिसाब-किताब करने में पूरी तरह लग गई थी।

कायनात आज उस घर में एक ऐसी दुनिया में आई थी, जिसके बारे मे उसे कुछ भी पता नही था। वह मन ही मन कमाल के बारे में सोचती रही और तहेदिल से शुक्रिया देती रही।

पूरी तरह से शाम हो गई थी। वह गुलफिशा से निकलकर सुलतानखाना जा रही थी। अब उसके सामने दो दुनियाएं थी। एक ओर गुलफिशां की दुनिया थी। उस दुनिया में रहने वाले लोग, उनके दिल-दिमाग, उनकी तहजीब, उनकी लड़ाई, उनके ख्यालात। दूसरी दुनिया गुलफिशां के बाहर

आ रही थी—अरे जैबुन, नूरन, तेरी चोलियां किधर हैं···अरी बशीरन, ओ आपा, जाकर दरवाज़े पर खड़ी हो जाओ न, नही तो 'टैम' निकल जाएगा ··अरे बैठी-बैठी अंगड़ाई क्या लेती है, जा सीधे से दरवाजे पर खड़ी हो जा, परदे के पीछे, ओ री, पर्दे को हाथ से थोड़ा हटाए रखना··· अरे कुछ दिखाती रह।

कायनात गली मे धीरे-धीरे बढ़ रही थी। उसके कानो मे आवाजें टकरा रही थी—ऐ मुये किधर से आते हैं, सारा जिस्म तोड़ देते है···।

अचानक दूसरे मकान से आवाज़ आती है—ओ री लौंडियो, चाय वाला गया क्या ? अरे मुझे बहुत तलब है चाय की।

—तू उठ जा न जरा।

—आवाज़ तो लगा। बिना चाय के मुझसे उठा नही जाता।

कायनात बहुत धीरे-धीरे आज चल रही थी। न जाने कितनीआवाज़ें उसके कानों से टकरा रही हैं···चाय···चोलियां···ब्लाउज··· शराब···

साड़िया···पैसे···इधर आ जा। अंडा···गोश्त···माल···रुपये। क्यों री यह नया मेहमान कौन है ? और भी है कोई···?

यह कैसी दुनिया है ? इस दुनिया में से एक आवाज़ मानो यह भी उठ रही है, क्या सारी ज़िन्दगी अब मुझे यही करना है ? दूसरों के लिए मैं क्यों सोचूं ? दूसरों ने मुझे अब तक क्या दिया ?···

अचानक कायनात को ऐसा लगा जैसे चारों ओर एक सन्नाटा छा गया। उसने आसमान मे अपना नाम पढा—बेगम आमीर रज़ा।

तभी उसके कानो मे सुनाई पड़ा—आखिर तुम बताते क्यों नही मुझे क्या करना चाहिए ?

कायनात सुलतानखाना के फाटक से पीठ टिका कर खड़ी हो गई।

अगले दिन लखनऊ के आसपास के गांव से लौटकर कमाल ने आमीर रज़ा को बताया कि लाला रतनलाल रस्तोगी आने वाले मुहर्रम से पहले इस बार हिंदू मुसलमानो का झगडा कराने की स्कीम बना रहा है। यह झगड़ा वह शाहपुर गांव से शुरू कराने की तैयारी कर रहा है।

आमीर ने पूछा—तुम्हे कैसे मालूम ?

—मुझे मालूम है।

—कैसे ?

—ये बातें हवा मे लिखी होती हैं।

कमाल जब बोलते-बोलते इस तरह की बात कह बैठता है, जिसका आमीर कोई मतलब नहीं लगा पाता, तो वह बिल्कुल चुप हो जाता है। मतलब आमीर को यकीन हो जाता है कि कमाल बिल्कुल सच कह रहा है।

आमीर ने पूछा—ऐसी हालत मे हमें क्या करना चाहिए ?

कमाल ने कहा—हमें ऐसी हालत में चाहे गांव हो या शहर, लोगों को साफ-साफ बता देना चाहिए कि तुम लोग पहले हिन्दू या मुसलमान नही हो। पहले तुम लोग गरीब हो। गरीब न हिंदू होता है, न मुसलमान, गरीब महज गरीब होता है। गरीबो को ही आपस में लड़वाकर लोग अमीर बने हुए हैं। यह बात आसानी से नही समझाई जा सकती··।

आमीर ने कहा—मिया, क्या बेतुकी हाक रहे हो। लगता है तुम दहरिया हो। दहरिया माने नही जानते ? दहरिया माने नास्तिक।

कमाल ने कहा—छोडिए इन बातों को। अब मैं आपको एक खबर सुनाता हूं। लाला रतनलाल रस्तोगी लखनऊ शहर मे गरीब शिया और सुन्नियों को सूद पर कर्ज देता है। जब से चिकनकारी का ये काम गरीबो का सहारा बनने लगा है, तब से उसने यह तय किया इस बार रायबरेली

से कुछ गुण्डे ले जाएगा और शिया-सुन्नी मुहल्लों में बलवे और दंगे करवाएगा।

आमीर ने कहा—ये बातें तुम मुझे क्यों बता रहे हो ?

—इसलिए कि लाला रतनलाल तुम्हारा कारोबार बन्द करवा देना चाहता है। ये कहते-कहते कमाल गंभीर हो गया—इस काम में लाला रतनलाल अकेला नहीं है। उसके साथ तीन लोग और हैं—नौची, कल्पनाथ, बाबूसिंह। नौची को आप खूब जानते हैं। कल्पनाथ और बाबूसिंह को आप नहीं जानते। कल्पनाथ राजनीतिक गुंडा है और बाबूसिंह लड़कियां सप्लाई करता है। आपको समझ लेना चाहिए कि आपके काम से बड़ा धंधा ये लोग यहां चलाते हैं। आपके कारोबार से इनके धंधे पर बुरा असर पड़ रहा है। और यह सही भी है। मनुष्य को, खासकर औरतों को अगर अपनी चिकनकारी या किसी तरह की दस्तकारी या नौकरी का आसरा हो जाता है तो ऐसे लोगों को रोजी-रोटी के लाले पड़ जाते हैं।

आमीर कमाल के सामने से हट गया। कमाल ने समझ लिया कि अब उसे छूट है कि इस मामले में जो मुनासिब हो वह करे। किसी भी तरह से चिकनकारी के इस बढ़ते हुए काम का किसी तरह का कोई नुकसान न होने पाए।

कमाल के सामने साफ था कि निजी दौलत पर मुनहसर माल के उत्पादन और सामाजिक रिश्तों के बीच कैसा गहरा अंतर्विरोध होता है। उत्पादन के साधनों पर निजी मिल्कियत होने से महज माल में बंटवारा नहीं हो जाता, बल्कि श्रम का चरित्र भी निजी हो जाता है और माल की तरह इंसानों का भी उसी तरह बंटवारा हो जाता है।

नौची, कल्पनाथ, बाबूसिंह, रतन रस्तोगी और आमीर रज़ा ये सब अपने-अपने तरीकों से माल उत्पादक हैं। इनमें से हरएक माल उत्पादक अपने-अपने बाज़ार और काम-धंधे के हिसाब से एक दूसरे से कंपिटीशन और यहां तक कि दुश्मनी में काम करता है।

यह सोचते-सोचते कमाल मुस्करा पड़ा कि किस तरह ज़ाहिरा मेहनत, मज़दूरी और धीरे-धीरे इंसान की अपनी खुदगर्ज़ी बेज़ाहिरा शक्ल ले लेती है और आदमी मजबूरन एक-दूसरे को दुश्मन समझने लगता है। गरीब तभी माल है, जिसका सौदा लोग तरह-तरह से करते हैं।

मुहर्रम के तासे बजने चाहिए थे। मगर लखनऊ के आस-पास गांव में एकाध कोई तासा पीटता था। उसके साथ कोई ढोल नहीं बजती थी, किसी गांव में अगर कोई ढोल बजाता था, तो तासे नहीं बजते थे। एकाध बूढ़ी औरत के मुंह से हाय हुसैन हाय हुसैन की दबी हुई आवाज़ निकल

पड़ती थी। लौंडे अब फिल्मी गीत गुनगुनाते हैं। उन्हें अब यह बताने वाला कोई नही कि यह ताजिया क्या है ? मुहर्रम क्या है ? हसन-हुसैन कौन थे ? करबला क्या है ? उन्हें सिर्फ इतना ही पता है कि एक शिया है और एक है सुन्नी। और दोनों मे जानलेवा दुश्मनी है। एक-दूसरे का कत्ल कर देना, यही मुहर्रम है। पता नहीं यह बात नये लौंडों को कौन चुपचाप बता जाता है ?

लेकिन लखनऊ शहर में, खासकर चौक हुसैनाबाद. शहादतगंज, इमामबाड़ा इलाका, मुफ्तीगज, गोलागज, अकबरी गेट, राजा बाजार, यहां मुहर्रम की छोटी-मोटी तैयारियां हो रही थीं। इस तैयारी पर एक ओर गरीबी और मुफलिसी का असर था। दूसरी ओर इस पर सियासत का। तीसरी ओर इस पर बाजार भाव भी हावी है। लोगो के लिए मुहर्रम का अब कोई मायने नही रहा। जो इसे मानते हैं, वे लोग अब इस बात को बिल्कुल भूल गए हैं कि कर्बला और मुहर्रम उन इंसानों की कहानी है जिन्होंने इसानी हको के लिए साम्राज्यवाद से टक्कर ली थी। यह चौदह सौ साल पुरानी कहानी है कि आज भी इंसान का सबसे बड़ा दुश्मन इसान ही है। आज इंसानियत का अलमबर्दार इसान ही है। आज भी जब दुनिया के किसी कोने मे कोई यजीद सर उठाता है तो हुसैन बढकर उसकी कलाई मरोड़ देते हैं।

गुलफिशां में बैठी हुई बूढी आयशा बेगम अपनी तीनों बेटियो—तहमीना, अपाला, गुलनार के सामने अपने नवाबी जमाने की याद ताजा करती हैं—मुहर्रम में हजरत इमाम हुसैन की याद ताजा करना हिंदुस्तान में खासकर हम शियो से शुरू हुआ। उस समय से जबकि इसना अशरी मजहब ईरान का शाही मजहब बना और वहा के लोग आकर नवाबी दरबार मे पन्हा वहदे लेने लगे। चूंकि दिल्ली में शाही खानदान का मजहब सुन्नी था, इसलिए वे खास चीजें जिनका ताल्लुक शियों की संस्कृति से था, यहा बढ़ न सकीं। लेकिन मर्सियागोई से आगे सगीत में सोजख्वानी मुहर्रम की देन है।

सोजख्वानी का नाम सुनते ही अपाला गा पडी :

जोति सो आग, आग से बाऊ।
भयउ पवन सो नीर बनाऊ॥
भयऊ नीर सो माटी, चारों से भए देह।
देह और जीवन सो बाढ़ो बहुत सनेह॥

अम्मी आयशा बेगम की आंखों से आंसू बरसने लगे। आयशा बेगम उसी खानदान से हैं, जिसमें मीर अली हसन और मीरबंदा हसन सोज़-ख्वानी के पहले उस्ताद थे। सोज़ख्वानी को राग का दर्जा इन्हीं से मिला।

जब नवाब बादशाह वाजिदअली शाह अंग्रेज़ों की हिरासत में थे, तब सोज़ख्वानी के संगीत को सुनकर वह फफककर रो पड़े थे और अंग्रेज़ अफसर से कहा था—जब मौत आ जाती है तो बुद्धि सो जाती है। चांद स्याह हो जाता है। सूरज गहन में आ जाता है।

यह सच है कि मुहर्रम मनाने का सबसे ज्यादा असर लखनऊ की औरतों पर पड़ा। सोज़ों की प्रभावशाली और दिल को टूक-टूक कर देने वाली धुनें मीर अली हसन और मीर बंदा हसन के गले से निकलते ही सैंकड़ों शरीफ मर्दों के गले में उतरी और उनके जरिए से हजारों शरीफ शिया खानदान की औरतों के मधुर गलों में उतर गईं। और यह हालत हो गई कि मुहर्रम में और अधिक मजहबी इबादत के समय लखनऊ के गली-कूचों में तमाम घरों से पुरसोज तानों और दिलकश गीतों की आवाजें उठती थी।

मगर यह बातें तब की हैं, जिसे आयशा बेगम आज आंखों में आंसू भरे महज़ याद कर रही थी। आज का मुहर्रम बिल्कुल उदास है। डर और खौफ से भरा हुआ है। पता नहीं कहां से शिया और सुन्नी के नाम पर, हिंदू और मुसलमान के नाम पर कहीं से अचानक बलवा हो जाए।

ज्यों-ज्यों मुहर्रम का दिन नजदीक आ रहा था, लखनऊ के पुराने मुहल्लों में अजीब डर और दहशत बढ़ती जा रही थी।

चेहलुम की रात में अपाला गुलफिशा में एक अजीब ख्वाब देख रही थी।

वह अपने कमाल के साथ तालकटोरा की करबला में गई है और वहीं सारी रात बिता रही है। रात को एकाएक ऐसे संगीत की आवाज कानों में आई जिसे सुनकर दोनों बेचैन हो गए। देखा कि रात का सन्नाटा है, और उसमें औरतों का एक झुंड ताजिया लिए हुए आ रहा है। सबके बाल खुले हुए और सिर नंगे हैं। बीच में एक औरत हाथ में शमा लिए है। उसकी रोशनी में एक लंबे कद की खूबसूरत औरत कुछ पन्नों में से पढ़-पढ़कर मर्सियाख्वानी कर रही है और दूसरी कई औरतें उसके साथ गलेबाजी कर रही हैं। उस सन्नाटे, उस वक्त, उस चांदनी, उन नंगे सिर सुंदरियों और उस पुरसोज गीत ने जो समां पैदा कर रखा था उसे बयान नहीं किया जा सकता। नाजुक अंदाजों का यह समूह जैसे ही कर्बला के

फाटक में दाखिल हुआ उस लंबी हसीन औरत ने परज की धुन में यह मर्सिया शुरू किया :

> जब कारवान-ए-शहर मदीना लुटा हुआ
> पहुंचा करीब शाम के कैदी बना हुआ।
> नेजे पे सर हुसैन का आगे धरा हुआ
> और पीछे पीछे बीबियों का सर खुला हुआ···।

लखनऊ के आस-पास के गांवों मे लाला रतन रस्तोगी और उनके आदमियो ने झगड़े-फसाद की बहुत कोशिश की लेकिन कमाल की वजह से वे कहीं भी कामयाब न हुए।

अब उनकी कोशिश हुसैनाबाद से लेकर बडा इमामबाड़ा के दरम्यान शिया-सुन्नियो के बीच झगड़ा और बलवा कराने की थी। जिस दिन शिया और सुन्नी तबर्रा पढ़ने को थे, उस दिन लाला रतन रस्तोगी के आदमियों ने कई घरों में लाउडस्पीकर फिट कर दिए थे। कमाल को इस बात का पूरा पता था कि पैगंबरों को लेकर तबर्रा की पढाई ही शिया सुन्नी मे नफरत की जड़ है। कमाल ने हुसैनाबाद से लेकर छोटे और बड़े इमामबाडो तक बिजली की लाइन फेल करवा दी थी। साथ ही उसने सारे लाउडस्पीकर वालों को चुपचाप इनाम देकर यह सख्त हिदायत कर दी थी कि लाउडस्पीकर बजने न पाएं।

चेहलुम के बाद हुसैनाबाद से एक ताजिया उठा, जिसे बख्श का ताजिया कहते हैं। यह ताजिया नवाबों के ज़माने की बहुत बडी चीज थी, लेकिन अब इसके उठाने वाले सिर्फ गरीब लोग ही थे। इस ताजिए के दिन फिर शिया सुन्नियों के बीच झगड़ा कराने की पूरी स्कीम तैयार की गई थी, लेकिन कमाल ने मौची की मदद से इस स्कीम को भी नाकामयाब कर दिया।

मुहर्रम की रात छोटे इमामबाड़े में गरीबों की एक अपार भीड उमड़ आई थी। पिछले साल एक-एक गरीब को चार रोटी और एक डिब्बा दाल दिया गया था। लेकिन इस साल सिर्फ एक-एक सूखी रोटी ही दी जा सकी थी। उसके लिए भी गरीबो मे मारपीट और छीना-झपटी हुई थी।

आज़ादी से पहले लखनऊ में मुहर्रम का हंगामा कुछ और ही था। तब लोग ताजिया बनाने में अपनी सारी कला लगा देते थे। तब कागजों, पन्नियों और रेशम के पालनों, ताबूतों और ताजियों में भी उन्हें खुदा का जलवा नज़र आता था। इमामबाड़ों में चरागा होता था। गली-कूचों से

राग पीलू और राग दुर्गा में शोक गीतों की धुनें उठती थीं।

आज लगता है वह सब बुद्धि का भ्रम था। मन का छलावा, नज़र का बहलावा।

आज लगता है, किसी चीज का कोई मतलब नहीं रह गया है, जैसे सारा मतलब रुपये पैसे में सिमट आया है। उस रुपये पैसे पर अवध नहीं, उत्तर प्रदेश की बाझ राजनीति ने उसे दबोच लिया है—जहां मिले, जिस कीमत पर मिले मौज मस्ती करो। तुम्हारे उसूल, तुम्हारे त्याग, तुम्हारी खिदमत, रहनुमाई, तुम्हारी कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, तुम्हारी मुस्लिम लीग, तुम्हारी यूनियन, सब बकवास है।

सात

कमाल गुलफिशां में अपाला के पास किसी-न-किसी वक्त ज़रूर आता था। अपाला और कमाल के रिश्ते को लेकर उस पूरे गली-मोहल्ले के लोग बड़े नाराज थे। कुछ लोगों ने यहां तक कह रखा था कि अगर कमाल उन्हें मिलेगा तो उसे जान से मार देंगे। अम्मी आयशा बेगम के नाते-रिश्तेदार भी खुश नहीं थे। लोग कहां यह सोचते थे कि अपाला किसी-न-किसी दिन ज़रूर मर जाएगी। उसकी बीमारी ऐसी है कि वह ज्यादा दिन जिंदा नहीं रह पाएगी। लेकिन उसको इस तरह एक शौहर मिल गया और उसकी तंदुरुस्ती भी ठीक होने लगी है, इस बात से लोगों में एक अजीब तरह की तकलीफ हो रही थी। उस तकलीफ को बढ़ाने में अलीरज़ा साहब का खास हाथ था।

इस सब के बावजूद कमाल बिल्कुल सहज और बेफिक्री से गुलफिशां में आता-जाता। उसकी यह ज़िम्मेदारी हो गई थी कि अपाला के साथ गुलफिशां में रहने वाले सभी लोगों की वह खिदमत करे और उनकी हर तरह की भलाई में वह जी-जान से लगा रहे। मोहब्बत उसके लिए सिर्फ अहसास ही नहीं बल्कि एक पूरा काम था। जिसे और लोग समझ नहीं पा रहे थे और ख्वामख्वाह परेशान होते थे। लोग उसके खिलाफ थे पर उसके सामने कोई खिलाफत नहीं कर पाता था।

वह जिस रात गुलफिशां में रहता, उस दिन अलस्सुबे अपाला को लेकर मकान की छत पर जा खड़ा होता और दोनों उगते हुए सूरज को देखते। सुबह का सूरज किस कदर एक नन्हे बालक की तरह है, कितना

कोमल, कितना ताजा और यहां अजब खूबसूरती हर दिन देखने को मिलती है। वही सूरज दोपहर के बाद जब ढलने लगता है तो उसकी 'ग्लोरी' की कीमत कौन आंक सकता है? तमाम ख्वाहिशों के पीछे दौड़ते-भागते लोग दिन की इस खूबसूरती को क्यों नहीं देखते? पूरे दिन और समय को ये इस तरह कोसते क्यों रहते हैं? जो कुछ भी ये लोग करते होते हैं उससे इस कदर झीकते क्यों रहते हैं? यह सबक किसने पढ़ाया? यह क्या हुआ, कैसे हुआ?

अपाला और कमाल एक-दूसरे की आंखों में देखते रह जाते थे।

एक दिन गुलनार रज़ा ट्रेडिंग दफ्तर में दनदनाती हुई पहुंच गई। वह 'हाट जीन्स' पहने थी। दफ्तर में आमीर रज़ा से मुलाकात हुई। उसे यह पता नहीं था कि उस दफ्तर का मालिक यही आमीर रज़ा है जिसके यहां कमाल मैनेजर है।

आमीर गुल को देखते ही चहक पड़ा। उसे लगा कि यह कोई खास चिड़िया है। इस बात को समझने में गुल को ज़रा भी देरी न लगी। वह बेखटके आमीर रज़ा से बोली—बिजनेसमैन बड़े 'बोगस' होते हैं। रुपये-पैसे की कमाई के अलावा और किसी चीज़ को समझने की उनमें काबलियत नहीं होती।

इस पर वह बोला—आपका नाम गुल है, मैं आपको पहले से जानता हूं।

गुल ने यह नहीं जानना चाहा कि इसकी वजह क्या है। बल्कि उसने कहा—मुझको तो बहुत से लोग जानते हैं, मगर आपको यह भरम कैसे हुआ कि आप मुझको जानते हैं?

आमीर गुल की इस बात से न घबराया न झुंझलाया। वह बड़े इत्मीनान से अपने 'चकन बिजनेस की बातें करने लगा।

गुल वहां से नीचे उतर गई। रिक्शे पर बैठकर सीधे गुलफिशां आई। अम्मी जान और अपाला से आमीर रज़ा के बारे में बातें करती रही और अपाला के साथ हंसती रही। तभी आयशा बेगम ने टोका—अरे, बेटी! ऐसे नहीं हंसते। हमारे दिन अच्छे नहीं हैं, किसी की नज़र लग जाएगी।

अपाला ने कहा—अम्मी जान! अफसोसनाक बातें सोचना अब छोड़ दो। हमारे अच्छे बहुत अच्छे दिन शुरू हो गए हैं। हम खुशकिस्मत हैं, क्योंकि हमें अपनी किस्मत पर यकीन है, हम मेहनती हैं, हमें खुदा पर भरोसा है।

जैसे पूरे गुलफ़िशां में अपाला की यह आवाज गूंजी। भादों के काले बादलों के साथ बहती हुई हवा ने सबको अपने आप में समेट लिया। रात होते-होते वर्षा शुरू हो गई। इतना जोरदार रेला आया कि लखनऊ क्या, पूरे अवध की धरती-आकाश एक हो गए। नदी-नाले जल से भर गए। पुराने दिन होते तो गौड़ मल्हार की तानों में सारा दर्द, सारी तकलीफें हवा हो जाती। मगर आज का लखनऊ ?

बारिश थमी, तो गली अनारकली के किसी मकान से आवाज आई।

—शर्म करो ! शर्म करो !

अपाला और गुल दोनों बहनें ऊपर छत पर जा खड़ी हुईं। वहां भी उनके कानों में वही आवाज़ टकरा रही थी, शर्म करो। शर्म करो।

गुल ने पूछा—दीदी, हमारे पड़ोस में जहां कोई भी शर्म-हया नहीं है, वहां शर्म करो की यह आवाज़ कौन दे रहा है ?

अपाला कहने लगी— लखनऊ में यह आवाज़ बार-बार न जाने कहां से गूंजती है। यह आवाज नवाबी समय में भी सुनाई पड़ी थी, जब हिंदुस्तानियों की गफलत और जहालत का पैमाना छलकने के बहुत करीब पहुंच गया था और उधर ब्रिटिश साम्राज्य की शक्ति और ब्रिटिश राज्य की दूरदर्शिता, योग्यता और परिश्रम ये सब अपने प्रयत्नों और उच्च संस्कृति तथा सभ्यता का फल पाने की रोज बरोज नामुमकिन पात्र बनती जा रही थी। उस युग ने सारी दुनिया में संस्कृति का एक नया रूप धारण किया था और वह पुकार-पुकार कर हरेक जाति से कह रहा था जो इसमें मेरा साथ न देगा, मिट जाएगा। जमाने के इस ढिंढोरे की आवाज किसी ने न सुनी और सब मिट गए।

एक अजीब सन्नाटा छा गया। अपाला की बातें जैसे उस सन्नाटे में जम गई थीं। गुलनार मानो एकटक उसे देख रही थी।

शर्म करो ! शर्म करो ! की आवाज अब तक आ रही थी।

अपाला ने कहा—इन्हीं मिटने वालों में अवध की सल्तनत भी थी जिसके पतन की जिम्मेदारी बेचारे वाजिदअली शाह पर लोग डाल देते हैं और लोग अपने आपको उस जिम्मेदारी से बचा लेते हैं। हम सब की फजीहत की यही असली वजह है। इस फजीहत में हमारा साथ न इस्लाम मजहब दे सका न हिंदू धर्म। हम एक भयंकर शून्य में तब से आज तक लटके हुए हैं।

अचानक गुलफिशां के बाहरी दरवाजे पर किसी की पुकार आई—कमाल साहब हैं ?

अपाला ने महसूस किया, पुकार देने वाले की आवाज़ कांप रही है।

गुल के साथ अपाला नीचे आई। आवाज़ देने वाले आदमी को देखा, वह बेतरह डरा हुआ था।

अपाला ने पूछा—तुम कौन हो ?

जवाब मे वह बोला—कमाल साहब कहां हैं ?

—वह तो यहां नही हैं।

—कहां हैं ?

—बात क्या है ?

वह रो पड़ा। उसके आसू उसके मुह पर इस तरह बह रहे थे, जैसे वह गुलफिशां मे सेंध लगाने आया हो और अचानक पकड़ लिया गया हो। उसके मुह से निकला—साहब गजब होइगे, लाला रतनलाल के सिपाही हमारे गांव वालन के पीट डारिन।

अपाला बोली—कमाल वहां पहुच गए होंगे। जल्दी जाओ।

वह आदमी तेज़ी से चला गया। अपाला और गुल दोनों घर के अन्दर जाकर सीधे उस कमरे मे बैठ गईं, जो इस घर का खास कमरा था। थमी हुई बारिश फिर शुरू हो गई और सारा मंजर उदास हो गया।

अपाला बोली—देखो गुल, जब मंजर उदास होता है तो हम भी क्यों उदास हो जाते हैं, क्योंकि हम भी उसी का एक हिस्सा हैं। मगर हिस्सा होने के बावजूद इंसान का यह फर्ज है कि वह हमेशा मंजर का हिस्सा होते हुए भी उसके खिलाफ हर वक्त लड़ता रहे, यही उसके इंसान होने का सबूत है। गुल, तुमने कई बार मुझसे पूछा है कि मैं जन्म से लेकर बराबर बीमार रही हूं, कोई दवा, कोई चीज, कोई आदमी मेरे रोग को न जान सका, न ठीक कर सका। अपने कमाल से मिलकर मैं कैसे धीरे-धीरे ठीक हो रही हू, उस पर भी तुम सबको ताज्जुब है। मम्मी के अलावा किसी को भी ज्योतिष, साधु, फकीर पर यकीन नहीं है। मुझे इतना यकीन क्यों है, सबसे ज्यादा ताज्जुब तुम्हीं को है।

गुल ने कहा —बहन, तुम वाकई सब तरह से आश्चर्यजनक हो।

अपाला गुल का हाथ पकड़कर कहने लगी—हर इंसान मे उसकी शख्सियत के दो हिस्से होते है, मतलब उसके दो 'सेल्फ' होते हैं। उसका एक 'नेचुरल सेल्फ' जिसे 'एनीमल सेल्फ' भी कहते हैं। दूसरा सेल्फ 'ह्यूमन सेल्फ' है। इन दोनों हिस्सों से ही उसकी जिन्दगी है। मेरा पहला 'सेल्फ' जन्म से बीमार पडा है। इसलिए मेरा दूसरा 'सेल्फ' भी करीब-करीब बीमार ही रहा। किसी और को नही, मुझे पता है कि मैं बीमार नही हूं, मैं जो कुछ हू वही हूं, इसी इल्म से मैं जिंदा रही हूं। मगर इस इल्म को देखने के लिए एक ज्ञान चाहिए, ये मुझे कमाल से मिलकर

ही हासिल हुआ। गुल, तुम्हें यह सुनकर ताज्जुब होगा, जब मैं सात साल की बच्ची थी, बेतरह बीमार पड़ी रहती थी। कोई खुशी से मेरी तरफ देखना भी नही चाहता था, हर कोई यही सोचता था, यह कब मर जाए। इसे भी छुट्टी मिल जाए और हमे भी। उस वक्त भी, मैं हर वक्त एक सपना देखती थी—एक बच्चे का सपना। एक छोटा-सा चेहरा, बड़े तराशे हुए नक्श, सीधा टुकर-टुकर मेरी ओर देखता हुआ। हमेशा यही स्वप्न देखने की वजह से उस बच्चे के चेहरे की पक्की पहचान हो गई थी। स्वप्न मे वह मुझसे बात भी करता था, रोज एक ही बात, और मुझे उसकी आवाज़ की पूरी पहचान हो गई थी। स्वप्न में मैं ममी के साथ कपड़े में कसीदाकारी कर रही होती तो अचानक कसीदे में से उसका चेहरा खिल उठता था।

मैं चौंककर पूछती—अरे, तू कहा था ? मैं तुझे ढूंढ़ती रही···।

—मैं तो यही था, छिपा हुआ। और मैं बच्चे को उठा लेती, उसे आंचल में छिपाकर स्तन से दूध पिलाने लगती···। कमाल उसी बच्चे का पिता है—वही चेहरा, वही नक्श, वही आवाज। मिलते ही जब मैंने कमाल से पूछा—तुम अब तक कहां थे ? वह अपने बच्चे की ही तरह बोला—मैं यही था, छिपा हुआ।

तभी कमरे में बड़ी बहन तहमीना दाखिल हुई, वह बिल्कुल भीगी थी।

—क्या कहूं, मैं तो बारिश में फस गई।

—मगर तुम गई कहां थीं ? गुल ने पूछा।

—क्या बताऊं, सिर भन्ना उठता है। यह नही पता था कि मामला यहां तक पहुंच गया है। रंडियों को भी कोई यूनियन है। नौची है कोई, रंडियों की मालिक। नौची के एजेंट हैं बाबू सिंह। और बाबू सिंह के मालिक हैं नेता कल्पनाथ। सो हुआ यह कि कश्मीरी मुहल्ला की लड़कियां, जो मेरे यहां कसीदाकारी की ट्रेनिंग ले रही है, उन चारों लडकियों को नौची के एजेंट बाबू सिंह ने घेर लिया। सजोग से मैं उनके साथ थी। हम चौक जा रहे थे। मैने जब डाटा—यह क्या बदतमीजी है, तो बाबूसिंह बेशर्मी से बोला—ये रंडिया है हमारी। ये चिकन-फिकन का दो कौडी का काम नही करेंगी। चलो इधर अपने असली धंधे पर।

मैंने कहा—शर्म करो।

वह बोला—तुम करो शर्म।

मैं पुलिस को फोन करने चली, तब वह भागा। लड़कियां बेतरह डर गई थी। अपने साथ उन्हें लेकर घर पहुंचाने गई। रास्ते में एक लड़की

फातिमा—जिसके शौहर ने तलाक दे दिया है, उसने मुझसे कहा—बीबीजी, बाबू सिंह सही कहता है।

—तो ?

—हफ्ते में दो दिन हम 'वो काम' कर लें, पांच दिन ये का'र, आपका क्या ख्याल है ?

—क्या ?

—आप जैसा कहेंगी, वैसा ही'''।

तीनों बहनें कमरे में चुप, जो चुप्पी नहीं फुसफुसाहट थी। अपाला बोली—दीदी, हमने तुम्हारी आवाज सुनी है—शर्म करो ! शर्म करो !

आठ

अपने इलाके की रंडियों की मालकिन नौची के ठस्से का क्या कहना। चांदी की गुड़गुड़ी मुंह से लगी है। सामने सिगरेट, पानदान खुला हुआ है। एक-एक ग्राहक को सिगरेट या पान, जैसा ग्राहक देखती है, उसी मुताबिक देती जाती है। नयी-नयी इस पेशे में आई हुई लड़किया डरी-डरी मगर लपक-झपक कर ग्राहकों के सामने अपने आपको पेश करती है। ग्राहक हैं कि कलाबत्तू हुए जा रहे हैं। दीदारबाजी और फिक्रेबाजी चल रही है। हंसी-मजाक हो रहा है। आवाज़ें कसी जा रही है।

नौची के इशारे पर इधर से कोई लड़की उठी, इधर मे आवाज़ आई—ज़रा संभल के। जब नौची चलती है तो लोग कह उठते हैं—यह चली है छमाछम। नौची को किसी की परवाह नहीं। वह एक-एक ग्राहक को कैसे फसाया जाए, उसके पास सारी चालें और अदायें हैं।

वह सिगरेट का कश लेकर कहती है—आंखें बिछाओ, चीज़ मिलेगी, मनचाही चीज।

वह लड़कियों को कभी सहेजती है, कभी हड़काती है, कभी फुसलाकर कहती है—ओ री, देखती नहीं नज़रो के तीर-तमंचे चल रहे है। बिना मारे लोग कलेजा निकाल के दे रहे हैं। देख री देख, वह आया है हथेली पर दिल रखे हुए। देखती नहीं मरने वाले मर रहे हैं। जो ज़िंदा हैं ठंडी सांसें भर रहे हैं।

यही कोई शाम के चार बज रहे थे। इसी माहौल में अचानक कमाल का आना हुआ। नौची ने इशारा किया। लड़किया और ग्राहक एक

तरफ हटा दिए गए। नौची ने बढ़कर कमाल को आदाब किया और अपनी गद्दी पर लाकर बिठा लिया। पान पर कत्था-चूना लगा, डली का चूरा चुटकी भर डाला, इलायची के दाने पानदान के ढकने पर कुचल कर गिलोरी बनाई और खुद उठकर कमाल को पेश की।

कमाल ने कहा—मैं पान कहां खाता हूं ?

—खाइए तो, आप ही के लायक मैंने बनाया है।

—बनाने में तो तुम एक ही हो।

—शुक्र है खुदा का।

कमाल ने पूछा—आजकल कितनी लड़कियां तुम्हारे पास हैं ?

वह बोली— हाय, इसकी भी कोई गिनती है। यह बताइए कि आपको कितनी चाहिए ? हर तरह का माल मेरे पास है। कहिए तो एलबम दिखाऊं ?

—दिखाओ।

—दिखाने के पैसे लगेंगे।

पर झट से नौची ने अपनी बात को काटते हुए कहा—अरे मैं तो मजाक कर रही थी, मैं तो आपकी ही लौंडिया हूं। मगर हां, मुझे पता है आप इस वक्त मेरे पास क्यों आए हैं। तहमीना बी के लिए सिफारिश करने आए हैं न ?

कमाल ने पूछा—यह तुम कैसे समझ गईं ?

नौची कैसे समझ गई, कैसे वह सारी बातें समझ जाती है, कमाल इसे जानता है। नौची भी जानती है कि कमाल भी सारी बातें जानता है। नौची ने कमाल से साफ-साफ कह दिया कि तहमीना बी को कसीदाकारी की ट्रेनिंग देने, कसीदाकारी के काम में लगाने के लिए जितनी लड़कियां चाहिए ले लें। मगर उनकी तादाद तय कर लें। यह नहीं कि सारी जरूरतमंद लड़कियों की भर्ती करती चली जाएं। यह भी नहीं कि लड़कियों के लिए चिकनकारी की 'प्रोडक्शन स्कीम' या गवर्नमेंट से मिलकर 'एक्सपोर्ट कारपोरेशन' खोलने में मदद करती चली जाएं। इसे न नौची बरदाश्त कर सकती है, न आमीर रज़ा।

कमाल ये सारी बातें जानता है और इन बातों की तह में जो भीतरी तह है उन्हें भी वह खूब जानता-बूझता है। मगर इस वक्त कमाल नौची के पास किसी और काम के लिए आया है।

कमाल ने एक अजब अंदाज से पूछा—क्या तुम हर आदमी को फंसा सकती हो ?

नौची ने कहा—बिल्कुल।

—तो ऐसा कर दिखाओ, मैं तुम्हें मुंह-मांगा इनाम दूंगा। तुम लाला रतनलाल और आमीर रजा इन दोनों को फंसा कर दिखाओ। बोलो तुम्हें कितना वक्त और 'एडवांस' चाहिए ?

—सिर्फ एक हफ्ते का वक्त।

—ये लो पांच सौ रुपए पेशगी।

कमाल वहां से लौटकर चुपचाप अकेले हुसैनाबाद के इलाके में घूम रहा था। हुसैनाबाद से लेकर लखनऊ चौक, अमीनाबाद, नजरबाग, गोमती के उस पार के सारे इलाके में छोटे-बड़े, गरीब-अमीर, बच्चे-बूढ़े सभी लोग उसे जानते-पहचानते थे। कोई भी उसे देखकर खुश हुए बिना नहीं रह सकता। जो भी उसे देखता, उसे लगता कि यह जरूर मुझे कुछ देगा। उसे देखकर ज़िंदगी की खुशी और ज़िंदगी का लम्हा ये दोनों याद हो आते थे।

लोग सोचते रह जाते, यह कमाल आखिर है कौन ? कहां से आया है ? इसकी असलियत क्या है ? कमाल को ताज्जुब होता है, लोग यह सवाल अब अपने आप से क्यों नहीं पूछते कि मैं कौन हूं, मैं कहां से आया, मैं का क्या होगा, मैं कहां जाएगा ? मैं हर लम्हा किधर जा रहा है ? क्या और क्यों कर रहा है ?

कमाल जब खुद अपने आप से पूछता है, वह कौन है, तो उसके सामने हमेशा गुलाब के फूलों की क्यारी खिल जाती है। जब तक वह अपाला से नहीं मिला था तब तक वह हर चीज़ में, अपने हर काम में उसी आबेहयात को तलाश रहा था जिसका नाम अपाला है।

इसके बावजूद *कमाल कौन है ? कहां से आया है ? कमाल इसके* बावजूद इस सवाल का उसी तरह पीछा किया करता है, जैसे उसके पीछे उसकी सांस, उसकी परछाईं, उसके पीछे दौड़ते हुए बच्चे, मुस्कराते, देखते हुए लोग...।

लखनऊ से सत्तर मील की दूरी पर फैजाबाद है। राम की नगरी अयोध्या पास ही है—अयोध्या के पास ही एक गांव है खलीलपट्टी। सुना जाता है कि कमाल के माता-पिता इसी गांव के थे। उसके बाबा फैजाबाद के एक साहूकार के यहां सईस थे। यह वह ज़माना था जब एक ओर शुजाउद्दौला अयोध्या को दिल्ली की टक्कर का नगर बना रहा था। यहां गुलाब बाड़ी है। अयोध्या के घाट, हिन्दुओं के बड़े-बड़े मंदिर, नवाबों की मस्जिदें। हिन्दू-मुसलमान का कोई फर्क नहीं जानता था। गढ़ी का ठाकुर और महल का नवाब, दोनों जागीरदारी के रिश्ते में एक दूसरे से बंधे थे। राम और अल्लाह में धीरे-धीरे फर्क खत्म हो रहा था और दूसरी ओर यह वह ज़माना था जब ठगों के तरह-तरह के गिरोह कार-

गुजारी कर रहे थे। उन ठगों में एक प्रकार के ठग वे थे जो 'मेघपूना' कहाते थे जो केवल बच्चों का अपहरण करते थे। मेघपूना ठग तरह-तरह के भेष और दल बना के मुसाफिरों के दल में मिल जाते थे। यह नही पता लग पाता था कि इन यात्रियों में ठग कौन है। ठगों के दल में हिन्दू मुसलमान दोनो होते थे। लेकिन दोनों अपने-अपने मजहब छोड़कर केवल मेघपूना हो जाते थे। ये लोग सन्यासी, व्यापारी, बजारे, वैद्य, हकीम या दरवेश के भेष में घूमते रहते और अपना शिकार मारते थे। पूरे अवध में इन ठगों को गाव वाले 'ढोकरकसवा' के नाम से जानते-पुकारते थे।

कमाल के बाबा की एक ऐसे ही ढोकरकसवा सरदार से लड़ाई हो गई थी, और वे मारे गये थे। कमाल के पिता अपने बचपन मे ही एक ढोकरकसवा के हाथ दिवाली के दिन उठा लिए गये थे। बाद मे वह किसी घोड़ों के सौदागर के हाथ बेच दिये गये थे। घोड़ो के सौदागरो के साथ कमाल के पिता इधर-उधर घूमते थे और बन्दूक-तलवार चलाना जानते थे। लोग बताते है कि घोड़े का वह सौदागर कानपुर से फैजाबाद के रास्ते पर जा रहा था कि रास्ते मे ठगो का एक दल जो सौदागरो के ही भेष में था, उनके साथ आकर मिल गया और ठगो के उस दल ने सरदार को बताया कि वे लोग लखनऊ के सौदागर है जो अयोध्याधाम जा रहे है। कमाल के पिता ने अपने सरदार को इशारा किया था कि ये सौदागर के भेष में ठग हैं। मगर सौदागर को उन ठगों ने इतना प्रभावित कर लिया था कि उसने और कुछ सुना ही नही। ठगों ने यह बहाना किया था कि हमें रास्ते में ठगों ने लूट लिया है। हमें रास्ते में भी खतरा हैं इसलिए हम सब एक साथ सफर करें तो बेहतर होगा। सुना है कि इस रास्ते में डाकुओं और ठगों का बहुत खतरा है। आपके साथ हथियार-बंद सिपाही हैं, हरबा हथियार है। आप हमें साथ रहकर सफर करने की इजाजत दें तो बड़ी इनायत होगी। सौदागर ने उन्हें अपने साथ ले लिया।

सारे लोग खाते-पीते, हंसी-मजाक, किस्सा-कहानी कहते हुए सफर तय कर रहे थे। फैजाबाद बीस कोस दूर रह गया था कि साधुओं का एक दल उनसे आ मिला। दल में पचास-साठ आदमी थे। उन्होने कहा, हम उदासी अखाड़े के साधु हैं। कदौड़ के गुरुद्वारे से लौट रहे है। पजाब जाना होगा। सौदागर उनसे मिलकर बहुत खुश हुआ। उन्होने कहा, बाबा, खूब साथ रहेगा। हमारे साथ ही चलो। सौदागर भी साधु-संतों की सोहबत पसंद करते थे। वह उन्हें भी साथ रखने में राजी हो गया।

शाम होते-होते यात्रियो का यह दल एक जंगल से गुजरने लगा। ठगों ने यही जगह अपने काम के लिए तय कर रखी थी। ठगों के सरदार

ने सौदागर से कहा कि नदी का किनारा है, आगे बीहड़ जंगल हैं। यहीं पड़ाव डाला जाए तो अच्छा होगा। तो वहीं पड़ाव डाल दिया गया। ठगों के सरदार ने इशारे से कहा कि 'पान लाओ' यही हमारा इशारा होगा।

खाना-पीना हुआ। कुछ लोग आराम करने लगे। सौदागर को खुश करने के लिए ठग तरह-तरह से उसकी तारीफ करने लगे। बंधे हुए संकेत से ठगों के दो-दो आदमी सौदागर के एक-एक आदमी के साथ गप्प हांकने लगे। जैसे ही एक पहर रात बीती ठगों के सरदार ने कहा, 'पान लाओ'।

यह अल्फाज कहना ही था कि व्यापारी समेत उसके साठ आदमियों के गले में रूमालें पड़ गईं। एक-एक ठग अपने-अपने शिकार की पीठ पर चढ़ गए। घुटनों में गर्दन दबोच ली और रूमाल में बंधा पैसा टेटुए में फंसाकर फांसी कस दी। दूसरे आदमी ने शिकार के हाथ-पैर जकड़ लिए। एक दो मिनट हाथ-पैर मारकर सारे शिकार ठंडे हो गए।

कमाल का पिता उन्हीं का शिकार बना। तब कमाल की उम्र कुल डढ साल की थी। इस सदमे से मां भी चल बसी। कमाल इस दुनिया में अनाथ अकेला हो गया।

उसे जब होश आया तब उसे पता चला कि वह एक भिखारी के साथ है और उसी के साथ भीख माग रहा है।

कमाल हिन्दू है या मुसलमान इसका भी उसे कोई पता नहीं। वह सिर्फ इतना जान सका कि वह एक आदमी है या इंसान है, या वह भी नहीं, इसका भी उसे कुछ पता नहीं।

वह जब आठ साल का हुआ तो उस मुसलमान भिखारी से यह कह-कर अलग हुआ कि वह उसे कमाकर खिलाएगा, भीख नहीं मागेगा।

वह एक मदारी के साथ डुगडुगी और बासुरी बजाने की मजदूरी करने लगा।

जब वह बारह साल का हुआ तब तक वह तरह-तरह के आदमियों के साथ तरह-तरह का काम करता हुआ काशी, मथुरा, दिल्ली, शिमला, अमृतसर तक चक्कर काट चुका था।

उसी उम्र में वह एक ऐसे आदमी के यहां नौकर हुआ जिसके यहां हर वक्त लिखाई-पढ़ाई का काम होता था। उसका घर किताबों से भरा पड़ा था। मालिक बड़ा रहम-दिल था। उसी ने कमाल को बुनियादी तालीम दी। अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू की किताबें वही देखने लगा। उसे उस घर में तब ऐसा लगा जैसे सब किताबों मे कमाल भी एक किताब है। एक ऐसी किताब, जिसके सफे खाली थे और कमाल को लगा कि वे सफे उसे भरने हैं।

तभी से आगे वह जब भी अपने आप से कभी सवाल करता है कि वह कौन है ? तो उसके उस खाली सफे पर एक सूरत उभर कर आती, वही अपाला की सूरत।

अपाला की आवाज भी वह सुनता—सुनिये, हमारी मुलाकात होगी। हमने एक दूसरे के लिए ही जन्म लिया है।

तुम अनाथ हो।

मैं अपाला हूं।

हम सब अपाला हैं।

कमाल जब सोलह साल का हुआ तब वह अहमदाबाद के एक लोहे के व्यापारी के यहां नौकरी करता था। एक दिन वह शाम के वक्त अपनी नौकरी पर से जिस कमरे मे वह रह रहा था, जा रहा था। रास्ते में जिस मुहल्ले को पार कर रहा था, वह मुसलमानी मुहल्ला था। उसे एकाएक लोगों की चीख-पुकार सुनाई पड़ी। लोग चिल्लाते हुए दौड़-भाग रहे थे। सामने से एक घायल आदमी हाथ मे चाकू लिए हुए उसे मारने दौड़ा। कमाल ने उसका हाथ पकडकर उसके हाथ मे चाकू छीन लिया। वह आदमी 'बचाओ बचाओ' चिल्लाता हुआ सामने की गली में मुड़ गया।

अचानक कमाल ने देखा, सामने घर के दरवाजे पर खड़ी एक औरत थर-थर कांप रही है। उसके सामने उसका घायल शौहर बेहोश पडा था।

कमाल उसके सामने जाकर खड़ा हो गया। बोला—रो रही हो तुम ? अभी से शोक मनाने लगी ? अभी तो यह जिंदा हैं। तुम्हें तो अपने नसीब पर नाज होना चाहिए। तुम्हारा शौहर इतने बड़े मकसद की खातिर जान की बाजी लगा सकता है…।

—कौन हो तुम, मुसलमान भाई हो न ?

—हां।

बेहोश शौहर को कंधे पर उठाकर कमाल अस्पताल की ओर चला गया।

यही कुछ कमाल था। यही कमाल है। वह जहां भी था, वहीं का था। वह साफ-साफ देखता, हम एक-दूसरे की जिंदगियों मे घुसे हुए जीवित हैं और लगातार एक दूसरे को मारते-जिलाते है।

बंबई से पूना की सड़क पर टैक्सी चलाते हुए कभी एक मुसाफिर ने कहा था—तुम तो कमाल के आदमी हो ?

कमाल मुस्कराता रह गया था।

—क्यों मुस्कराते हो भाई ?

—मुस्कराऊं नहीं तो और क्या कहूं, क्या करूं ? ऐसा है भाई, देखता

हूं हर आदमी कमाल है। किस तरह से अपनी मजबूरियों से इस कदर अकेला लड़ रहा है। कैसे अपनी सीमाओं को तोड़ बाहर निकल दूसरे से मिलना और बचना चाह रहा है।

तब उस मुसाफिर ने कहा था—कमाल है, तुम्हारे दिल में सबसे मुहब्बत के लिए अथाह, बेपनाह जगह है। फिर भी तुम बंधन मुक्त हो, यह कैसे मुमकिन है?

—हर आदमी कमाल की चीज़ है।

—एक सरकारी नौकरी है, ऊपर से बड़ी आमदनी है, आओ मेरे साथ, मैं ही इचार्ज हू उस महकमे का।

—क्या करूं मेहरबान, मेरे कमाल ने मुझसे कहा है, दरिया तक पहुंचने के लिए लहू का दरिया पार करना पड़ेगा। वह लहू का दरिया मैं ही हू 'सर'।

—तुम उम्र भर इसी तरह मारे-मारे फिरोगे?

—उसी से मिलने जा रहा हू।

—किससे?

अजब है, सब सवाल करके रह जाते हैं। जवाब भी नहीं सुनते। क्योंकि जवाब नहीं देते। वक्त नहीं है। यह वक्त क्या चीज़ है? और यह व्यक्ति क्या है? महज एक 'आइडिया', एक 'कल्पना', एक 'ख्याल' नहीं है? सब कुछ तो उससे बाहर है। जो सोचता है कि यह 'मैं' हूं—इस वक्त यह हू मैं। तो 'वह' क्या है, जो 'वह' है। यह जो 'मैं' है ··?

—साला, हरामी।

कितनी गालियां बकी थी कलकत्ता शहर के उस हेरिसन रोड के चायवाले ने, बाप रे बाप! सच, 'मैं' गुस्सा ही तो है। 'अभाव' के अलावा 'वह' और क्या है? बेचारा···।

सातवें दिन कमाल नौची के पास गया। उससे पूछा—रतनलाल और आमीर रज़ा दोनो को फसा लिया न?

नौची कुछ न बोली।

—अरे दोनो में से किसी एक को तो फंसाया?

—नहीं?

—क्या?

—सच, दोनों नहीं फसे।

—किसी भी तरह नहीं?

—नहीं। मगर आप उन्हें इस तरह···?

कमाल ने कहा—यही दिखाने के लिए कि तुम या दुनिया की कोई रंडी कभी किसी बिजनेसमैन को नहीं फंसा सकती। फंसते सदा गरीब और मजबूर लोग है। जैसे तुम खुद हो।

—*मैं गरीब और मजबूर नहीं हूं। नौची ने तड़पकर कहा।*

कमाल उसके सिर पर हाथ रखकर चुपचाप चला गया।

नौची उदास हो गई। न जाने क्या-क्या बातें उसके दिमाग में घूमने लगी। आमीर और रतन रस्तोगी दोनों उसकी दाईं आंख में, और अकेला कमाल बाईं आंख मे गड़ने लगे। कमाल जैसे समझा रहा हो—पैसे वाले फसते नही, गरीबों को फंसाते हैं। इस दुनिया में सबसे ज्यादा गरीब वही है जिसकी मेहनत शरीर की है।

नौची शराब पीने लगी। जैसे-जैसे पीती गई, वह चीख-चीखकर गुस्से में कहती रही—आ जा, बहुत देखे तेरे जैसे, साले, हरामी।

डर जाती हैं सारी लडकियां—जैसे पिंजरे में बंद 'चिकनमुर्गियां'। नौची की डबडबाई हुई आंखों में गुस्सा चमक रहा था। वह अपने कपडे फाडती हुई कह रही है—आओ। मैं अभी हूं। चिकनकारी करने वालियों को मैंने 'चिकन' की तरह जिबह करके शोरबा न बना डाला तो मेरा नाम *नौची नही।*

सारी रंडिया नौची की ओर निहार रही थी। वह अचानक बहुत खुश हो जाती थी। सारी लड़किया उसे आदाब करके पांच-पांच रुपये देतीं और बोलती—जल्दी कुछ करना पड़ेगा। नही तो साले, हरामी ...।

नौ

पिछले कई दिनों से कमाल आमीर रज़ा के साथ ही रह रहा था। रजा की तबीयत खराब थी। पलंग पर पड़े-पड़े रज़ा ने *कमाल से पूछा— क्या तुम* सचमुच अपाला से मुहब्बत करते हो ?

—यह मुहब्बत क्या चीज़ है ?

कमाल ने कहा—सुनो रजा साहब, इस दुनिया में तीन बेहद खूबसूरत चीजें है, औरत, फल और विचार। तुम्हारी जिन्दगी में मेरा ख्याल है कोई ऐसी औरत नही आई जिसे तुम मुहब्बत कर सको। फल तुम्हे पसंद नहीं है, तभी तुम बीमार पड़े हो। तुम्हारे पास एक ही खूबसूरत चीज है, कि तुम्हें विचार पसंद हैं, तुम सोच-विचार करते हो।

आमीर रजा बड़े गौर से कमाल की बातें सुन रहा था। कमाल

कहता जा रहा था—औरत का ही नाम मुहब्बत है, क्योंकि उसी औरत से हम सब पैदा हुए हैं, वही कुदरत है। कुदरत एक भूख है उससे भी तेज़, बड़ी कुदरती भूख है, जैसे और कुदरती भूखें होती हैं। जैसे हमारी सारी भूखों पर हमारा कोई ज़ोर नही है। हम उनसे मजबूर हैं, उनसे कई गुना बडी मजबूर भूख, मुहब्बत है। जो इस भूख को नही जान पाता, इस भूख के लिए खुराक नही जमा कर पाता, इसे शांत नही कर पाता, वही राक्षस है, 'डेविल' है, शैतान है।

धर्म की तरह मुहब्बत मानने की चीज नही है, जीने की चीज है। आपने सुना होगा, हुजूर, हर इंसान की जिन्दगी में उसका सोलहवां साल एक बड़ी भारी चीज़ है। सोलहवां साल माने, जब इंसान बच्चे से बढ़कर बालिग होता है। बालिग यानी जब वह 'एडल्ट' होता है। जब उसमें भावना, विचार और सपना, इन तीनों के मेल से जो एक नायाब चीज़ हमारे भीतर पक कर तैयार होने लगती है, उसी का नाम जवानी है और उस जवानी के रस का नाम मुहब्बत है। जो खाली विचार है, वह खुश्क होता है। और खाली भावुकता एक बहाव की तरह है, जो बहाकर ले जाती है, पैरों के नीचे ज़मीन नही रह जाती··।

कमाल जब ये बातें कर रहा था तब आमीर उसे एकटक देख रहा था। उसने देखा कि कमाल की दाईं बाह पर एक गहरे घाव का निशान है।

आमीर ने बीच मे ही टोका—यह कैसा निशान है?

—कोई खास बात नही।

—लगता है किसी ने तेज धार वाली ·।

कमाल ने कहा—आमीर तुम जानते हो, तुम्हे मैंने कितनी बार बताया है कि मैंने अब तक दुनिया में सब तरह के काम किये हैं। मैं एक गोश्त बेचने वाले चिकवा के यहा नौकर था। तब मेरी उम्र पन्द्रह साल की थी। चिकवा की उम्र करीब चालीस साल की थी। उसके कोई बाल-बच्चा नही था। उसकी बीवी निहायत खूबसूरत और जवान थी। एक दिन जब मैं बकरे के गोश्त की बोटियां बना रहा था, उसकी बीवी ने आकर दोनो हाथो से मेरे मुह को पकड़ लिया और मेरे होठों को अपने मुह में ले लिया। मैं उसके दोनों हाथों को पकड़े हुए न जाने तब कितनी देर तक देखता रहा। तभी उसका शौहर आया और गोश्त काटने के उसी *चाकू से मुझे यहां मारा।*

आमीर ने पूछा—तुम्हें बहुत चोट लगी?

—बिल्कुल नही। यहां से खून बहता जा रहा था। मेरी नज़र कसाई

की बीवी के चेहरे से हट नही रही थी। कसाई की बीवी ने मेरे घाव को कसकर पकड़ रखा था और अपने शौहर को गालियां दे रही थी। उस रात मैंने पहली बार एक सपना देखा था। बहुत तेज बारिश हो रही है। उससे भी तेज आंधी चल रही है। उस तूफान में वह पूरा कस्बा, जिसमे कसाई का घर है, उसके इतने चाकू-छुरे हैं, सब कुछ उस तूफान में बह गया है। पानी की तेज धार के ऊपर मैं और चिकवा की वह बीवी, दोनो आराम से बैठे हुए है। यह पता नही कौन किसकी गोद में है। मेरे कानों मे चिकवा के रोने की आवाज़ आ रही है। सपने में चिकवा की बीवी का चेहरा एक-के बाद एक की तरह बदलता चला गया, और जो चेहरा आखिर में हसता रह गया, वही अपाला का मुख था। उन दिनों मैं एक गांव से दूसरे गांव में घूमता रहता और अपाला का वही चेहरा ढूढ़ता। उन दिनों मैं अपनी रोजी-रोटी के लिए जो भी काम मिल जाता, करता और अपनी मजदूरी के बदले पैसे न लेकर कोई सामान लेता, जैसे अनाज, घी, कपड़ा, चमडा, बकरी, शहद, फल, लकडी, वगैरह। फिर इसे बेचता, दुगने-तिगुने दामों पर। व्यापार 'बिजनेस' में कितने फायदे हैं, मुझे इसकी ताकत और कमज़ोरी दोनो का पता चल गया। मैंने कुछ दिनों बिसाती का धंधा किया है। सुई, धागा, ऊन, सलाई, कील, काटा, तेल, साबुन, कंघी, शीशा, पाउडर, खुशबू, चोटी, चोली, काजल, टिकुली, चूड़ी, अगूठी, खिलौने, टाफी वगैरह बक्स में भरकर गांव-गांव घूमता, औरतें लड़कियां मुझे घेर लेती। उनके हाथों में, उंगलियों में, चूड़ी, अगूठी पहनाने के बहाने उन्हें छूकर मुझे फौरन पता चल जाता—कौन कैसी है, किसमे किस चीज की भूख है। हां, आमीर, यह बिल्कुल सच है, यह जो इंसान का शरीर है, इस शरीर के जितने भाग हैं, अंग हैं, सब एक-एक साज़ है, बाजा है। साज पर हाथ रखते ही कैसी आवाज़ हो जाती है। सब अंगो की भूख, फिर पूरे शरीर की भूख, और एक अनजान भूख—जिसे आत्मा की भूख कहो या पिछले जनम की—इंसान एक भयकर भूख के अलावा और क्या है ? सबसे बड़ी भूख मोहब्बत है, जिसमे शरीर का सारा अंग हसरत से छुआ जाता है। एक भूख लड़ाई है, दगे हैं, कतल है, नफरत है, जहा यही आदमी ईश्वर, अल्लाह, अली, बजरंग बली का नाम लेकर एक-दूसरे की गर्दन काटता है। इसके माने यह कि वह इस भूख में ईश्वर-अल्लाह से भी दुआ मांगता है कि वह आकर गर्दन काटने में उसकी मदद करे। मतलब आदमी मुर्गा, मुर्गी, भेड, बकरी, भैस, गाय, बैल, सुअर तक खाकर अपनी वह भूख नहीं मिटा पाता तभी तो आदमी, आदमी को मारकर खाना चाहता है। मगर खा नहीं पाता, और भूखा ही रह जाता है।

—सुनो, कमाल, सुनो !

आमीर उसे रोककर न जाने क्या सोचने लगा।

—हां, याद आया, मैंने कभी किसी का खून नहीं किया, किसी को नहीं मारा, किसी औरत के साथ कोई गुनाह नहीं किया। जिस औरत-लड़की को चाहा, उसे अपनी बीवी बनाकर ही···।

कमाल ठहाका मारकर हंस पड़ा—तभी तो आप हुजूर, इतने मुखमरे गरीब हैं। आप दुनिया में हैं, मगर दुनिया का असली पता आपको नहीं है। अपने हाथ देखिए, कितने मुलायम हैं जैसे जनखों के, जिस्म देखिए जैसे जमा हुआ मक्खन, जिस पर न कभी धूप पड़ी है, न मेहनत का गरम पसीना बहा है। हराम की कमाई···हराम के मजे। तभी इतने गरीब। आमीर हस पडा। उठकर सामने कुर्सी पर बैठ गया। जैसे उसका सारा बुखार उतर गया। वह बोला—यार कमाल, तुम तो मुझसे ज्यादा जानते हो, कमाई हराम की ही होती है। हलाल की सिर्फ मौत होती है।

—कोई और बात करो, 'चेंज द सब्जेक्ट'।

—यार तुम इतने 'सीरियस' हो गये ?

कमाल ने कहा—जब मैं हराम और हलाल, देवता-राक्षस, खुदा और शैतान की बात सोचता हूं तो मेरा जी होता है, जो कुछ भी मेरे आसपास है, सबसे अपना सिर टकरा दूं—पर क्या फायदा, उल्टे पुलिस और डाक्टर के चक्कर मे पडना होगा, होना-हवाना कुछ नहीं।

—यार कमाल। बहुत भूख लगती है। मेरी भूख जाती ही नहीं।

कमाल उठकर कमरे मे घूमने लगा। गाने लगा। गा-गाकर नाचने लगा—

एक भूख से छुट्टी पाने की कोशिश करो,
दूसरी भूख आ दबाती है।
एक औरत के पास जाओ
दूसरी रंडी आ सताती है।
एक माल बेचो, कमाई करो कुछ
वही मजबूरी हो जाती है।
जाति, कौम, मुल्क, मजहब के लिए कुरबानी,
सब गुलामी हो जाती है···।

आमीर ने कमाल को रोक कर पूछा—अपनी महबूबा से मिलने कब जाओगे ?

कमाल ने पूछा—आमीर, तुम्हारी उमर क्या है ?

—चालीस साल।
—तब तो तुम वैसे ही बच्चे हो।
—क्या ?
—बचपना है तभी तो इतनी बीवियां करनी पड़ी ।
—क्या बकते हो ?
—मेरे मालिक, नाराज़ मत हो।
—तुम्हें मुझ पर यकीन नहीं ?
—मेरे मालिक, नाराज़ मत होइए। मुझे किसी चीज़ में यकीन नहीं। अगर मुझे किसी में यकीन है तो मुझे खुदा, ईश्वर, गॉड में यकीन करना पड़ेगा, फिर तो मुझे शैतान में भी यकीन करना होगा। यही तो सारा चक्कर है। एक चीज़ में यकीन करने चलो तो दुनिया की सारी चीज़ें गड्ड-मड्ड होने लगती हैं। सब कुछ उलट-पुलट जाता है।

यह कहते हुए कमाल अपने नंगे सीने को दिखाते हुए कुछ कहने चला था कि वह एकदम चुप हो गया। आमीर रज़ा की आंखों में देखते हुए बोला—आदमी से बढ़ कर बेरहम और कोई नहीं है। तुम बड़े घर में पैदा हुए। आराम की जिन्दगी मिली। बाप की दौलत से ऐश किए। अपने काम पर आराम से लग गए। तुम्हें क्या पता आदमी क्या बला है। अगर तुम उसे इज्ज़त देने चलो तो उलटे यह तुम्हारी बेइज्ज़ती करेगा। अगर तुम उसे डराकर रखोगे, तो वह तुम्हारी इज्ज़त करेगा, क्योंकि वह डरेगा। अगर तुम उसके साथ मेहरबानी करोगे तो वह मौका पाते ही तुम्हारी आंखें निकाल लेगा। उसे अपने से जितना ही दूर रखोगे उतना ही तुम्हारी बड़ाई करेगा। बड़ाई के तमाम किस्से बनाएगा। अगर तुम यह कहोगे कि सब आदमी बराबर हैं, सबके बराबर हक हैं, तो यह कहने और मानने वाला भूखों मरेगा, और वे लोग जिन्हें बराबरी का दर्जा देने चले थे, वे सब कुछ लूटकर चले जाएंगे। यह पूरी दुनिया सिर्फ भूख और भय से बनी हुई है।

आमीर रज़ा जैसे चिल्ला पड़ा—तुम्हें किसी चीज़ में यकीन नहीं ?

कमाल ने मुस्कराते हुए कहा—कितनी बार कहूं मुझे किसी चीज़ में या किसी पर कोई यकीन या विश्वास नहीं। मुझे यकीन है सिर्फ अपने आप पर—कमाल पर।

आमीर ने बड़े ताज्जुब से पूछा—तुम्हें अपाला में भी यकीन नहीं है ?

कमाल ठहाका मार कर हंस पड़ा।

बोला—अरे यार, कमाल ही तो अपाला है, अपाला ही तो कमाल है।

मगर इसके मायने यह नही कि कमाल और लोगों से किसी तरह से भी बेहतर है, कतई नही, जैसे सब हैं, वैसे ही कमाल है। इसके अलावा कमाल और हो भी कैसे सकता है ? मुझे सिर्फ कमाल पर इसीलिए यकीन है कि मैं सिर्फ कमाल को ही जानता हू, कमाल ही मेरे कब्जे में है। कमाल के लिए और लोग महज कल्पना हैं। जैसे और लोग मेरे लिए कल्पना हैं। मेरे यार, जब मैं तुम्हें इस तरह कहता हू तो इसका मतलब यह होता है कि मैं अपने आपसे ही कह रहा हू। तो मेरे यार, सुनो, जिस दिन मैं मर जाऊंगा, मेरे लिए ये सारी दुनिया मर जाएगी, कमाल की दुनिया।

आमीर रज़ा का चेहरा तमतमा आया—तुम जैसा घमंडी, मतलबी, खुदगर्ज और कौन होगा ?

कमाल ने कहा—और कर ही क्या सकता हू, आदमी जैसा मजबूर, कमजोर और कौन हो सकता है ? इसका सबूत कमाल ही तो है, और क्या हो सकता है ?

कमाल की ये बातें आमीर रज़ा को इस तरह लगीं, जैसे किसी ने उसके नंगे बदन पर चाकू मारे हों। आमीर मन-ही-मन कमाल की हिम्मत की दाद देने लगा था। इससे बडा ताकतवर आदमी उसने कही नही देखा था। ऐसा आदमी, जो आदमियो को इतने नज़दीक से जानता हुआ भी उन्ही के साथ, उन्ही के बीच रहने और काम करने मे जिसे इतनी खुशी है। जो यह जानते हुए भी कि उसके आस-पास के सारे लोग क्या हैं, ऐसे क्यों हैं, अपने दु:ख-सुख के रिश्तों में उन सबको बांधकर जीना चाह रहा है।

शाम हो आई थी। गोमती के उस पार इस न्यू हैदराबाद कालोनी में अंधेरा जल्दी आ जाता है। उसी वक्त वहां अकेली कायनात आई। दोनों को इस तरह चुप और खुश देखकर उसने कहा—क्या बात है ?

दोनों उसे देखते रह गए।

आमीर ने कहा—अब पूछती हो क्या बात है। अब जो पूछना है, कमाल से ही पूछो। यह जितना खुद नंगा है उसी तरह सबको नंगा करके देखता है। इस बदमाश को किसी तरह के पर्दे मे यकीन नही है।

कमाल हंसकर बोला—मालिक, आप बिल्कुल ठीक बोल गए। आदमी सिर्फ पर्दा है और कुछ नही।

कायनात मुस्कराती हुई बोली—चाय पिएंगे ?

आमीर ने कहा—देखो मेरी तबीयत अब बिल्कुल ठीक हो गई। मेरा बुखार नार्मल से भी नीचे चला गया।

कमाल ने कहा—मतलब अब आप शादी करेंगे ?

—अब मैं शादी ही नही, जितनी शादियां अब तक की हैं अपनी उन

सारी बीवियों को तलाक देकर आज़ाद कर दूंगा।

कायनात ने प्याली उठाई कि चमचा नीचे गिर गया। कमाल ने कहा—अजीब बात है, जो खुद गुलाम है वह कैसे आज़ादी की बातें करता है? अपनी ही आजादी नहीं, बल्कि वह दूसरों को भी आज़ाद करने की बकवास करता है। आमीर हम बेरहम आदमी ही नहीं, अपनी बेरहमी को छुपाने वाले चोर और उचक्के भी हैं।

कायनात किचन में जाकर चाय बनाने लगी। आमीर ने जो बूढ़ा खानसामा रख छोड़ा था, वह आंगन में बैठा खांस रहा था और बलगम थूक रहा था। उसे सांस लेने में बेतरह तकलीफ हो रही थी। कमाल दौड़ कर उसके पास गया और उसकी पीठ सहलाने लगा। बूढ़े का खांसना रुक गया।

कमाल को जालंधर की वह बेवा जवान औरत याद आई जो आधी रात से लेकर सुबह तक इसलिए खांसती रहती थी कि लोग उससे पूछें कि तुम्हें क्या हुआ है? तब वह लोगों को हाथ मटका-मटका कर बताती कि उसे दमा की शिकायत है। वह किस कदर अपने आप और दूसरों को धोखा दे रही थी कि लोग उस पर शक न करने लगें कि दरअसल वह चाहती क्या है। वह जवान औरत थी। उसे जवान मर्द चाहिए था। मगर वह हिन्दुस्तान की रहने वाली थी। जहां सब कुछ डर ही डर है, वहां सोने और थूकने के अलावा इंसान और कर ही क्या सकता है?

कायनात के हाथ से चाय का प्याला लेकर कमाल ने खानसामा को देते हुए कहा—बाबा, बरांडी की यह बोतल लो, सुबह, दोपहर, शाम थोड़ी-थोड़ी पीते रहो। मुर्गा बनाकर पहले खुद खाओ फिर अपने मालिक को दो। मालिक पूछे कि खाना खा लिया तो साफ झूठ बोलो, हुजूर, आपके बाद।

खानसामा मुस्करा पड़ा। जो चेहरा अभी खांसी और बलगम से बुझ गया था, वह चमक गया। खानसामा ने बरांडी की बोतल अपनी चादर में छिपाते हुए कहा—खुदा तुम्हें बड़ी उम्र दे।

कमाल सोचने लगा, जो खुद मर रहा है वह दूसरों को जिंदगी की दुआ दे रहा है।

कायनात, आमीर और कमाल के साथ ड्राइंगरूम में बैठी हुई चाय पी रही थी, चाय पीकर आमीर बाथरूम में चला गया।

कमाल ने पूछा—कैसे आईं?

वह बोली—इनकी तबीयत खराब थी सो देखने चली आई।

कमाल ने कहा—इनकी तबीयत बिल्कुल खराब नहीं थी। हम दो

दिनों से मुझसे बकवास कर रहा था। दरअसल इसे तुम्हारी ज़रूरत है। मगर डर के मारे यह भी नही कह पाता कि उसे किस चीज़की भूख है। तुम ऐसा करना कि आज रात यहीं रह जाना। जो भी रुपये आमीर से ले सको, उसे समेटकर सुबह इसे गोमती के किनारे हवाखोरी के बहाने घुमा देना।

कमाल की बातो पर कायनात मुह छिपाकर हंसी।

कमाल बोला—लडकियो को अपनी जवानी का पूरा इस्तेमाल करना नही आता। और तुम जैसी खूबसूरत लड़कियां—वाह! वाह! तुम्हे तो चाहिए सारी दुनिया को उल्लू बनाओ, मगर खुद बेवकूफ बन जाती हो। अपनी कीमत ही नही समझतीं। यह जो कुदरत है न, 'नेचर', प्रकृति जिसका नाम है, यही सबको बेवकूफ बनाती है। 'नेचर' ही भूख है। पर भूख के इस गहरे तालाब मे मछलियां भी हैं। जो हसीना अपने नैनो के तीर से उनका शिकार करे, वही समझदार है। मगर खूबसूरती, जवानी का समझदारी से कोई वास्ता ही नही, यही तो साली कुदरत है।

कायनात खिलखिलाकर हंसती रही। कमाल ने कहा—यार, तू हंसती है तो चारो ओर फूल खिल जाते हैं, हाय!

वह रूठकर बोली—जाओ, जाओ, तुम तो वहां गुलफिशा भी··· सुनो, तुम्हें वह मुई नौची ढूढ रही थी।

—हां, नौची के साथ मैं सोया हूं, यही कह रही थी न?

—हाय अल्लाह, कैसी बातें करते हो, शर्म नहीं आती?

—शर्म कहां 'नेचर' मे है?

—इंसान मे तो है।

—इसान, आदमी, औरत ··यह क्या है? जानती हो?

दस

करीब ग्यारह बजे तहमीना अमीनाबाद रज़ा ट्रेडिंग कारपोरेशन, जिसे लोग रज़ा कंपनी कहते हैं, वहां पहुंची। गली अनारकली से अमीनाबाद रिक्शे से पहुचने मे उसे करीब सवा घंटा लगा था। रास्ते में उसे दो बार रिक्शा बदलना पड़ा था। पहला रिक्शा वाला इतना कमजोर था कि हुसैनाबाद की सडक पर आते-आते बेहोश होकर गिर पडा था। कोई उसकी मदद के लिए नही आया था। उसे जब तक होश नही आ गया, तब तक तहमीना उसके पास खडी रह गई थी। आस-पास से गुज़रते हुए लोग छोटा-

कशी करते हुए निकले जा रहे थे। सबकी नजर केवल तहमीना पर पड़ती। कोई भी उस गरीब बेहोश पड़े रिक्शे वाले को नहीं देखता था।

दूसरे रिक्शे पर चढ़कर जब वह अमीनाबाद के लिए चली थी तो रास्ते भर यही सोच रही थी कि क्या लोगों के बीच अब कोई रिश्ता नहीं है क्या? रिश्ते की बात अगर हम एक मिनट के लिए छोड़ भी दें, यह क्या वजह है कि हम एक-दूसरे को इतना गलत समझते हैं। सबसे ताज्जुब की बात यह है कि लोग अपने दु:ख-दर्द को बेतरह छिपाते और दबाते चले जा रहे हैं।

रज़ा कंपनी का दफ्तर खुला तो था मगर वहा न आमीर रजा का पता था, न कमाल का। तहमीना सीढ़ियों पर से वापस उतरी। तभी वहां एक जटाजूटधारी साधु सामने खड़ा मिला।

—बचवा, तुम किसी को खोज रही मालूम होती हो।

—जी हां, आप कौन हैं?

—बचवा, मैं तिरकालदर्शी हूं। जिसे तुम ढूढ रही हो वह देखो यहां मौजूद है। तुम्हें, हम सबको वह बुला रहा है। यह कहकर उस साधु ने उंगली उठाकर सामने इमारत पर बनी कृष्ण की मूर्ति की ओर इशारा किया।

तहमीना ने कहा—जिसे मैं ढूंढ़ रही हूं वह वहां नहीं है।

—बचवा, उसे देखने के लिए वह तीसरी आख चाहिए, जिसे अफसोस कि तुम हिन्दुस्तानी खो बैठे।

तहमीना तेजी से सड़क पर बढ़ गई। अमीनाबाद के चौराहे पर आकर उसने अपने माथे पर हाथ फेरा। उसे महसूस हुआ जैसे सड़क पर चलने वाले सब इंसानों के माथे पर जहां तीसरी आख थी वहां अब एक गहरा घाव है। वही घाव आंख बनकर उसे घूर रही है।

वह दौड़कर सिटी बस में सवार हो गई। यू० पी० एक्सपोर्ट कारपोरेशन पहुंची। वहां चिकन की ट्रेनिंग हो रही थी और बहुत सारी लड़कियां चिकन के काम में लगी हुई थीं।

—मैं तहमीना हूं—इन्क्वायरी काउंटर पर जाकर उसने कहा। फिर दफ्तर में घुसकर कई लोगों से बात करनी चाही, पर सभी लोग यही कहकर चुप हो जाते कि मुझे नहीं मालूम, वहां जाइए।

तहमीना का दिल उदास हो गया। चिकन का यह सारा काम और तहमीना का यह नाम कितना बेवजह है। किसी को कोई दिलचस्पी नहीं?

दफ्तर के डायरेक्टर ने उसे बड़े संदेह की नजर से देखा। मानो वह लड़कियों को भगाने आई है। वह उलटे पांव फिर सड़क पर आ गई। पुरानी कोई इमारत थी उसके पास बस स्टैण्ड था। इमारत के एक कोने में लोग बैठे ताश खेल रहे थे। दूसरी ओर गरीब मजदूर बीमार कुत्तों की तरह सोए पड़े थे। वह पैदल सड़क पर चलने लगी। सामने उसे कमाल आता दिखा।

—अरे, हैलो, आप यहां कैसे?

—आप कहा से आ रहे हैं?

—मैं स्टेशन पर सामान की बिल्टी कराने गया था। आप इधर कहा?

—तहमीना बिल्कुल चुप थी। क्या पता, इंसान दरअसल क्या चाहता है?

—मैं आपको ही ढूढ़ने निकली थी। रजा कंपनी के दफ्तर में भी गई थी। आमीर रजा भी वहां नहीं हैं।

कमाल ने बताया कि आमीर बंबई गए हैं, अपने बिजनेस के सिलसिले में। काफी माल का एक्सपोर्ट विदेशी बाजार में करना है। तहमीना ने कहा—आप दो दिनों से गुलफिशां क्यों नहीं आए? अपाला आपको कितना याद करती है। आपको पता है, कल अपाला ने मुझसे कहा—"*कमाल मेरे साथ है और मैं कमाल के साथ हूं। ये जो साथ है यह एक* मजबूत रस्सी है। जिसको मैं मजबूती से थामे वहां पहुंच जाती हूं जहां वे रहते हैं—गलियों मे, बाजारों में, धूप में, अंधेरी रात में, पूर्णमासी में, चलते हुए, सफर करते हुए"'।

अक्तूबर के बहुत अच्छे दिन थे। सड़क पर इक्के-दुक्के लोगों का आना-जाना हो रहा था। दोनों चुपचाप सड़क के किनारे-किनारे चल रहे थे। खामोशी की लहरें बोसीदा दीवारों से टकराती रहीं। तहमीना ने कहा—चलो, रिक्शा कर लेते हैं।

—कहा जाना है?

—आप से कुछ बहुत जरूरी बात करनी है।

—तो आओ, यहीं घास पर बैठ जाएं।

दोनों एक मकबरे के पास बने एक छोटे से पार्क की घास पर बैठ गए।

तहमीना बोली—चिकन के माल के बाजार का मालिक लाला रतनलाल रस्तोगी बना हुआ है। इसकी साठगाठ सरकार से है। हमसे बहुत सस्ते दामो पर माल लेने के लिए तरह-तरह के तरीके लगाए जाते हैं।

और हमारा ही माल दुगुने-तिगुने दामों पर बाजार में बेचा जाता है। बाजार का यह चक्कर समझ मे नहीं आता। मजदूर लड़कियों को चार-पांच रुपये से ज्यादा मजदूरी दे पाना इसलिए मुश्किल है कि हमारे माल की कीमत बाजार में कम आंकी जाती है। महंगा माल का बहाना लगाकर हमारी चीज़ ये लोग नही खरीदते, न सरकार को ही खरीदने देते हैं। किसी का ख्याल न कारीगरी पर जाता है न माल की क्वालिटी पर। काफी नुकसान हो रहा है। माल घर में पड़ा है। लड़कियों को पूरी मजदूरी नही दे पा रही हू। सोचा, आपसे राय-मशविरा कर'''।

कमाल घास के एक टुकड़े को अपने हाथ में लेकर बोला—आपके बाप-दादा नवाबी जमाने से लेकर आज तक इस जमाने मे भी व्यापार और दस्तकारी के कायदे-कानून ही ऐसे बनाए गये हैं, जिससे एक बड़े भारी कारोबार पर सिर्फ दो-एक आदमियों का पूरा कब्जा हो जाता है। बाकी तमाम लोगों के लिए उन्ही की मजदूरी या नौकरी करने के सिवाय और कोई रास्ता नही रहता। मजदूरों को सिर्फ उतनी ही मजदूरी मिलती रहे, जिससे वे मरें नहीं, मजबूर होकर काम करते रहें। यही खेल मालिकों का है, सारा फ़ायदा वही एक-दो लोग उठाते रहें। इसके लिए तरह-तरह के हथकंडे इस्तेमाल किये जाते है। इस तरह से कारोबार में जो असली फायदा होता है, वह उन्ही दो एक लोगों को मिलता है, जिनके हाथ मे बाजार है। इससे जो फायदे होते हैं उससे दूसरे नये-नये कारोबार खोले जाते हैं और पैदावार बढ़ाई जाती है। इसका नतीजा यह होता है कि माल जरूरत से ज्यादा बनने लगता है और बाजार में मंदी दिखाई जाती है। साथ ही जब मजदूर देखते है कि हमारी मेहनत से दूसरे लोग तो मालदार बनते चले जा रहे है और हम जैसी की तैसी बुरी हालत में पड़े हैं, तो उनमे बेचैनी फैलने लगती है। मंदी, बेकारी, गरीबी और बेचैनी यही वे चीजें हैं, जिनके ऊपर हमारी ये सारी अमीरी-गरीबी खडी हुई है।

यह कहते-कहते कमाल चुप हो गया। घास के उस टुकड़े को अपने दांतो तले दबाकर बोला—आप सोचती होंगी, मैं यह क्या बकवास करने लगा। मगर जब आप इस कारोबार, मेहनत-मजदूरी और बाजार के मोल-भाव की दुनिया में आ गई है तो ऐसा मुनासिब समझता हू कि आप इस दुनिया के बारे में, कम-से-कम इसकी बुनियादी बातें जरूर जान लें।

तहमीना कमाल की बड़े गौर से सुन रही थी। कमाल ने बड़े अदब से पूछा—मेरा ख्याल है आप इस दुनिया में आई है मगर आप इस दुनिया को जानती नहीं।

—जी हां, मजबूरी चाहे जो न करा ले।

—जी हा, हमारे कामों के पीछे हमारी मजबूरियां ही हैं, तभी तो हमारे कामो के नतीजे भी मजबूरिया ही है।

कमाल काफी देर तक तरह-तरह की नजीरें देकर तहमीना को समझाता रहा—क्या होती है मजदूरी, बिजनेस, मेहनत, पूजी, माल और बाजार।

तहमीना को लग रहा था जैसे वह पहली बार एक ऐसी नई दुनिया को जान रही है, जिसमे वह थी, मगर उसके बारे में उसे कुछ भी पता न था।

तहमीना के मुह से निकला—तो क्या मैं भी मजदूर हूं ?

जी हां, आप बिल्कुल एक मजदूर है।

तहमीना ने घबडाकर कहा—या खुदा, अगर मेरी अम्मी ने यह सुना तो उन पर क्या गुजरेगी ?

कमाल ने एक लबी सांस लेते हुए पास के एक मकबरे को देखा।

तहमीना ने कहा—यह मकबरा, मेरे परबाबा गाजीउद्दीन हैदर का है।

दोनो उठकर उस मकबरे के पास गए। चारो ओर घूम-घूमकर उसे देखने लगे। कमाल ने कहा—देखो, इसमें कितने मजदूरों की कितनी मेहनत लगी हुई है। यह मकबरा आज किसी काम का नही है। जिसका यह मकबरा है उसी खानदान की बेटियां आज मजदूरी कर रही हैं। मगर उनकी मजदूरी का असली फायदा कोई और उठा रहा है। देखो न, एक मेहनत का सबूत यह मकबरा है। और दूसरी मेहनत के सबूत हम लोग हैं। पहले जमाने मे मालिक, मेहनत और मजदूरी सब आमने-सामने था। अब कुछ भी आमने-सामने नही है। सब कुछ बाजार में है। बाजार क्या जगह है, क्या चीज है, इसे आप जानती है ?

तहमीना चुप थी।

कमाल बताता जा रहा था—और यह आजादी के बाद का बाजार, वाह वाह !

तहमीना ने बात काटकर पूछा—हम मजदूर क्यों हैं, कारीगर क्यों नही ?

कमाल बोला—हम आज बाजार नहीं, 'मार्केट' मे हैं। मार्केट में 'लेबर' होता है 'वर्क' नहीं। बच्चे का अब जनना नही कहते। 'लेबरपेन' कहते हैं। देखिए न, हम सब 'लेबर' मजदूर हो गए कि नही ?…सुनिये …जिस दिन काम से आदमी को अलग किया, उसी दिन वह आदमी से

मजदूर हो गया। आदमी को मजदूर बनाया मशीन ने'''। मशीन को बनाया मुनाफा वाले रुपये ने ''। आदमी अपने काम के साथ तब तक आदमी था, जब काम 'काम' था—काम माने कायदा, 'डिसिप्लिन' संतोष।

कमाल की आखों से झर-झर आसू बह पड़े।

कमाल ने हंसते हुए कहा—मैं कुछ दिन एक बहुरूपिये के साथ था। वह कहता—रोओ। मेरी आखों से आसू झरने लगते। यह वही आदत है।

तहमीना और गंभीर हो गई।

—कुछ बोलिए।

—'लेबर' और 'वर्क'।

तहमीना के यही दो अल्फाज जैसे उसके चेहरे पर उग आए।

कमाल ने कहा—आमीर को आने दो। उससे कहकर आपका सारा सामान उसी के हाथ बिकवा दूगा। मगर आपको किसी से यह जाहिर नहीं करना है कि आप सीधे रजा कंपनी को अपना माल बेचती हैं।

तहमीना ताज्जुब से बोली—इसे भी छिपाना पड़ेगा? इसमें ऐसी क्या बात है?

कमाल ने कहा—यही तो बात है, लाला रतनलाल रस्तोगी और आमीर रज़ा दोनों की एक ही जात बिरादरी है।

दोनों वहा से उठकर अमीनाबाद की ओर चले गए।

कमाल ने देखा था गुलफिशां की वह दुनिया भी अपनी तरह की एक दुनिया थी। हालाकि अब नवाबी नहीं थी, मगर मिटी हुई नवाबी के तमाम निशान वहां मौजूद थे। गुलफिशां के अंदर जहा-जहां उसकी निगाह गई, वहां जैसे उसके अदर झांककर देखता रहा। उसकी नजर जब अम्मी आयशा बेगम पर पड़ती तो उसे लगता कि वह चेहरा कितना उदास है। फिर भी उस उदासी में से कैसी हमदर्दी, शराफत और समझदारी उनके चेहरे से बरस रही थी।

जाहिर था कि बेचारी अम्मी, कमाल और अपाला के उस रिश्ते को पूरी तरह नहीं समझ पा रही थी, जहाँ बाकायदा निकाह के बिना शौहर की कल्पना नहीं हो सकती थी।

उस घर में तहमीना, अपाला और गुलनार, ये तीनों लड़कियां बिल्कुल तीन तरह की थी। तहमीना ने बहुत दुनिया देखी थी। तीन शादियां की थी और तीनों को तलाक देकर फिर वहीं लौटकर आई थी।

मजदूर हो गया। आदमी को मजदूर बनाया मशीन ने'''। मशीन को बनाया मुनाफा वाले रुपये ने ''। आदमी अपने काम के साथ तब तक आदमी था, जब काम 'काम' था—काम माने कायदा, 'डिसिप्लिन' संतोष।

कमाल की आखों से झर-झर आसू बह पड़े।

कमाल ने हसते हुए कहा—मैं कुछ दिन एक बहुरूपिये के साथ था। वह कहता—रोओ। मेरी आखों से आसू झरने लगते। यह वही आदत है।

तहमीना और गंभीर हो गई।

—कुछ बोलिए।

—'लेबर' और 'वर्क'।

तहमीना के यही दो अल्फाज जैसे उसके चेहरे पर उग आए।

कमाल ने कहा—आमीर को आने दो। उससे कहकर आपका सारा सामान उसी के हाथ बिकवा दूगा। मगर आपको किसी से यह जाहिर नही करना है कि आप सीधे रज़ा कंपनी को अपना माल बेचती हैं।

तहमीना ताज्जुब से बोली—इसे भी छिपाना पड़ेगा? इसमें ऐसी क्या बात है?

कमाल ने कहा—यही तो बात है, लाला रतनलाल रस्तोगी और आमीर रज़ा दोनों की एक ही जात बिरादरी है।

दोनों वहां से उठकर अमीनाबाद की ओर चले गए।

कमाल ने देखा था गुलफिशां की वह दुनिया भी अपनी तरह की एक दुनिया थी। हालाकि अब नवाबी नही थी, मगर मिटी हुई नवाबी के तमाम निशान वहां मौजूद थे। गुलफिशा के अंदर जहा-जहा उसकी निगाह गई, वहां जैसे उसके अदर झांककर देखता रहा। उसकी नजर जब अम्मी आयशा बेगम पर पड़ती तो उसे लगता कि वह चेहरा कितना उदास है। फिर भी उस उदासी में से कैसी हमदर्दी, शराफत और समझदारी उनके चेहरे से बरस रही थी।

जाहिर था कि बेचारी अम्मी, कमाल और अपाला के उस रिश्ते को पूरी तरह नहीं समझ पा रही थी, जहाँ बाकायदा निकाह के बिना शौहर की कल्पना नही हो सकती थी।

उस घर मे तहमीना, अपाला और गुलनार, ये तीनों लड़किया बिल्कुल तीन तरह की थी। तहमीना ने बहुत दुनिया देखी थी। तीन शादिया की थी और तीनों को तलाक देकर फिर वही लौटकर आई थी।

कमाल ने आमीर से यह कह दिया कि तुम एक निहायत गरीब आदमी हो।

आमीर तडपकर बोला—मैं और गरीब ? मैं तुम जैसे सैकडों आदमियो को नौकर रख सकता हू।

इस पर कमाल तालिया बजा-बजाकर गाने लगा :

गरीब वह है जो रोज नहाता नही
नहाता भी है तो गदे बर्तनो के पानी से।
गरीब वह है जो हंसना नही जानता
हंसता भी है तो जैसे रोता है।
गरीब वह है जो दूसरो को कर्जदार बनाता है
और खुद कर्ज की जिन्दगी जीता है।
गरीब वह है जो हाथ धोकर नही खाता
और खाकर ठीक से मुह-हाथ नही धोता।
गरीब वह है जो दूसरो को छुट्टिया मनाने जाते चुपचाप देखता है .
और खुद इतवार को भी घर से बाहर नही जाता।
जो अपना बिस्तर खुद नही बिछाता और जिसे
साफ गदे कपड़े मे फर्क नजर नही आता।
गरीब वह है जिसका पेट, गला सदा खराब रहता है
और अक्सर बीमार पड जाता है।
गरीब वह है जो काम नही करता सिर्फ कमाता है
जो दूसरे की कमाई पर जीना चाहता है।
जो मुहब्बत नहीं कर सकता सिर्फ हुक्म चलाता है
जो पैसा बटोरता है उसे खर्च करना नही जानता
जो दूसरो की मजबूरियो से फायदा उठाता है, वही गरीब है।

आमीर ने मारे गुस्से के अपनी आंखें बंद कर ली थी।

कमाल ने उसके मुह को पकड़कर कहा—हुजूर क्या आप कमाल से खफा हैं ? अगर मुझसे कोई गुस्ताखी हुई है तो उसके लिए मैं आपसे माफी मांगता हूं।

आमीर खुश हो गया।

बोला—अब तुम यहां का काम-धाम देखो। मैं पन्द्रह दिनो के लिए लखनऊ से बाहर जाता हूं।

—क्या मैं पूछ सकता हू, हुजूर कहा तशरीफ ले जा रहे है ?

—यह कोई बताने की बात है ? मैं तुम्हारी तरह बेवकूफ नही हूं कि एक जवान लड़की के साथ पहाड़ों और जंगलो मे पागलों की तरह घूमता रहूं। मैं ऐश करने जा रहा हूं बंबई। तुम यहां का काम देखना।

कमाल बोला—तहमीना के यहां तैयार सारा चिकनकारी का माल अगर रज़ा ट्रेडिंग कंपनी खरीद ले तो तुम्हें कोई ऐतराज है ?

—मुझसे क्यो पूछ रहे हो ? तुम खरीदना चाहते हो तो खरीद लो।

कमाल ने कहा—इस शर्त पर कि तुम इस बात को किसी से नहीं बताओगे।

तेरह

कमाल ने अगले दिन दफ्तर जाते ही वह इतजाम कर दिया कि तहमीना *के यहां तैयार सारा चिकनकारी का माल सीधे रज़ा ट्रेडिंग कपनी मे आ* जाए। इसके लिए कमाल को बड़ी होशियारी बरतनी पडी। साथ ही काफी दौड-धूप और जद्दोजेहद। गुलफिशा मे रहकर अम्मी आयशा बेगम की दवा-सेवा करते हुए कमाल ने तहमीना के उस काम को एक रजिस्टर्ड सस्था का रूप दिया। नाम रखा गया 'निराश्रित महिला कर्मशाला'।

गुलफिशा मे इस तरह निराश्रित महिला कर्मशाला बने, इसकी अलीरज़ा ने खिलाफत की। उन्होंने पहले सारी औरतों और लड़कियों को यह समझाया कि निराश्रित का मतलब क्या होता है। इसका मतलब उन्होंने यह समझाया कि यह बड़ा गंदा लफ्ज़ है। इसका मतलब है—वे औरतें जो हर तरह से बेसहारा हैं। जो छोडी और निकाली हुई है, और जिनका कोई नही है। अलीरज़ा ने सबसे पहले आयशा बेगम को उनके भीतर दबे हुए नवाबी शान-शौकत के एहसास को भड़काना चाहा। मगर कमाल के समझाने पर आयशा बेगम मान गई। गुलफिशां की तीनो बहनों, खासकर तहमीना ने अलीरजा को समझाने की बहुत कोशिश की। मगर वह इस मौके का कमाल के खिलाफ फायदा उठाना चाहते थे। इसलिए वह उन सारे मुहल्लो और घरों में गए जहा से सारी पर्दानशी लडकियां और औरतें गुलफिशा मे चिकनकारी का काम सीखने और करने आती थी। वहां जाकर अलीरज़ा ने निराश्रित का मतलब समझाकर उन्हें तोड़ने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि मुसलमान औरत को निराश्रित मानना मजहब के खिलाफ है।

कुछ घरों में तो अलीरज़ा साहब की दाल गल गई। मगर गुलफिज़ा की तीनों बहनों और ज्यादातर लड़कियों ने तमाम खिलाफतों के बावजूद कबूल कर लिया कि मुसलमान औरत बुनियादी तौर पर बेसहारा है। वह न किसी की मां है, न बहन है।

बातें इस तरह बढ़ती चली गईं। बात शुरू हुई थी निराश्रित महिला कर्मशाला से, मगर बात फैलती चली गई—शरियत से तलाक तक, तलाक से फुकहा तक। इसके लिए अलीरज़ा और तहमीना दोनों की तरफ से कुरान, हदीस, अहल हदीस, बुखारी शरीफ, बेहकी, तिर्मिज़ी, शारानी नसई की हिदायतें सामने रखी गईं और लोग अपने हिसाब से उनके मतलब लगाते रहे।

कमाल इस झगड़े में चुपचाप नहीं बैठा था। वह अपाला, तहमीना और गुल को दिखाता रहा कि देखो, किस तरह किताबों का इस्तेमाल किया जाता है, आदमी को गरीब और पिछड़ा रखने के लिए। खासकर औरतें हमेशा मजबूर बनी रहें। उन्हें साप-बिच्छू वगैरह बताकर उनकी खुदी को खत्म करने की कैसी-कैसी कोशिशें यहां की गई हैं! कभी औरत को मर्द ने अपनी लौंडी समझ लिया और उसके साथ मनमाना सलूक करना शुरू कर दिया। और उसे बेवकूफ बनाए रखने के लिए देवी, महबूबा, मलिका, बेगम बनाकर बिठा लिया। औरत को कभी भी औरत नहीं समझा गया और जाहिर है, उसे सही मुकाम नहीं दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि हमारे मुल्क की लाखों औरतें या तो बिना ब्याही रह जाती हैं, या तलाक पाकर अपने मां-बाप के घर बैठ जाती हैं। या हर तरह से मजबूर होकर अपने जिस्म और हुस्न को बाजार में बेचने के लिए मजबूर हो जाती हैं।

कमाल एक दिन अपाला के साथ तहमीना और गुल, दोनों को अपने साथ लेकर गुलफिज़ा से बाहर निकला। उन्हें दिखाया कि देखो यह गली अनारकली क्या है? इसके एक सिरे पर है गुलफिज़ा और दूसरे सिरे पर है नौची का गंदा गरीब रंडीखाना। गुलफिज़ा और नौची के झोपड़पट्टी के बीच में है : हुसैनाबाद की सराय, पार्क, छोटा इमाम बाड़ा, पुलसरात गली अनारकली की नुक्कड़, रहमत खाना, खलीलमहल, सुलतान खाना''।

गुल पर कमाल की बातों का गहरा असर हुआ। वह पूरी सच्चाई और सच्चाई के पीछे इन वजूहात को समझकर कांप गई। घर आकर कमाल से कहा—भाई साहब, इस बेवकूफ अलीरज़ा को कोई सबक ज़रूर सिखाइए।

एक दिन कमाल अलीरज़ा साहब को पान खाने के बहाने हुसैनाबाद से अमीनाबाद की गली मे ले आया। वहां अलीरजा की मुलाकात एक जर्राह से कराई। कमाल ने कहा—हकीम साहब ! इनके सिर मे दर्द रहता है। इनसे एक रुपया कबूल कर इन्हें सिरदर्द से छुट्टी दिलाइए।

अलीरजा साहब को अक्सर सिरदर्द रहा करता था। उन्होंने खुशी से कमाल की बात मान ली और हकीम को एक रुपया दे दिया। जर्राह हकीम ने अलीरज़ा के सिर को इतनी जोर से दबाया कि वह चिल्ला पड़े। मगर इससे उनका सिरदर्द जाता रहा।

कमाल अपने रज़ा ट्रेडिंग कंपनी के दफ्तर चला गया और रज़ा साहब फिर हुसैनाबाद की ओर रवाना हुए। अलीरज़ा कुल पचास कदम चले होंगे कि वही जर्राह फिर उनके सामने आ खड़ा हुआ।

जर्राह बोला— मियां, मुझे दस रुपया और दीजिए।

—क्यो ?

—मैंने आपका सिरदर्द दूर किया।

—अगर मैं नहीं दू तो ?

—मैं आपको सिरदर्द से तबाह कर दूगा।

अलीरज़ा डर गए। दस रुपये देकर वह आगे बढ़े। मुश्किल से पचास कदम गए होंगे कि वह जर्राह फिर सामने खड़ा मिला। इस बार उसे देखकर अलीरज़ा को पसीना आ गया। वह समझ नहीं पा रहे थे कि यह हो क्या रहा है। दस रुपये का नोट फिर उसे थमाकर वह सीधे भागकर एक रिक्शे पर बैठ गए।

—जल्दी ले चलो।

मगर फिर वही जर्राह उनके सामने आ खड़ा हुआ। रिक्शे से कूदकर अलीरज़ा साहब भागने लगे। काफी दूर निकल जाने के बाद एक पुलिया पर बैठकर दम लेने लगे। तभी देखा फिर वही जर्राह सामने खड़ा है। इस तरह अमीनाबाद से लेकर हुसैनाबाद के चौराहे पर वह जर्राह अलीरज़ा को पंद्रह बार मिला। गली अनारकली के नुक्कड़ पर आखिरी बार वह जर्राह एक छत से कूदकर सामने आ गया। नुक्कड़ पर एक घर था जिसके फाटक में दौड़कर अलीरज़ा घुसने लगे तो उस जर्राह ने रास्ता रोक लिया। अलीरज़ा बेहोश होकर गिर पड़े।

अलीरज़ा को जब होश आया तो उन्होंने अपने आपको बलरामपुर अस्पताल की एक खाट पर लेटे पाया। उनके सामने पुलिस के दो सिपाही खड़े थे। उन्हें पता चल गया कि वह किस हालत में यहां लाए गए।

पुलिस को घूस देकर अलीरज़ा ने अस्पताल के बाहर आकर एक

दुकान से कमाल को टेलीफोन किया। कमाल को वहां पहुंचने में पंद्रह मिनट से ज्यादा देर नहीं लगी। कमाल के साथ गुल भी थी। कमाल को देखते ही अलीरजा उसके कदमों में गिर पड़े और बेतरह फूट-फूट कर रोने लगे। कराहते हुए बोले—मुझे बचाओ। मेरे सिरदर्द का इलाज बहुत महंगा पड रहा है। वह जर्राह कोई हकीम नहीं, कोई जिन्नात है, जो मेरी जान लेकर ही छोड़ेगा।

कमाल ने कहा—इत्मीनान रखो अलीरजा भाई, मैं तुम्हें इस मुसीबत से जरूर छुटकारा दिला दूंगा। इसके लिए जरूरी है कि एक लंबी-चौड़ी आग जलाई जाए, जिसमें आपका इलाज हो।

गली अनारकली के पिछवाड़े सैफू मियां का एक छोटा-सा मैदान था। उसी मैदान में इधर-उधर से लकड़ी ईंधन का इंतजाम हो रहा था और रात के बारह बजे आग जलाने का इरादा। गली-मुहल्ले के तमाम लोग उस मंजर को देख रहे थे। पता नहीं लोगों को कैसे पता चल गया कि कमाल, अलीरजा पर से कोई जिन्न-जिन्नात की छाया उतार रहा है।

इधर आग एक गोलाई में जल रही थी। उधर कमाल एक तरकीब सोच रहा था। लोगों की आंखें आग पर टिकी थीं। इस बीच आग खूब भडक उठी थी, और हवा पाकर लपटें ऊंची उठ रही थीं जिससे गली अनारकली के ऊपर लाल रोशनी फैल रही थी।

कमाल ने अलीरजा से कहा—कपड़े उतारिए और आग के तीन चक्कर लगाइए।

लोग खामोशी से उस मंजर को देखे जा रहे थे। औरतें 'या अल्लाह या अल्लाह' कर रही थीं। अलीरजा साहब आग के चारों ओर घूम रहे थे, मानो जंजीर से बंधा कोई वनमानुष हाथ हिलाता हुआ नाच रहा हो, और उसके हाथ करीब-करीब घुटनों तक पहुंच रहे हों।

कमाल का चेहरा खिल उठा। उसने आराम की सांस ली और कंधे चौड़ाए। फिर बोला—मुझे कंबल दो, और अलीरजा साहब, सब लोगों के साथ मेरे करीब आओ।

लोगों को बुझी हुई आग के बाहर एक गोल घेरे में खड़ा कर दिया और बीचोंबीच अलीरजा को जमीन पर बिठाया गया।

फिर कमाल ने सब लोगों को मुखातिब करके कहा—लोगो, बड़े गौर से देखो। मैं अलीरजा साहब को इस कंबल से ढक दूंगा और दुआ पढ़ूंगा। तुम सब लोग और अलीरजा आंखें बंद करके मेरे साथ दुआ दोहराना। जब मैं कंबल हटाऊंगा तो इनका इलाज पूरा हो जाएगा। लेकिन एक

बहुत जरूरी शर्त है। अगर यह शर्त पूरी न हुई तो इनका इलाज नही हो सकेगा। तुम लोग कान खोलकर सुनो कि मैं क्या कहता हूं।

लोग कमाल के हर लफ्ज़ को ध्यान से सुनने और उसे याद रखने के लिए बिल्कुल खामोश हो गए।

कमाल ज़ोरदार और साफ आवाज़ मे कहने लगा—सुनो, मेरे बाद जब तुम लोग दुआ के लफ्ज़ दोहराओ तो तुममें से कोई कुत्ते के बारे में, कम से कम अलीरजा साहब तो हरगिज कुत्ते के बारे में नही सोचें। अगर तुममें से किसी ने कुत्ते के बारे मे सोचा, या इससे भी बदतर कोई अपने ख्याल मे भी लाया तो इलाज नही हो सकेगा। सोचने की बात है, ऐसे मे इलाज हो भी नही सकता, क्योंकि किसी भी पाक काम में कुत्ते जैसे गंदे और नापाक जानवर का ख्याल ठीक नही है। तुम लोग समझ रहे हो न ?

—हां, हम लोग समझ रहे हैं, लोगो ने जवाब दिया।

कंबल से अलीरज़ा साहब को ढकते हुए कमाल ने बडी सजीदा आवाज़ में कहा—अलीरजा साहब, तैयार हो जाइए, और अपनी आंखें बंद कर लीजिए।

कमाल लोगों की तरफ पलटकर बोला—अब तुम लोग भी अपनी आंखें बद कर लो। खबरदार, कुत्ते के बारे में बिल्कुल न सोचना।

फिर कमाल ने दुआ पढनी शुरू की—ऐ रब्बुल आलमीन बदाना-ए पाक अलिफ, लाम, मीम की खुसूसियत से इस अपने अलीरज़ा को अच्छा कर दे…।

सारे लोग बेमेल आवाज़ में दोहराने लगे—ऐ रब्बुल आलमीन बदाना-ए पाक अलिफ लाम मीम…।

अचानक कमाल ने एक आदमी के चेहरे पर कुछ परेशानी और घबराहट देखी। एक दूसरा उसके पास खडा हुआ आदमी खासने लगा। तीसरा दुआ के लफ्जों पर अटक गया। चौथे ने सिर हिलाया मानो आंखों के सामने से कोई नज़ारा हटा रहा हो।

एक लमहे के बाद ही कंबल के नीचे अलीरजा साहब खुद बेचैनी से हिलने लगे। जैसे बेहद नफरत पैदा करने वाला बहुत बदनुमा गंदा बीमार कुत्ता अपनी दुम और पीले दांत दिखाता हुआ उसके कंबल के नीचे घुस गया हो और उसकी बदबू अलीरज़ा के दिमाग के पर्दे पर भारी पड रही हो और कभी जीभ दिखाकर और कभी अपने बदन का घाव दिखाकर चिढा रहा हो, जो ऐसे वक्त किसी भी सच्चे मुसलमान के ख्याल मे आने के काबिल नहीं।

कमाल जोरदार आवाज़ मे दुआ करता रहा। अचानक वह रुक गया।

'निराश्रित महिला कर्मशाला' पिछले कई दिनो से बंद थी। आज सुबह फिर लड़कियो और औरतों का गुलफिशां में आना शुरू हुआ। सब मिलाकर रजिस्टर मे बीस लड़कियो और दस औरतो ने दस्तखत किए। सबको पासबुक और 'आईडेन्टिटी कार्ड' दिए गए।

अगले दिन 'माइनारिटी कमीशन' के डाइरेक्टर हरीशचंद्र सिन्हा लखनऊ के फील्ड अफसर रमाकात पाडे के साथ निराश्रित महिला कर्मशाला का अध्ययन करने आए। इस वक्त वहा तीनों बहनो के साथ कमाल मौजूद था। दरअसल कमाल ने ही इस टीम को उत्तर प्रदेश इडस्ट्री विभाग के अफसरों के साथ यहां ले आने मे सारी तरकीब लगाई थी। मुआयना पूरा करने के बाद जब अफसरों की टीम गुलफिशा से बाहर निकली तो हरीशचंद्र सिन्हा ने कहा—मैडम तहमीना, आपने निराश्रित महिला कर्मशाला को इस तरह 'इस्टेब्लिश' कर बहुत बड़ा काम किया है।

इस बात पर कमाल के मुह से निकला—हुजूर, याद रखिये, खूबसूरत औरत दो बार मरती है। मैडम तहमीना इतनी खूबसूरत है कि तीन बार मरी है।

तहमीना के चेहरे से लगा, कमाल की यह बात उसे अच्छी नही लगी। उसके चेहरे पर मानो लिख उठा था, सारी खूबसूरती यहा धरी की धरी रह जाती है।

अगले दिन कमाल ने तहमीना से कहा—आप खूबसूरत हैं, इसे मैं आपको हमेशा याद दिलाता रहूगा।

उसके मुह से निकला—इसकी कोई जरूरत है क्या ?

—जी हां। सबसे बडी जरूरत इसी की है। बिना इस अहसास के इस जिंदगी का कोई मतलब नही है। जब मैं आपको खूबसूरत कहता हूं तो दरअसल मैं भी खूबसूरत हो जाता हू।

बोली—जिसे तीन बार तलाक मिला हो, वह कैसे खूबसूरत है ?

कमाल बोला—यही तो बात है। हिम्मत का ही नाम खूबसूरती है।

—जी नही, तकलीफों का एक सिलसिला है, जो टूट जाने के दर्द से शुरू होता है और जिसका डर सारी जिंदगी बना रहता है। कभी सोचती थी, चलो एक तूफान गुजर गया, मगर जब दूसरा और तीसरा तूफान गुजरा तो मुझे सिर्फ एक सन्नाटा मिला और सबकी उठती हुई निगाहें कि ये लड़की ऐसी है ! इसके तीन-तीन शौहरो ने इसे छोड दिया। कोई नहीं कहता कि मैंने तलाक लिया। यह कैसी सोसायटी है, कमाल भाई साहब ?

यह सवाल करते हुए जिस निगाह से तहमीना ने कमाल को देखा, उसका माथा झनझना गया। उसके सिर पर जैसे किसी ने हथौड़ा मार-

मानो कुछ सुन रहा हो। मुहल्ले के सारे लोग खामोश हो गए। कुछ लोग तो डर के मारे पीछे हट गए।

कंबल के नीचे अलीरज़ा दांत किटकिटा रहा था क्योंकि उनके ख्याल में कुत्ता खुले तौर पर नापाक गंदी हरकतें करने लगा था।

कमाल ने गरज कर कहा—काफिरो! शरारत पसंदो! मैंने जो बात मना की थी, उसे करने की मजाल! उस नापाक चीज का ख्याल करते हुए तुम लोग दुआ कैसे कर सके, जिसकी मैंने खास तौर पर मुमानियत की थी?

कंबल को अलीरज़ा के ऊपर से फुर्ती से हटाते हुए कमाल मानो उस पर झपट पड़ा—तुमने मेरी मदद क्यों मांगी थी? खबरदार, मैं लोगों को बताऊंगा कि किस तरह दुआ मांगते वक्त तुमने जानबूझ कर काफिराना इरादे से कुत्ते के बारे में सोचा। और तुम सब लोग भी होशियार हो जाओ। तुम लोग आसानी से छुटकारा नहीं पाओगे। कुफ्र की जो सजा होती है वह तुम लोग जानते होगे।

चूंकि कुफ्र के लिए हमेशा बहुत सख्त सजा मिलती थी, इसलिए लोग मिमियाने-रिरियाने लगे। वे डरे हुए थे। घिघियाकर न समझ में आने वाले लफ्ज़ों में अपनी सफाई पेश करनी चाही, लेकिन उसे सुनने के लिए कमाल रुका नहीं। वह बाहर निकल गया।

थोड़ी देर में चांद निकल आया। गली-मुहल्ले के लोग बाहर निकल आए। पूरा शहर हल्की चांदनी में नहा गया। रात को देर तक लोग वहां शोर-गुल करते रहे। तकरार होती रही। हर शख्स जोर-जोर से बहस कर रहा था और यह जानने की कोशिश कर रहा था कि कुत्ते की बाबत सोचने वाला वह पहला शख्स कौन था?

अलीरज़ा को इस तरह सबक सिखाकर और लोगों को बेवकूफ बना-कर कमाल गुलफिशा में वापस लौट आया।

गुल मारे खुशी के कमाल के गले से लिपटकर बोली—वाह जीजाजी, आपने कमाल कर दिया।

तहमीना ने कहा—अलीरज़ा साहब को अब यह समझ आ जाना चाहिए कि झूठ और हकीकत में कितना फर्क है।

अपाला ने कहा—जो मज़हब को जीते नहीं, उनके दिमाग के पर्दे पर हर वक्त वही नापाक कुत्ता घूमता रहता है।

कमाल ने कहा—आखिर दुनिया इतनी बुरी जगह नहीं है, कम से कम उसके लिए जिसके पास दिमाग है और जिसके कंधों पर खाली घड़ा नहीं है।

कर कहा—देख रे, उल्लू के पट्ठे ! हम जिस सोसायटी में रह रहे हैं उसमें अगर कोई आजादी के लिए पख फडफडाये तो उसके पंख काट दिए जाते हैं। तू औरत की बात करता है, उसके इसान होने की बात यह आदमी कभी कबूल करता है ?

कमाल तहमीना से यह कहना चाहता था कि तुझे जिंदगी जीने का हक मिला पर यह बात वह कह नही पाया। वह गुलफिशा मे वही खड़ा देखता रह गया, तहमीना कसीदाकारी करने वाली औरतो के बीच बैठकर अपने काम पर लग गई थी।

आज कमाल को लगा कि ये औरतें जो काम कर रही हैं, यह मजबूरी का काम है। यह कसीदाकारी नहीं कर रही, वल्कि अपने ऊपर लगे रफू और पैवदो को उधेड़-बुन रही हैं।

उस रात, अपाला और तहमीना के साथ गुलफिशा मे खाना खाते हुए कमाल ने एक सवाल किया—कसीदाकारी कारीगरी का काम है या मजदूरी का काम ?

तहमीना मुस्कराकर रह गई।

अपाला कमाल के सवाल को समझकर बोली—यह अपनी-अपनी समझ पर मुनहसर है। जो इसे मजदूरी मानकर चलता है, उसके लिए यह मजदूरी है, जो इसे कारीगरी मानकर काम करता है उसके लिए यह कर्म है। इस लिहाज से कर्म कोई मजदूर नही कर सकता। मजदूरी मजबूरी का नाम है। कर्म तो 'एक्शन' है। तभी 'एक्शन' करने वाला एक्टर है। तभी तो कृष्ण नटवर है और शकर नटराज।

चौदह

आमीर रज़ा बवई, वडौदा, अहमदावाद और न जाने कहा-कहा घूमकर ठीक बाइसवें दिन लखनऊ पहुचा। कमाल ने उससे कोई सवाल नही किया कि तुम इतने दिन कहा रहे, कैसे रहे, इतनी देर कहां लगा दी ? हालांकि आमीर चाहता था कि कमाल उससे सवालात करे पर इस तरह के सवालो में कमाल की कोई दिलचस्पी नही थी। मगर एक खास बात उसने आमीर के चेहरे पर उभरी हुई देखी। वह बहुत परेशान लगता था। कोई खास वात है जिसे वह अपने भीतर छिपा रहा था। उसने न कायनात के बारे में कुछ पूछा, न अपने बिजनेस के बारे मे। वह घर और दफ्तर में सिर्फ शराब पीता था और सिगरेट फूंकता था। इस तरह कमाल ने उसे पहले कभी

नही देखा था। कमाल को लग रहा था जैसे किसी नए आमीर रज़ा को देख रहा था। फिर भी उसने आमीर को बिल्कुल नही छेड़ा। सोचा कि यह दो-चार दिन मे अपने आप ठीक हो जाएगा। मगर उसकी उदासी टूट नही रही थी। तब कमाल ने उसे वे दोनो बातें बताईं—पहली, 'निराश्रित महिला कर्मशाला' के बारे मे और दूसरी अलीरज़ा को उस तरह कंबल ओढ़ाने के बारे मे। मगर आमीर ने इन बातो मे कोई दिलचस्पी नही ली।

एक दिन आमीर रज़ा ने अपने दफ्तर मे बैठे-बैठे कमाल से कहा—जिंदगी और मजहब के बारे मे तुम्हारी बातें जानकर अब मेरी यह तबीयत होती है कि मैं अपनी पिछली बातें भूल जाऊ और नये सिरे से जिंदगी शुरू कर सकू। कमाल, तुम्हारी यह बात कितनी सच है कि इसान की ये पांचों कर्म इन्द्रिया कितनी उम्दा चीज़ें है। इन्हें हर वक्त जगाए रखना है। और इन्ही के साथ जीना है। जीने वाली ये इन्द्रिया नहीं हैं, जीने वाला मैं हू। मैं ही इन पाचों इन्द्रियों के साथ चल रहा हू, खा रहा हू, भोग रहा हू, झख मार रहा हू, और इस वक्त बकवास भी कर रहा हू।

कमाल ने कहा—हुज़ूर, ये पाचो इन्द्रियो जो हैं न, जिनसे यह आमीर रज़ा है, आमीर रज़ा की पाचो इन्द्रियो समेत इस पूरे शरीर 'को इस तरह सिखाया पढाया यानी 'ट्रेन्ड' किया जाना चाहिए, जिससे यह हर चीज को समझ सके और उसका आनद ले सके। इन पैरो को यह जानना चाहिए कि दौड़ना किसे कहते हैं। इन हाथो को यह जानना चाहिए कि कोई काम कैसे करना चाहिए। इस चमड़े को यह मालूम होना चाहिए कि चाहे मिट्टी हो, चाहे फल हो, चाहे फूल हो, चाहे औरत का बदन हो—उसे कसे छूना चाहिए। जिसे यह मालूम हो गया कि काम कैसे करना चाहिए, काम करने का आनद क्या है, उसने सच्चाई को पा लिया।

कमाल दफ्तर के सोफे पर पालथी मारे बैठा हुआ था।

कमाल ने कहा—लोगो को गौर से देखिये तो साफ जाहिर होता है कि लोगो के चेहरे पर कितनी भूख है, कितना डर और कितनी हाय-हाय है।

आमीर ने घबराकर पूछा—ऐसा क्यो है ?

कमाल बोला—इसकी वजह यह है हुज़ूर, कि आदमी कामचोर है। वह चाहे औरत के साथ भी होता है, उसकी खोपड़ी मे यह बात बजती होती है कि हाय, यह मैं क्या कर रहा हू। उसको जब यह पता नही है कि वह क्या कर रहा है तो वह कुछ करता ही क्यों है ? फिर तो वह जानवर है और वह हमेशा इसी तरह भूखा और डरा रहेगा।

दोनों में बातें चल ही रही थीं कि सतराम और अनवर दोनों दलाल वहां आए। बाजार के क्या हाल-चाल हैं? भाव गरम हैं या नरम, फटाफट जानकारी ले ली गई। सतराम ने बताया कि बाबू मिर्जा सगतङ्ग की चिकनकारी की मजदूर औरतों की एक यूनियन बनाने जा रहा है। इस पर अनवर ने बताया कि इसके जवाब में वैद्य प्रकाश शर्मा चिकनकारी के काम में लगी हुई हिंदू औरतों की यूनियन खड़ी करने जा रहा है।

इस बात पर सतराम ने कहा—रंडियों की भी एक यूनियन है, जिसकी प्रेसीडेंट सोधी है और सेक्रेटरी कोई रेखा देवी है।

अनवर ने कहा—जी हां, आप सही फर्माते हैं। रेखा देवी चौक की रंडी यूनियन संभालती हैं और सोधी मोरद-पट्टी की रंडी यूनियन का देखती है।

अब कमाल बोला—हुजूर, यूनियन एक हो ही नहीं सकती। जैसे ही एक यूनियन बनेगी वैसे ही दूसरी यूनियन खड़ी हो जाएगी। ठीक उसी तरह जैसे हवा चलेगी तो पत्ते हिलेंगे, बाजार चलेगा तो दलाल होंगे, चीजें बिकेंगी। चाहे इंसान का जिस्म हो, चाहे उसकी मेहनत हो, या माल-मूली हो।

आमीर रजा ने जानना चाहा कि चिकनकारी के बाजार में इस तरह यूनियन बनने से क्या फर्क पड़ेगा? सतराम और अनवर कोई साफ जवाब नहीं दे पाए। तब कमाल ने कहना शुरू किया—यकीन रखिए, जितनी यूनियनें बनती जाएंगी उतना ही फायदा बाजार को होगा। यूनियन के जितने प्रेसीडेंट, सेक्रेटरी बढ़ते जाएंगे, उतनी ही मालिक लोगों को काम में आसानी होगी। इसे ऐसा समझिए जैसे नवाबी जमाने में दरबारों में भांड होते थे मालिकों को खुश करने के लिए, उसी तरह अब बाजार में यूनियनें हैं। आप सोचते होंगे कि भांड तो फ्यूडल चीज है और यूनियन माडर्न चीज है, बल्कि इंडस्ट्रियल हकीकत की चीज है। मगर सच्चाई यह है कि फ्यूडल, इंडस्ट्रियल के नाम पर बरकरार है। आप खुद अपने आपको देखिए न, आप हैं आमीर रजा साहब व्यापारी। मगर आपने कितनी बीविया रख छोड़ी हैं? जरा गिनकर बताइए तो?

आमीर ने कमाल को इस नजर से देखा कि तुम इन दलालों के सामने मुझसे ऐसी बातें मत करो। कमाल ने बात को एक दूसरा अंदाज देते हुए कहा—तो हुजूर, भांड और यूनियन दोनों एक ही चीज हैं। यहां असली यूनियन तब बनेगी जब कोई सच्चा कर्मचारी होगा। फिलहाल तो मजदूर के नाम पर यहां भिखमंगे, कामचोर, गुंडों के हाथ बिके हुए मजदूर लोग हैं। पूंजी के नाम पर यहां डाकेजनी है और उत्पादन के नाम पर यहां आबादी

की बढ़ोतरी है। एक औरत के सात बच्चे, माने सात ओट, सात गुणा 'माइनोरिटी' गुणनफल 'मेजोरिटी'। 'मेजोरिटी' माने बहुमत। बहुमत के माने अपनी सरकार। अपनी सरकार माने इकलाब जिंदाबाद। समाजवाद जिंदाबाद। समाजवाद माने एक दूसरा पाकिस्तान। हर हर महादेव, अखंड भारत की जय। तो हुजूर, पूजी के नाम पर प्रजातत्र का गरीब वोट और *इंसान का जिस्म है, इसे चाहे ओढ़ो बिछाओ, चाहे इस पर इडस्ट्री* लगाओ।

थोड़ी देर बाद कमाल से माल खरीदने का आर्डर लेकर दोनो दलाल चले गए।

दोपहर का वक्त था। आमीर रजा ने कमाल से कहा—मैंने अब तक कई शादियां की है। मेरी इस समय कई बीवियां हैं। मैं लखनऊ में कायनात से निकाह कर उसे बीवी बनाना चाहता था। तुमने मना कर दिया। तहमीना को भी तुमने उसी चिकनकारी का मजदूर बना दिया। सुलतान-खाना जो एक रंगीन जगह थी, उसे तुमने चिकनकारी के वर्कशाप में बदल दिया। तुम क्या समझते हो कि मैंने इतनी शादियां करके बेवकूफी की है ? जी हां, मैंने बेवकूफी की है। अब मैं इसे कबूल करता हूं।

—अच्छा !

कमाल ने ताज्जुब से देखा।

—जी हां।

—कितनी बार ?

आमीर रजा ने कमाल की आंखों मे देखते हुए कहा—ईमानदारी से मैंने एक शादी की है। आधी ईमानदारी से दो शादियां की है और बेईमानी से मैंने कई की है। सच बताओ, कमाल, तुमने एक भी शादी नही की ?

कमाल कई मिनट तक चुप बैठा रहा। फिर बोला—शादी होना एक बात है और शादी करना बिल्कुल दूसरी बात है। शादी होने के मायने है —शादी मे गिरना, जैसे इश्क मे गिरना, प्रेम मे फसना। शादी करने का मतलब है- खुद समझ-बूझकर पूरी जिम्मेदारी और पूरे आनद के लिए शादी। शादी करना—मतलब प्रेम मे उठना, दोनो का बड़ा हो जाना, दोनो का एक साथ रहना, जीना और करना। करना मायने पैदा करना। हुजूर, यह जो 'इमोशन' है न, चाहे शादी का 'इमोशन' हो चाहे इश्क का, इमोशन' तो 'इमोशन' ही है। 'इमोशन' शरीर की चीज है। यह कुदरती चीज नही है। 'नेचर' में देखिए न हुजूर, कहीं 'इमोशन' नहीं है। तो यह है शरीर की चीज। शरीर मे समझ नहीं होती। शरीर में भूख होती है। समझ पैदा की जाती है। हासिल की जाती है—शरीर को और कुदरत को

देखकर व महसूस कर। समझ ही आंख है। आंख और शरीर का जो मेल है यही है शादी, यही है इश्क, यही है काम। यह काम हुजूर, बड़ी 'डिसिप्लिन' की चीज है।

कमाल, आमीर रजा को इस तरह समझा रहा था जैसे कोई मा अपने बच्चे को समझा रही हो।

कमाल समझा रहा था—गौर से सुनो आमीर, निन्यानवें फीसदी आदमी और औरत बिल्कुल तुम्हारी ही तरह नादान बच्चे हैं। बच्चा सिर्फ इतना ही जानता है कि कोई उसे प्यार करे। यह बचपना कभी अपने आप नही कटता। बचपना तो काटना पड़ता है, यही है मेरे और अपाला की जिंदगी की शुरुआत। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती है, आदमी जैसे-जैसे ऊपर बढ़ता चलता है—धन, पद, ताकत हासिल कर बड़ा होता है, वैसे-वैसे उसका यह बचपना कि लोग मुझे प्यार करें, बढ़ता ही चला जाता है। जितनी बड़ी हैसियत, उसकी उतनी ही बड़ी भूख कि मैं नही, लोग मुझे प्यार करें। इससे भी बदतर हालत औरत की है। इसका बचपना तो अजीबोगरीब है। बचपन से लेकर मरते दम तक उसका यह बचपना कभी नही छूटता कि लोग उसे प्यार करें। तभी वह इतनी बनी-ठनी रहती है। हर तरह से उसकी यही कोशिश रहती है कि लोग उसकी तरफ खिचें। लोगो को यह पता ही नही है कि मुहब्बत होती नही, की जाती है। प्रेम करना स्वभाव नही, प्रेम करना 'एक्शन' है। जैसे कोई एक चीज बनाई जाती है, उसका उत्पादन होता है, सृजन होता है, उसके पीछे आख है, हाथ है, न जाने कितनी चीजें हैं।

दोनो वही दफ्तर मे शाम तक बैठे रहे। आमीर रजा कमाल को छोड़ता ही नही था। इस बार कमाल ने कहा कि उसे अपाला के पास पहुंचना है। अपाला को कमाल की जरूरत है, कमाल को अपाला की। पर कमाल ने यह भी देखा कि आमीर रजा को कमाल की जरूरत है, और कमाल को आमीर रजा की।

कमाल ने अपने आप से कहा—यही तो बात है, सबको एक-दूसरे की जरूरत है। एक-एक मिलकर ही सब लोग बने है। इस बनावट मे एक से एक जुड़ा है। मगर यह जो मनुष्य का "मैं" है न, यही नही देखने देता, यह बनावट और बनावट। हर 'मैं' सोचता है कि वह सबसे अलग सिर्फ मैं है, पर कही कोई मैं नही है। चारो तरफ एक कसीदाकारी है, जिसमें सारे मैं के बूटे और टाके लगे हुए हैं।

जिस वक्त कमाल रजा ट्रेडिंग कंपनी के दफ्तर से नीचे उतर रहा था उसी समय सीढ़ियों से एक मोटी ताजी जवान औरत बुर्का ओढ़े, चेहरे पर

से नकाब उठाए ऊपर चढ़ी चली आ रही थी। उसने कमाल से पूछा—यहां रज़ा साहब रहते हैं ?

—कौन रज़ा साहब ?

—मेरे शौहर।

—आपकी तारीफ ?

—कहा न, मैं रज़ा साहब की बेगम हूं।

आमीर रज़ा अपनी बड़ौदा वाली बीवी को देखकर घबरा गया। उसने कमाल से कहा—तुम बगल के कमरे में बैठो।

कमाल दूसरे कमरे में बैठा हुआ बीवी और शौहर की मुलाकात का मज़ा लेने लगा।

बीवी कह रही थी अपने शौहर से—अल्लाह, तुम कितने दुबले हो गए हो।

शौहर बीवी से कह रहा था—तुम कितनी दुबली हो गई हो।

बीवी के दिल में एक हूक-सी उठी। कमाल को ऐसा लग रहा था जैसे वह आमीर के कंधे से झांककर उसकी बीवी को देख रहा हो। उसके कानों पर आमीर की गहरी सांस सुनाई पड़ रही थी—बीवी के मुंह से निकला—तुम्हारे बिना मुझे बहुत तकलीफ होती है।

—कहां होती है ?

—दिल में। मेरा दिल तुम्हारे गम और चाहत के दर्द से भरा है।

—तुम्हारे गम की वजह ?

—वजह यह है कि जिससे मैं मुहब्बत करती हूं वह मुझसे जुदा है।

इसी समय कमाल अचानक वहां आकर बोला—आपका यह शौहर खुद बहुत बीमार है, क्योंकि यह आपसे जुदा है।

खुशी के मारे बीवी और शौहर दोनों के चेहरे खिल उठे। दोनों की सांसें ज़ोर से चलने लगीं।

बीवी बोली—मैं जिससे मुहब्बत करती हूं वह मुझसे जुदा था और मुझे लगता है कि मेरा प्यारा मुझसे बहुत करीब था। लेकिन न तो मैं उसे गले लगा सकती हूं न उसे प्यार कर सकती हूं।

—हाय !

यह कहकर कमाल तेज़ी से सीढ़ियों से नीचे उतर गया।

—या अल्लाह !

यह कहकर आमीर की बीवी उसके गले से चिपट गई।

आमीर रज़ा खुशी के मारे आपे से बाहर हो रहा था। वह आस्तीन से मुंह छिपाए बड़े गौर से अपनी बीवी को देख रहा था। उसके कानों में

कमाल की जैसी आवाज़ आ रही थी, ऐ, मेरी जान फिक्र न करो। जिसकी मुहब्बत मे बडौदा से चलकर इतनी दूर लखनऊ आई हो, यह तुम्हारा शौहर व्यापारी है। तुम्हें इसके साथ होशियारी से रहना चाहिए। सोचो भला, इसकी इतनी बीवियां हैं, न जाने कितनी रखैलें हैं, फिर भी यह इस तरह अकेला क्यों रहता है ?

पन्द्रह

कमाल की नज़र से कुछ भी न चूकता था। सैकड़ों की भीड़ में एक चेहरा भी नहीं। एक लफ्ज भी नहीं। उसके आंख, कान और दिमाग किस तरह सधे हुए थे कि कुदरत ने उसके काम पर हद की जो पाबन्दी लगाई थी वह उससे आगे पहुंच गया था।

अमीनाबाद मे जहां जौहरियों और अत्तारो के टोले मिलते थे, वहां कमाल को भीड़ के शोरगुल के बीच एक आवाज सुनाई दी—तुम कहती हो कि तुम्हारे खाविन्द ने तुमसे मोहब्बत करना छोड़ दिया है और तुम्हारे साथ सोता तक नही ? तुम्हारी उस मुसीबत का इलाज है। लेकिन उसके लिए मुझे कमाल से मशविरा करना पड़ेगा।

कमाल और नजदीक पहुंचा तो उसे किसी नजूमी का चेहरा दिखाई दिया। चादी का एक सिक्का लिए एक औरत उसके सामने खड़ी थी। नजूमी नमदे पर रेशमी कपडा फैलाए एक बहुत पुरानी किताब के पन्ने उलट रहा था।

कमाल ने देखा वह कायनात थी, जिससे वह नजूमी कह रहा था—अगर तू कमाल को तलाश करने में कामयाब न हुई तो तुझ पर लानत बरसेगी, क्योंकि तेरा शौहर तुझे हमेशा के लिए छोड़ देगा।

कमाल ने हाथ और आख से इशारा कर कायनात को एक किनारे खड़ा कर दिया। खुद नजूमी के सामने बैठ गया।

बोला—दूसरों की तकदीर देखने वाले, ए दानिशमंद ! मुझे मेरा मुकद्दर बताओ।

आसपास खड़े कई तमाशबीन आ गए।

नजूमी बोला—ए आदमी, तुझ पर खुदा की मार है। मौत अपना काला हाथ तेरे सिर पर उठा चुकी है। मौत का वार बचाने में मैं तेरी मदद कर सकता हूं। लेकिन यह काम अकेले नहीं हो सकता। पहले मुझे पच्चीस रुपये नकद दो।

कमाल ने कायनात को इशारा किया।

कायनात बोली—मैं अभी कमाल को तुम्हारे पास ले आऊंगी।

नजूमी खुशी से चौंकते हुए बोला—तू कमाल को मेरे पास ले आएगी ?

—हां, मैं उसे अभी ला सकती हूं।

—कहां ?

—यहीं, एकदम नजदीक।

—लेकिन कहां ? मैं उसे देख नहीं रहा।

—देख नहीं सकते और अपने आपको नजूमी कहते हो ? लो यह रहा कमाल।

कमाल का चेहरा देखते ही नजूमी घबराकर पीछे हट गया।

कमाल ने पूछा—बोल, मुझसे किस बारे में मशवरा करना चाहता था ? तू झूठा है। तू नजूमी नहीं, तू पैसे वालों का जासूस है।

आसपास के लोगों को सुनाते हुए वह ऊंची आवाज में बोला—लोगो, इसका यकीन न करो। यह बदमाश है जो तुम सब लोगों को धोखा दे रहा है। यहां बैठा हुआ यह सिर्फ कमाल का पता लगाने की कोशिश कर रहा है।

कायनात को अपने साथ लिए भीड़ को चीरते हुए कमाल आगे बढ़ गया।

रास्ते में चलते हुए कमाल ने कायनात से कहा—तुम इन बेवकूफों के पास क्यों आती हो ? ये लोग तकदीर बनाते नहीं, बल्कि तकदीर को बिगाड़ते हैं।

कायनात बोली—मुझसे गलती हुई।

कमाल ने कहा—आमीर रजा की गुजरात वाली बीवी आई है।

यह सुनकर कायनात थोड़ी घबरा गई और वहीं खड़ी रह गई। कमाल अकेले आगे बढ़ गया। गुलफिशां पहुंचकर कमाल ने देखा, घर में बड़ी खुशी छाई हुई है। बड़ी बहन तहमीना कमाल से बोली—हम आपकी वजह से खुशनसीब हैं कि हमें अपने चिकनकारी के कारोबार से पच्चीस हजार का फायदा हुआ है।

कमाल उसे मुबारकबाद देकर अम्मी आयशा बेगम के पास गया। बोला—अम्मी जान, देख लिया न, आपकी बेटियां कितनी कामयाब हैं।

आयशा बेगम के मुंह से निकला—बेटे, मेरी बेटियां मजदूर तो नहीं हैं न ?

कमाल कुछ बोलने ही जा रहा था कि सामने अपाला आ गई। दोनों एक-दूसरे को देखते ही रह गए।

आयशा बेगम ने बढ़कर दोनों को अपने सीने से लगा लिया। दुआ करती हुई बोली—ए खुदा, ए किस्मत, तू हमेशा इन पर मेहरबान रह।

अपाला ने मां का हाथ चूमकर कहा—ऐ सबसे ज्यादा ताकतवर मौके, तुझे मैं कभी अपने हाथों से छूटने न दूंगी, जिसने अपने बच्चे की तरह मेरी हिफाजत की है।

अम्मी आज बहुत खुश थी।

कमाल का हाथ पकड़कर बड़े प्यार से बोली—बेटे, तुम अब यहीं अपने घर में ही रहो। तुम्हें हर वक्त हम सब लोग याद करते रहते हैं।

अम्मी ने दुआ मांगते हुए कहा—देखो बेटे, मेरी बेटी की सेहत कितनी अच्छी होती चली जा रही है। इस पर किसी की नजर न लगे, इसलिए मैंने मन्नत मान रखी है कि तुम दोनों अजमेर के दरगाह शरीफ पर यह चादर चढ़ाओ।

आयशा बेगम पलंग से उठी। अपने हाथों से अपना पुराना लकड़ी का बक्सा खोलकर उसमें से एक बेशकीमती जड़ाऊ रेशमी चादर निकालकर दोनों के हाथों में पकड़ा दी।

अपाला कुछ कहने जा रही थी, पर कमाल ने उसे रोकते हुए कहा—ठीक है, अम्मी, जैसी आपकी मन्नत है···हम पूरा करेंगे।

दोनों वहां से उठकर आंगन में आ गए।

दोपहर का वक्त था। कमाल सूरज की ओर देख रहा था।

अपाला बोली—क्या देख रहे हो ?

—चलो, ऊपर छत पर चढ़कर देखते हैं।

दोनों दौड़ते हुए छत पर पहुंच गए।

कमाल ने कहा—देखो, सूरज की तरफ देखो।

अपाला बोली—देख रही हूं।

—क्या देख रही हो ?

—सूरज।

—सूरज में क्या देख रही हो ?

अपाला खिलखिलाकर हंसती हुई बोली—सूरज का जलना।

—हां, जलना ही सूरज है।

यह कहते हुए कमाल एकटक अपाला की आंखों में देखने लगा। अपाला शरमा गई।

दिन ढलने लगा। छत के एक किनारे जहां नीम के पेड़ की छाया पड़

रही थी, वहीं जाकर दोनों बैठ गए।

कमाल ने बड़े धीरे से पूछा - तुम मुझे कब से जानती हो ?

—जब से मेरा जन्म हुआ है।

—तुम्हारा जन्म कब से हुआ है ?

—जब से पृथ्वी का जन्म हुआ है।

—पृथ्वी का जन्म कब हुआ है ?

—जब से तुम्हारा जन्म हुआ है।

इसके बाद दोनों चुप हो गए।

धीरे-धीरे शाम घिर आई। नीचे घर में दोनों की तलाश शुरू हुई। छोटी बहन गुल दौड़ती हुई छत पर आई। दोनों को चुपचाप देखकर हरत में पड़ गई। नीचे दौड़कर बड़ी बहन को बुला लाई। दोनों बहनें दूर से उन दोनों को देखकर चुपचाप लौट गईं।

छत पर जब अंधेरा घिरने लगा, तो गुल ने कहा—छत पर रोशनी जला दें ?

तहमीना ने मना करते हुए कहा—उन्हें किसी और रोशनी की ज़रूरत नहीं है।

तहमीना ने अपने मन-ही-मन में कहा—पाक है वह, जो जीता है मरता नहीं।

अब कमाल को गुलफिशां से जाने नहीं दिया जाता। उस पर पूरा घर इस कदर भरोसा करने लगा था कि उसके बिना किसी का जी नहीं लगता।

वह हर मामले में सबका नज़दीकी सलाहकार बन गया था। उन सबमें ऐसी दोस्ती हो गई थी कि कोई उससे अलग नहीं हो पाता था।

बस, अभी-अभी सुबह हुई थी कि बाहर से किसी ने ज़ोर से दरवाज़ा भड़भड़ाया। कमाल ने दरवाज़ा खोला। एक बूढ़ा आदमी जिसकी आंखें आंसुओं से भरी हुई थीं, उसने पूछा—कमाल साहब का पता क्या है ? मुझे उनसे फौरन मिलना है।

कमाल ने कहा—बोलिए मामला क्या है ? आप किस कमाल को ढूंढ़ रहे हैं ?

बूढ़े ने कहा—इस शहर में कमाल तो एक ही है।

कमाल ने कहा—ऐसा न कहिए, एक तो सिर्फ़ खुदा है। और सब तो उसकी परछाइं हैं।

बूढ़े के चेहरे पर खुशी फैल गई—तो आप ही हैं वह कमाल।

यह कहकर वह बूढ़ा कमाल के कदमों पर गिरने लगा। कमाल ने उसे

अपने गले से लगा लिया। बूढ़ा कहने लगा—कल रात मेरे दो हैंडलूम के कारखाने छिन गए हैं, जिनमें मेरे आठ-आठ होशियार कारीगर मेरे लिए काम करते थे। सुना है आप सबकी मुसीबत को अपनी समझते हैं।

कमाल ने पूछा—मैं क्या कर सकता हूं ?

बूढ़ा गिड़गिड़ाने लगा। कमाल ने उसका पता नोट कर लिया और बोला—मैं ठीक दस बजे आऊंगा। मेरा इंतज़ार करना।

सोलह

ठीक दस बजे कमाल उस बूढ़े के घर पहुंच गया। उसके घर के सामने कारखाने टूटे हुए थे। उसके दो नौजवान बेटे हाथ पर हाथ रखे अपनी किस्मत पर रो रहे थे। औरतें घर के अंदर उदास खड़ी थीं। जैसे सब किसी की मौत से सहमे हुए मातम मना रहे थे।

कमाल ने एक नज़र में सब कुछ देख लिया। दरवाज़े पर तीन कुत्ते सोये पड़े थे। दोनों तरफ से खुली हुई नालियों से इस कदर बदबू फैल रही थी कि वहां खड़ा रहना उसके लिए मुश्किल हो रहा था। उसने यह भी देखा कि गली में कोई एक टुटपुंजिया कांग्रेसी कार्यकर्ता लोगों को समझा रहा था कि यह बूढ़ा अगर लिखकर मुझे यह रिपोर्ट दे दे कि इसका कारखाना लाला रतनलाल रस्तोगी ने तुड़वाया है, तो मैं उसकी ऐसी की तैसी करा दूंगा। इन गरीब लोगों को अब तक यह पता नहीं है कि बीससूत्री कार्यक्रम क्या है। गरीबों को कोई इस तरह उजाड़ नहीं सकता। सरकार गरीबों की मदद के लिए ही है।

कमाल ने उस कांग्रेसी कार्यकर्ता को बुलाकर पूछा—तुम इस गरीब की मदद फिर क्यों नहीं करते ?

कार्यकर्ता बोला—यह मुझे लिखकर दे, तभी मैं कुछ कर सकूंगा।

कमाल ने पूछा—क्या तुम पुलिस दरोगा हो ?

तभी वहां खड़े हुए लोगों में से एक ने कहा—इन्हें कोई पहले दस रुपया दे, तभी यह प्रार्थना-पत्र अपने हाथों में लेते हैं। फिर कम-से-कम पंद्रह दिन अपने घर का चक्कर लगवाते है और उस गरीब से न जाने कितने कप चाय, बीड़ी, सिगरेट, पान हुचक जाते हैं।

कमाल ने वहां देख-पूछकर सब कुछ जान लिया। बूढ़े को एक तरफ बैठाकर कमाल ने दोनों जवान लड़कों के सामने कहना शुरू किया—तुम

लोग कैसे नौजवान हो कि तुम्हारा कारखाना उजाड़ कर बाहर फेंक दिया गया और तुम लोगों ने कोई विरोध नहीं किया ? तुम लोग सोचते हो कि तुम्हारी कोई और आकर मदद कर देगा ?

यह कहते हुए कमाल दाएं-बाएं दोनों गंदी नालियों को दिखाते हुए बोला —जो ऐसी गंदी नालियों को चौबीस घंटे अपनी जिंदगी में बर्दाश्त कर सकता है, वह क्या आदमी है ? तुम लोग टुकर-टुकर मेरा मुंह क्या देख रहे हो ? चलो उठाओ अपना कारखाना, फिर से लगाओ।

दोनों लडके, उनकी औरतें, बेटियां, बाल-बच्चे, बूढ़ा-बूढ़ी सब मिलकर घर के भीतर बाहर दोनों बरामदों में फिर से कारखाना लगाने लगे।

बारह बजते-बजते रस्तोगी के दो आदमियों के साथ तीन पुलिस सिपाही और वही कांग्रेसी कार्यकर्ता आ धमके।

कमाल ने तीनों सिपाहियों को अपने साथ लेकर धीरे से उनके कानों में न जाने क्या कहा कि वे अचानक गायब हो गए।

फिर रस्तोगी के आदमियों से कमाल ने कहा—कहिए, आप लोगों की क्या खिदमत की जाए ? कान खोलकर सुन लीजिए, अगर बूढ़े का यह कारखाना फिर से हटाया गया तो आपके मालिक को चौबीस घंटे के भीतर 'हार्ट अटैक' हो जाएगा।

यह कहकर कमाल वहीं जमीन पर बैठ गया। और सबको बैठाकर लाला रतनलाल रस्तोगी की जन्म-कुंडली वहीं जमीन पर बनाकर दिखाने लगा।

—देखो, यह है राहू, यह है केतु, यह है मंगल ''।

फिर न जाने कैसा मंत्र पढ़ता हुआ वह आगे बोला—यह देखो, लाला की किस्मत, राहू इस घर से उस घर में गया तो लाला को हार्ट अटैक हो जाएगा। यह इस घर से उस घर में पहुंच जाए इसका गुरु मंत्र मेरे पास है।

यह कहकर कमाल जोर-जोर से न जाने किस भाषा में मंत्र पढ़ने लगा। बहुत सारे लोग वहां जमा हो गए। ज्यों-ज्यों वह मंत्र पढ़ता जा रहा था, त्यों-त्यों लोगों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। एक घंटे के भीतर इतनी भीड़ जमा हो गई कि वहां पुलिस का पूरा इंतजाम किया जाने लगा। पुलिस दरोगा खुद उस भीड़ को चीरकर कमाल के पास आया। उसके पैर छू कर गले में फूलों की एक माला पहनाई। दरोगा ने हाथ जोड़ कर कहा—मुझ पर कृपा कीजिए और यह बताइए कि मेरी तरक्की कब होगी ?

कमाल ने मंत्र पढ़ते हुए अपना 'विजिटिंग कार्ड' दरोगा के हाथ में पकड़ा दिया।

—आज रात ग्यारह बजे मुझसे इस पते पर मिलिए।

कमाल वहां से चला गया और सारी भीड़ उसे देखती रह गई।

लाला रस्तोगी के आदमियों ने जब उसे पूरी खबर दी, तो लाला बोला—बकता है, मैं कमाल को खूब जानता हूं, झूठा, मक्कार, बदमाश।

मगर रस्तोगी बिल्डिंग में जैसे-जैसे दाम गिरते गए, वैसे-वैसे लाला का कलेजा सचमुच न जाने कैसे धडकने लगा।

कई डाक्टर बुलाए गए। लाला ने अपना 'चेकअप' कराया। पर कलेजे के धड़कने का कारण किसी की समझ में न आया।

रात के दस बज चुके थे। लाला ने अपने बड़े बेटे सुरेश रस्तोगी से कहा—मुझे किसी भी तरह कमाल के पास ले चलो, वरना मैं बचूंगा नहीं।

लाला को लिए हुए उसकी पांचों मोटर गाड़ियां उन तमाम जगहों पर चक्कर लगाने लगी, जहां कमाल के होने की उम्मीद थी। पर कहीं भी कमाल का अता-पता न चल सका।

दरअसल उस वक्त कमाल लखनऊ-रायबरेली के रास्ते पर अपने मालिक आमीर रजा और उसकी गुजराती बेगम के साथ चहलकदमी कर रहा था।

आमीर रजा की बीवी कह रही थी कि या तो उसे छः हजार रुपये माहवार दिए जाएं, नहीं तो वह लखनऊ में शौहर के साथ ही रहेगी। आमीर सिर्फ चार हजार ही दे रहा था, बीवी छः हजार से नीचे नहीं उतर रही थी। कमाल ने आमीर को समझाया कि पांच हजार में अगर सौदा तय करा दूं तो कैसा रहेगा?

—तुम्हीं बताओ कैसा रहेगा?

कमाल ने कहा—मेरे ख्याल से यह सौदा सस्ता रहेगा। पांच हजार देकर इससे जान छुड़ाइए और लखनऊ में चलकर मजे कीजिए।

इस तरह सौदा तय हो गया। लखनऊ में चारबाग स्टेशन पर चार बजे वाली गाड़ी से बेगम अपने घर के लिए रवाना हो गई।

बेगम को विदा कर कमाल सीधे लाला रस्तोगी के घर आया। लाला को इंजेक्शन देकर बेहोश कर सुला दिया गया था। मगर लाला अपनी बेहोशी में भी कमाल का ही नाम रट रहा था।

कमाल को देखकर लाला के घर में सब खुश हो गए। सुबह जब इंजेक्शन का असर खत्म हुआ और लाला ने अपने सामने कमाल को देखा तो वह गिड़गिड़ाकर बोला—मेरे भाई, मेरे मालिक, मुझ पर दया करो। मैं ऐसी गलती कभी नहीं करूंगा।

कमाल ने कहा—लाला, तुम बड़े होशियार हो। तुम्हारी जन्मकुंडली को मैं संभाल लूंगा। यकीन करो, अब तुम्हें हार्ट अटैक नहीं होगा।

सत्रह

इस बीच अलीरज़ा ने कमाल और अपाला के रिश्ते को लेकर लखनऊ में आयशा बेगम के नाते-रिश्तेदार और खानदान के बीच काफी गलतफहमियां पैदा कर दी थी। मोती महल से लेकर खुर्द महल, जिनकी हालत गरीबी और भुखमरी के कारण खस्ता हो गई थी, फिर भी वे लोग नवाब खानदान के दिन नहीं भूले थे।

हालांकि ये लोग कोई खास काम-धाम नहीं कर पाते थे, मुश्किल से एक वक्त खाना खाते थे, औरतें फटे-हाल खंडहरनुमा चारदीवारी के भीतर किसी तरह दिन गुजार रही थीं, फिर भी औरत-मर्द सब बीते हुए जमाने और बीती हुई बातों को भूल नहीं पाए थे।

हिंदुस्तान की आजादी के इतने साल बीत चुके थे और अब तक उनके बीच तीन बेकार गरीब पीढ़ियां आ चुकी थीं, फिर भी अगर कोई उनके पुराने जमाने की बात कहकर उन्हें भड़काना चाहता था तो वे भड़क उठते थे। उनका यह भड़कना कभी गुस्से की शक्ल लेता तो कभी रुलाई की। लखनऊ में शिया-सुन्नी की हिंसा, दोनों जमातों में इस तरह का पिछड़ापन किसी न किसी तरह उन्हें गुजिश्ता लखनऊ, जो अब भूत-प्रेत बनकर रह गया है, वहीं उनको बांधे हुए था। इस कैफियत को अलीरज़ा साहब खूब जानते थे। उन्होंने ही एक दिन खुर्द महल और मोती महल के बचे-खुचे घरों में जाकर उनके मरहूम बाप-दादों के खाने और पहनने की बात की थी। वे कितने दौलतमंद और शौकीन थे, जैसा खाना उन्होंने खाया, जैसा कपड़ा उन्होंने पहना, आज तक वैसा किसी को नसीब नहीं हो सकता।

अलीरज़ा की बातें सुनकर एक बूढ़ा, जिसके मुंह में एक भी दांत नहीं था, वह मारे गुस्से के कहने लगा कि हमारे खानदान में ऐसा कभी नहीं हुआ।

दूसरा बूढ़ा बोला – हम ऐसा हरगिज नहीं होने देंगे। कमाल और अपाला का रिश्ता हम हरगिज कबूल नहीं करते।

एक तीसरा बूढ़ा अपने पुराने जमाने के नशे में झूमता हुआ न जाने क्या अनाप-शनाप बकने लगा—हमारे खानदान से हकीम साहब का बहुत रब्त-जब्त था। एक दिन हकीम साहब ने हमारे वालिद और चचा को बुला

भेजा कि एक पहलवान की दावत है, आप भी आकर लुत्फ उठाइए। वालिद तशरीफ ले गए और मैं भी उनके साथ गया। वहां जाकर मालूम हुआ कि पहलवान रोज सुबह बीस सेर दूध पीता है, उस पर ढाई-तीन सेर मेवा यानी बादाम और पिस्ते खाता है और दोपहर व शाम को ढाई सेर आटे की रोटियां और एक दरम्याने दर्जे का बकरा खा जाता है। और इसी गिजा के मुताबिक उसका जिस्म भी था···

एक जवान ने डाटकर बुढऊ को चुप कर दिया, तब कहीं जाकर वह चुप हुए।

मगर जो भी हो, अलीरजा उन बचे-खुचे मरियल लोगों को कमाल के खिलाफ भडकाने मे पूरा कामयाब हुआ।

उसके भड़कावे में और भी मियां-मौलवी लोग आ गए। उन सबके दिमाग में अलीरजा यह जहर घोलने में कामयाब हो गया कि कमाल हिंदू है, इसलिए वह काफिर है। काफिर से किसी मुसलमान लड़की का रिश्ता गैर इस्लामी और नापाक है।

अलीरजा साहब गुलफिशा मे खुद यह पैगाम लेकर आए। आयशा बेगम और तीनो बहनो को बताया कि लोग किस तरह कमाल के खिलाफ हैं।

मगर यह कितना दिलचस्प था कि जिस वक्त, अलीरजा साहब गुलफिशा में यह खबर सुना रहे थे, उसी वक्त कमाल हुसैनाबाद के छोटे इमामबाड़े में इकट्ठे खानदानी बूढ़े गरीब मिया-मौलवियों को एक-एक चादर और कंबल बांटता हुआ कह रहा था—जानते हो भाई लोगो, हिंदू बहुत कपडे नही पहनता, त्याग-तपस्या का आदमी होता है। बड़ी खुली जिंदगी वाला है। इसे धीरे-धीरे कपड़ों से बांटा गया और बांधा गया। देखिए न, इसका संगीत, इसकी शायरी···यह कम से कम बल्कि शून्य के आधार से चलता है। यह प्रकृति से संस्कृति की ओर मुखातिब है। यह नंगा है, फक्कड़ है। यह दूसरों की लूट पर नही पला है। इसे यकीन है, अपने आप पर काबू पाने पर···। यह कहता-कहता कमाल वही गाने लगा :

और हम ?
आदमी है बेनजीर
आदमी बोलती आवाज है
बोलता अंजाम है
बोलता ही बोलते के साथ है
बोलता है तभी इंसान है।

आदमी है बेनजीर
आदमी क्या है ?
मजदूर नहीं कारीगर है
वह मरता नहीं जीता है।
वह मजबूर नहीं तकदीर है
हाय बेनजीर है।

वहां बैठे लोग कमाल को देखते रह गए थे। कुछ बातें उनकी समझ में आ रही थी मगर वे पूरी बात नहीं समझ पा रहे थे। काफी लोग हक्का-बक्का उसका मुह देखते रह गए थे।

जब वह महफिल खत्म होने को थी, तभी अलीरज़ा दौड़ते-हांफते हुए वहां पहुंचे थे। दोनों एक-दूसरे को देखकर मन-मन जैसे सब कुछ समझ गए थे। यह बात यहीं तक नहीं थी।

लाला रतनलाल रस्तोगी, हिंदू संगठन के वेद प्रकाश शर्मा, बाबू मिया और संतराम इन सबको मिलाकर कमाल के खिलाफ एक दूसरा ही हौवा खड़ा किया कि कमाल हिंदू था। मुसलमानों ने एक लड़की के चक्कर में फंसा कर उसे मुसलमान बना दिया। कमाल को मुसलमान से हिंदू बनाया जाए।

ये सारी बातें तरह-तरह से घूमघाम कर आमीर रज़ा के पास पहुंचीं।

दिन के दस बजे का समय था। कमाल आमीर रज़ा के घर पर उसके सामने ही बैठा था।

आमीर रज़ा बोला—कमाल, यह सब क्या चक्कर है ?

कमाल ने उत्तर दिया—मेरे मालिक, यही जिंदगी है। सोचिये भला, अगर यह चक्कर न होता तो आपसे मेरी मुलाकात कैसे होती ? मुझसे मेरी अपाला की मुलाकात कैसे होती ?

आमीर रज़ा चुप रहा।

उस चुप्पी को तोड़ते हुए कमाल बोला—मेरे मालिक, हम तरह-तरह की ताकतों और बीमारियों से इस कदर गुलाम हैं कि हम अपने आप न कुछ सोच सकते हैं न कर सकते हैं। कोई जब हमसे जो कुछ कहता है हम उतना ही सोचते हैं और उतना ही कर देते हैं। हमारी हालत उस जिंदा मुर्दे की तरह है जिसे जहां चाहो रख दो, जहां चाहो जला दो। मगर यह मुर्दा अब सड़ रहा है।

यह कहकर कमाल बिलकुल शून्य में देखने लगा, जहां उसकी आँखों में अपाला थी और कुछ नहीं। अगर अपाला उसे न मिली तो एक दिन वह भी इस तरह मुर्दा हो जाता। उसकी चलती-फिरती लाश में से इसी तरह

के कोड़े गिरते रहते कि आदमी, आदमी नहीं है बल्कि हिंदू और मुसलमान है। आदमी को भूख-प्यास नहीं लगती बल्कि एक-दूसरे को देखकर सिर्फ गुस्सा आता है। वह मुहब्बत नहीं कर सकता, सिर्फ नफरत करता है।

एकाएक उसके कानों मे आमीर रज़ा के रोने की आवाज़ टकराई। आमीर रज़ा बच्चों की तरह सिसकियां ले-लेकर रो रहा था। पता नहीं, उसे क्या हो गया था?

कमाल ने बढ़कर उसे अपने अंक में उठा लिया, जैसे वह नन्हा-सा बच्चा हो और कमाल उसकी मां हो। वह उसे दुलारने और पुचकारने लगा। उसे पलंग पर लिटाकर एक गिलास गर्म दूध लाया, उसमें दो चम्मच ब्रांडी मिलाकर उसे पीने को दिया।

दूध पीकर वह धीरे से बोला—मेरे भाई कमाल, मैं तुमसे आज कुछ अर्ज करना चाहता हूं।

कमाल बोला—हुक्म दीजिए, मेरे मालिक।

आमीर ने कहा—पहले वादा करो कि जो मैं कहूंगा, तुम उसे मान लोगे और कबूल कर कहोगे, जी हां, बोलो, कहो, जी हां।

कमाल की जिंदगी में ऐसे लमहे कई बार आये हैं और हमेशा उसने उन लमहों को कबूल किया है। हमेशा 'जी हां' कहा है।

उसी तरह उसने कहा—जी हां, हुजूर, मुझे कबूल है।

आमीर ने कहा—अब से तुम मेरे नौकर, मुलाजिम नहीं हो। मैं अपने सारे कारोबार का तुम्हें मालिक बनाता हूं और मैं खुद तुम्हारा नौकर, मुलाजिम होता हूं।

कमाल यह सुनकर सन्न रह गया।

काफी देर बाद वह बोला—मेरे दोस्त, मैं तुम्हारी बात कबूल करता हूं। मैंने तुम्हें वचन दे दिया है, यह भी मुझे याद है। हांलाकि इसमें कोई गुंजाइश नहीं है, मैं तुमसे यह साफ कहना चाहता हूं। कोई किसी के बनाने से किसी चीज का मालिक नहीं हो सकता। मिल्कियत अपनी कमाई की चीज है। मुझे ऐसा लगता है हालांकि आपने कभी नहीं बताया है कि आपको यह सारा कारोबार किसी दूसरे से मिला। यह आपकी मेहनत की कमाई नहीं है।

आमीर ने कहा—यह तुम्हें कैसे पता लग गया?

—यह साफ जाहिर है।

—हां, यह मेरे वालिद की कमाई थी।

यह सब उन्हीं का कारोबार था।

—जाहिर है, आपके पिता की सिर्फ एक बीवी थी, और कहीं कोई रखैल नहीं थी।

—बिल्कुल सही बात है।

—तो मेरे दोस्त तुम यह मानते हो न। कोई किसी को मालिक नहीं बना सकता। आदमी खुद मालिक होता है। मिल्कियत दी नहीं जाती, हासिल की जाती है—लड़कर, कमाई कर। देखो न, अंग्रेजों ने इस मुल्क की आजादी हमें दी, तभी तो हम आजाद है। उनके ज़माने में हम सब सिर्फ अंग्रेजों के ही गुलाम थे। अब इस दी हुई आज़ादी में हम दुगुने गुलाम हो गये, अंग्रेजों के और अपनों के। यह दोहरी गुलामी उसी तरह है, जैसी तुम्हारी जि[illegible] हो कि इन दोनों के मालिक हो, [illegible] न तुम्हारा जी काम में लगता है [illegible] र एक बीवी और रखैल रखते जाते हो, उतनी ही तुम्हारी भूख बढती जाती है…।

कमाल की बनावट ही ऐसी थी कि वह कभी भी बेकार बैठकर कुछ सोचता नहीं था। वह जो काम कर रहा होता उस वक्त वही हो जाता। कमाल के काम में कमाल का फर्क कर पाना नामुमकिन था। वह कोई भी काम करते हुए कभी नहीं सोचता था। और सोचते हुए कभी काम नहीं करता था। उसका मानना था कि जो लोग काम नहीं करते, वही सोचते है। सोचना अपने आप मे मुकम्मल काम है।

कमाल ने सोचा कि आमीर रजा ने ऐसा क्यों किया ? तभी उसके पीछे से सचमुच आमीर रज़ा की आवाज़ आई—हां बताओ, कमाल, मैंने ऐसा क्यों किया ?

कमाल उसे देखता रह गया।

आमीर रजा ने फिर पूछा—बताओ, ऐसा मैंने क्यों किया ?

कमाल बोला—तुमने कुछ किया नहीं, बस तुमसे हो गया। ठीक उसी तरह, जिस तरह तुमसे तमाम चीजें होती रहती हैं। जैसे औरतों के साथ सोना, खाना-पीना, व्यापार करना, वगैरह-वगैरह। तुम खुद कभी कुछ नहीं करते, यह मैंने पिछले सालों से तुम्हारे साथ रहकर देख लिया है। तुम कभी अपने मालिक नहीं रहे हो। दौलत को तुमने अपनी ताकत समझ रखा था। आज जब तुम्हारे पास धन नहीं रह गया और व्यापार में तुम्हारी तबीयत नहीं लग रही, तो तुमने मुझे अपना मालिक बना लिया। मेरे दोस्त, मैंने जी-जान से तुम्हें अपना मालिक समझा। मेरी हमेशा यही कोशिश रही कि तुम अपने आपको अपना मालिक समझो, लेकिन अफसोस…।

—कमाल, मैं तुमसे एक सवाल पूछना चाहता हूं।

—पूछिए।

—क्या तुम बता सकते हो कि इस पर्दे के पीछे कौन है ?

—जी हां, मैं उसकी सांसें सुन रहा हूं। पर्दे के पीछे जो लड़की खड़ी है, मैं उसके दिल की धड़कन सुनने की कोशिश कर रहा हूं। इसका नाम है, गुलनार।

ऐसा कहते-कहते कमाल ने पुकारा—गुल …।

पर्दा हटाकर गुल उसके सामने आ खड़ी हुई।

—तुम यहां क्या कर रही हो ?

गुल सहमी हुई बोली—मैं यहां लाई गई।

—कौन लाया ?

गुल जवाब न दे सकी।

आमीर रजा हंसकर बोला—मैं ले आया इसे। तुम्हें यह दिखाने के लिए कि मैं मालिक हूं। मैं जो चाहता हूं कर सकता हूं। जिसे पाना चाहता हूं पा सकता हूं।

बड़े शान से आमीर रजा ने फिर कहा—बता सकते हो, इस पर्दे के पीछे कोई और भी लड़की है ?

—जी हां, एक लड़की और है, जिसका नाम है कायनात।

कमरे में कायनात जाग गयी थी। वह सांसें रोके पड़ी थी। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि वह कमाल की आवाज सुन रही है। वह सोच रही थी कि कमाल को सब बातें कैसे मालूम हो जाती हैं ? यह सोचते ही कायनात के मुख से हल्की-सी चीख निकली। मसहरी के ऊपरी हिस्से पर उठता-गिरता कोई चिड़िया का बच्चा चीं-चीं कर रहा था। वह डर के मारे कमरे से बाहर जा खड़ी हुई और सोचने लगी कि यह सच है या सपना ?

आमीर रजा कमाल के सामने से हट गया। वह दोबारा मकान में नहीं गया। बाहर, बरामदे से भी बाहर खुले लॉन में एक टूटी कुर्सी के ऊपर बिल्कुल एक नौकर की तरह बैठ गया।

कमाल ने गुल को ताका। गुल कांप गयी। उसकी बोलने की हिम्मत नहीं हुई।

कमाल बोला—गुल, तुम्हें मुझ पर पूरा यकीन करना चाहिए। मगर वह यकीन तभी कर सकती हो जब तुम्हें अपने ऊपर यकीन हो। क्या तुम्हें पता है कि तुम अपाला की बहन हो ? अपने आप पर यकीन करने से ही तुम्हें पता चलेगा कि तुम क्या हो ?

गुल धीमी और बारीक आवाज में बोली—मैं आपकी बातें सुन रही हूं। मैं आपको जानती हूं और मुझे आप पर यकीन है। मैं कायनात के साथ यहां आई और यकीन कीजिए मैं जब से यहां आई हूं कमरे के दरवाज़े और पर्दे के बीच की दराज से सिर्फ आपको ही देख रही थी।

कमाल ने कहा—देखूं तुम्हारा दायां हाथ, ताकि नाखूनों के रंग से मैं तुम्हारी बीमारी का सबब जान सकूं।

कमाल ने गुलनार का नाजुक हाथ थाम लिया। कुछ देर तक उसकी हथेली को देखता रहा। मन ही मन सोच रहा था—यह कितनी बेवकूफ लड़की है।

थोड़ी देर बाद कमाल ने गुल की सबसे छोटी उंगली का नाखून आमीर रज़ा को बुलाकर दिखाया।

—हालांकि यह नाखून भी बिल्कुल दूसरे नाखूनों जैसा ही है, लेकिन देखो, इसमें कुछ अजीब चीज़ है।

नाखून को दबाते हुए कमाल ने पूछा—कहां दर्द होता है ?

लंबी सांस लेकर गुल बोली—मेरा दिल गम और चाहत के दर्द से भरा है।

—तुम्हारे गम की वजह ?

—या अल्लाह !

कमाल बोला—गुल, फिक्र न करो। जिससे तुम मुहब्बत करती हो, वह तुम्हारी बात सुन रहा है। तुम्हारी खुशी का दिन बहुत नज़दीक है।

इस तरह कमाल ने पहली बार गुल के मुंह से अल्लाह का नाम सुना।

जाते-जाते गुल आमीर रज़ा से बोली—झूठा ! दगाबाज ! अब तू मुझे नुकसान नहीं पहुंचा सकेगा, क्योंकि मैं जो कुछ जानना चाहती थी, जान गई। कैसे तुम कमाल से छिपकर लोगों के घरों में घुसते हो ? कैसे लड़कियों को यहां लाते हो ? सब रास्ते और दरवाज़े, वापसी के तरीके, मुझे मालूम हो गए।

गुल चली गई। कमाल उसे जाते हुए देखना चाह रहा था, मगर धूप की वजह से पूरी तरह देखने में कठिनाई हो रही थी। एक कबूतर लखनऊ के आसमान में एक कोने से दूसरे कोने की ओर उड़ गया। कमाल ने देखा—सामने की इमारत की छत पर कोई जवान लड़की खिंचे तार पर ब्लाउज डाल रही थी। कमाल ने मन-ही-मन कहा—औरतों की साड़ी के आंचल में वशीकरण मंत्र होता है।

आमीर रज़ा ने कमाल से पूछा—क्या मैं इतना बुरा हूं ?

कमाल ने कहा—अगर मैं अब मालिक हूं और तुम मेरे नौकर हो तो

चलो, कबूल करो—तुमने अब तक क्या किया है। वरना मैं तुम्हें अपने साथ नही रख पाऊंगा, न मैं तुम्हारे साथ रहूंगा।

आमीर रजा ने कहना शुरू किया—मेरा ख्याल है, मैं मजबूर लोगों को अपना शिकार बनाता हूं। उनसे काम लेता हूं। उनका हर तरह से इस्तेमाल करता हू। हर गलत काम करना मुझे अच्छा लगता है। हालांकि हर गलत काम को मैं पाप समझता हू। लेकिन पाप करने और कराने में मुझे मजा आता है। पहले छोटा पाप, फिर बड़ा पाप। मेरा ख्याल है कि हसीन लड़कियो को पाप-कर्म के पिंजड़े मे कुछ दिन अटकाये रखो, फिर वे हमेशा के लिए पिंजड़े की पंछी बन जाती है। पिंजड़े का दरवाजा खोल देने पर भी वे नही भाग सकती, क्योंकि वे उड़ नही सकती।

—शुक्र है आमीर, तुमने आज कुछ किया तो सही।

यह कहकर कमाल उठ खड़ा हुआ और आमीर को आर्डर दिया—जाओ, नहा-धोकर साफ कपड़े पहन कर आओ और फौरन मेरे साथ चलो।

जब तक आमीर कपड़े बदल कर लौटा, कमाल बाहर सड़क पर बच्चो के साथ गुल्ली-डण्डा खेलता रहा।

आमीर को अपने साथ लेकर कमाल वहा से चल पड़ा।

अमीनाबाद रजा ट्रेडिंग कारपोरेशन काफी दिनो से बंद था। कमाल ने आमीर रजा से कहा—चलो, पहले हम अपने दफ्तर की सफाई करें।

आमीर रजा थककर चूर हो गया था। वह हांफते हुए बोला—ऐसा जलील काम मैंने कभी नही किया।

कमाल बोला—तुम इस काम को जलील कहते हो? जो काम को जलील कहता है वह खुद जलील है। तुम ऐसा इसलिए कहते हो कि तुमने आज तक कोई काम नही किया।

आमीर कुछ बोलने ही जा रहा था कि कमाल ने उसे डांटते हुए कहा—अय्याशी करना कोई काम नही है। जिस काम से आदमी नीचे गिरता चला जाए वह कोई काम नही है। नीचे गिरते जाने का नाम ही 'दोजख', नरक है। दोजख यहीं है जहां आदमी कुछ करने के नाम पर बराबर खुद नीचे गिरता जाता है और अपने साथ दूसरों को भी नीचे गिराता है। कान खोलकर सुन लो, ईमान के अलावा इस दुनिया मे और कुछ नही है। ईमान ही खुदा है, ईश्वर है, ईमान का सबूत हमारा काम है। जिसने अपने काम मे बेईमानी की, उसके लिए इस दुनिया मे कोई जगह नही है। जो दूसरो की मेहनत से ऐश करना चाहता है, उसे खुदा कभी माफ नही करता। देखो न, लखनऊ के खडहरो को, नवाबी इमारतों को, खुदा ने क्या किसी को माफ किया? लखनऊ मे बेईमानी की वजह से

ही दरिंदों की लड़ाइयां हुई हैं। ये लड़ाइयां सिर्फ सल्तनत और अमीरों के दरबार तक ही नहीं, बल्कि पूरे अवाम तक फैली हुई थी। चूंकि अमीर कामचोर थे इसलिए कामचोरी ही ईमान का दर्जा लेने लगी। दरिंदों की लड़ाई इसी का एक सबूत है। इस लड़ाई को अमीर-गरीब सब शौक से मनाने लगे। कामचोर, शौकीन, लड़ाई के नाम पर दरिंदों की लड़ाई में हिस्सा लेने लगे। मुर्गे, बटेर, तीतर, लवे, बुलबुल, लाल, कबूतर और तोते, इनकी लड़ाइयां देखकर लखनऊ के लोग अपनी बहादुरी पर नाज करते थे। उनका ख्याल था कि मुर्गे जैसी बहादुरी दरअसल शेर मे भी नहीं है। वह मर जाता है मगर लड़ाई से मुंह नहीं मोड़ता।

यह कहते-कहते कमाल हंस पड़ा—किसी नवाब ने मुर्गे जैसी कोई लड़ाई की ? नहीं की, नहीं की। क्योंकि वे काम को बेईमानी समझते थे। जिसमे ईमान नहीं, वह कैसा मुसलमान ?

आमीर रज़ा ने कहा—अब मैं इसी दफ्तर में ही रहूंगा। तुम उस मकान में रहोगे जिसमें मैं रहता था। तुम जो मुझे हुक्म दोगे, मैं उसे पूरा करने की पूरी कोशिश करूंगा। मेरे मालिक, तुम जो कुछ कहोगे, मैं उस पर पूरा अमल करूंगा।

कमाल बोला—बकवास मत करो। मैं तुम्हें नीचे से ऊपर तक जानता हूं। मैं तुम्हारा बातों मे आने वाला नहीं। तुम कभी भी मुझे मालिक नहीं कहोगे, क्योंकि मैं कभी भी तुम्हें अपना नौकर नहीं मानूंगा।

यह कहते हुए कमाल ने आलमारी खोलकर वे फाईलें—जिसमें कंपनी के सारे हिसाब-किताब के कागजात थे, दिखाते हुए कहा—तीन दिनों के भीतर तुम्हें अपनी कंपनी का सारा हिसाब-किताब, नफा-नुकसान, लेन-देन सब तैयार करना है। मैं तीन दिनों बाद यहां फिर आऊंगा और तुमसे हिसाब लूंगा। तुम्हारी जिम्मेदारी तुम्हारे ही ऊपर है।

शाम का वक्त था। कमाल को खबर मिली थी कि पुलसरात के पास रतन रस्तोगी के नए गेस्ट हाउस में, उसके खिलाफ कोई मीटिंग हो रही थी। कमाल बड़े आराम से कुछ गुनगुनाता हुआ पैदल ही पुलसरात के पास जा रहा था। एक जगह गली के नुक्कड़ पर उसने देखा, नौची खड़ी हुई थी। उसकी चंचल आंखें न जाने किसकी तलाश रही थी। कमाल इन औरतों को खूब पहचानता है। वह कहता है, ये रात की चिड़ियां हैं। इनकी आंखें शिकार खोजती रहती हैं। उन्हें पता चल जाता है कौन क्या है और क्या नहीं।

कमाल उसके पास आकर बोला—माना कि मैं तुम्हारा शिकार नहीं हूं। पर हमदर्द तो हो सकता हूं। मैं पूछ सकता हूं कैसी कट रही है ज़िन्दगी ? जीना तुम्हें कैसा लग रहा है ? रुपये के बाज़ार के बारे में तुम्हारा

क्या ख्याल है ? मेरी भीतर की जेब में, इस समय दो सौ रुपये हैं। इनकी अधिक जरूरत किसे है ? तुम्हें या मुझे ?

चाभी भरे खिलौने की तरह वह कमाल के साथ-साथ चलने लगी।

कमाल ने पूछा—नौची, तुम्हें कौन खींच रहा है ? पैसा खींच रहा है। देखो न, हम दोनों को पैसा ही सड़क पर खींच लाया है।

नौची बोली—कहां जा रहे हो ?

कमाल ने कहा—एक काम से जा रहा हूं।

—जाहिर है, तुम…।

नौची हंस पड़ी। कमाल तेजी से अकेले आगे बढ़ गया। थोड़ी देर बाद कमाल रतन रस्तोगी के गेस्ट हाऊस के दरवाजे पर पहुंच गया। दरवाजे के बाहर कई लोगों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। उसे ऐसा लगा, जैसे मोल्डिंग मशीन की आवाज सुनाई दे रही हो। उसने बाहर से ही झांक कर देखा, हर आदमी बोलकर नहीं, इशारे से बातें कर रहा था।

कमाल के अंदर दाखिल होते वक्त, एक मोटा-तगड़ा आदमी उसे लगभग धक्का देता हुआ निकल पड़ा। उसने बेतरह पी रखी थी।

कमाल बस बड़े कमरे मे दाखिल होकर उन सबके सामने खड़ा हो गया, जो उसे इस तरह देखकर हड़बड़ा गए थे। बीच में बैठे थे अलीरजा साहब, उनके अगल-बगल बैठे थे, रतन रस्तोगी, आमीर रज़ा, वेदप्रकाश शर्मा, बाबूसिंह और चार-छः लोग जिन्हें कमाल पहचान न पाया। कमाल को देख वे खामोश हो गए थे लेकिन उनके गाल फड़कने लगे थे। नथुने फूल उठे थे और आंखों से चिंगारियां बरसने लगी थीं। फिर भी एक अजब खामोशी छाई हुई थी।

एकाएक कमाल हाथ उठाकर बोला—जाहिलो, बदमाशो ! ! क्या तुम समझते हो कि हमें यह नहीं मालूम कि किसी का सिर काट लेने या रस्सी बांधकर उसका गला घोंट देने से वह जिंदा नहीं बच सकता ? लेकिन ऐसा करने के लिए उस आदमी को पकड़ पाना जरूरी है। और तुम बदमाशो, बेवकूफों, जाहिलों और काहिलों ने एक लफ्ज भी इस बाबत नहीं कहा कि उसे पकड़ा कैसे जाए ? पड़े-पड़े खाट तोड़ने वाले पेटुओ ! बेपेंदी की अपनी जेबों को भरने वालो ! लानत है तुम सब पर ! लाला रतन रस्तोगी ! निकालो, खदेड़ो इन सबको यहां से, निकाल दो सबको बाहर !

अलीरजा ने गुस्से से कहा—ये पागल है, पकड़ लो इसे।

लोग आपस में फुसफुसाने लगे थे—यह हरामजादा, यह बदमाश, हमारे ऊपर इसने कैसी आफतें ढाई है !

लोग उम्मीद भरी निगाहों से कभी अलीरजा की तरफ देखते, कभी लाला रतनलाल रस्तोगी और कभी आमीर रजा की तरफ। मगर किसी की यह हिम्मत नही हो रही थी कि कमाल से बातें कर सके। हालाकि उस मीटिंग मे लोग यही फैसला कर रहे थे कि कमाल को गुडों से पिटवाया जाए। उसे किसी तरह लखनऊ से निकलवाया जाए या उसे जान से मार दिया जाए। क्योकि उन सबने यह कोशिश करके देख लिया था कि कमाल के खिलाफ न तो मुसलमान लोग भड़क रहे थे, न हिंदू लोग। कमाल और अपाला की शादी से भी कोई मसला नहीं बन पाया था। लोग कहते थे कि कमाल एक निहायत ईमानदार और रहमदिल आदमी है। उसने आज तक कभी किसी का नुकसान नही किया है। किसी के दुख-दर्द मे शरीक होने वाला वह एक ऐसा इंसान है, जिस पर लोग खुशी से ताज्जुब करते है। वह किसी से डरता नहीं। डरता है तो सिर्फ खुदा से। खुदा और ईश्वर में कोई फर्क नहीं, वह हर तरह से यही साबित करता है। पूरे अवध मे आजादी से पहले अल्लाह और ईश्वर मे कभी इस तरह फर्क नही किया गया था। पूरे अवध में और खासकर लखनऊ और फैजाबाद मे, अल्लाह और ईश्वर, हिंदू और मुसलमान, मुसलमान और मुसलमान, हिंदू और हिंदू में जो इस तरह फर्क किया गया है, यह गहरी चाल है सियासत करने वालों की और जरूरत से ज्यादा धन कमाने वालो की।

कमाल ने कहा—बोलो, तुम लोग क्या कहना चाहते हो ? जो कहना हो, मेरे मुंह पर कहो।

वेद प्रकाश शर्मा बोले—तुम किस जाति के हो, तुम्हारा मजहब क्या है ?

कमाल ने कहा—जिसे जो कहना हो कह डालो। मैं सबको एक साथ जवाब दे दूगा।

बाबू सिंह बोले—तुम बडे खतरनाक आदमी हो। तुम लखनऊ से बाहर निकल जाओ। नही तो हम तुम्हें जिंदा नही छोड़ेंगे।

आमीर रजा गुर्राकर बोला—इसने मेरा सारा कारोबार चौपट कर दिया। इसे पुलिस के हवाले कर दो।

लाला रतन रस्तोगी बोले—वाकई, तुमसे हम सबको खतरा है। इसलिए हम चाहते है कि तुम लखनऊ से हमेशा के लिए निकल जाओ।

इसके बाद सब लोग आपस में न जाने क्या-क्या कहते रहे। उस शोर-शराबे को चीरती हुई कमाल की आवाज गूंजी—ठहरो, अभी हमने बात खत्म नही की। तुम सब बीमार हो, यह शायद तुम लोगों को पता नही है। अगर हम आपस में मिलते-जुलते होते तो हमे इस बीमारी का पता

लग जाता। सुनो, तुम सबको मैं एक कहानी सुनाता हूं। किसी राजमहल मे कोई चोर घुस आया। महल की बेगमों, नौकरानियों और खोजाओ ने शोर मचाया—चोर चोर चोर। तलाश शुरू हुई। पहरेदारों ने महल का कोना-कोना छान मारा। हर तरफ मशालें जल रही थी और हिलती हुई रोशनी फेंक रही थी। इस तलाश में सबसे ज्यादा जोश से काम कर रहा था वह चोर खुद यानी जिसकी तलाश थी। कभी वह कालीन उठाता, कभी संगमरमर के हौजों में छड़िया डालकर देखता, कभी शोरगुल मचाता हुआ तेजी से इधर-उधर भागता। आखिरकार वह चोर बादशाह के आरामगाह मे घुसकर बोला—हुजूर, चोर महल से निकल भागा।

बाहर तोप गरज उठी।

यह किस्सा सुनकर लोग बड़बडाने लगे—यह सबको बेवकूफ बनाता है। यह चोर, दगाबाज, चार सौ बीस है'''।

कमाल हाथ उठाकर बोला—दोस्तो, आप मुझे चाहे जितनी गालिया दें, चाहे जितनी सजाए सुनाए, इससे कोई फर्क नही पड़ता, न तुम सबको, न मुझे। इससे सच्चाई मे कोई तबदीली नही आ सकती। सच झूठ नहीं हो सकता, झूठ सच नही हो सकता। तुम लोग सच्चाई क्यों नहीं कबूल करते ? पानी पीटने से क्या फायदा ? सीधी सच बात यह है कि तुम लोग लखनऊ की चिकनकारी करने वाली लड़कियो और औरतों को लूटना चाहते हो। तुम्हारे लिए ये गरीब औरतें, खासकर मुसलमान लड़कियां, जो अब भी पर्दे में रहती हैं, उन सबको अपना शिकार बनाना चाहते हो। 'कोआपरेटिव' के नाम पर एक तरफ सरकारी खजाने और दौलत पर डाके डाल रहे हो। दूसरी तरफ जिन्हें रोजगार मिलना चाहिए, जिन्हें अभी जिंदगी जीने का हक है, उन सबका हक तुम सब मारना चाहते हो।

बाबू सिंह ने गुस्से से कहा—अबे, तू कौन होता है, उन सबका दलाल ?

कमाल ने बड़ी संजीदगी के साथ कहा—दोस्तो, मैं जो कुछ भी हूं, तुम्हारे सामने हूं। तुम लोग मेरे साथ जो कुछ भी करना चाहो, कर सकते हो। लो, मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूं। मैं कुछ नही हूं इसलिए सब कुछ हूं। आइए, मिलकर मुझे मारिए। गालिया दीजिए। पुलिस के हवाले कीजिए। हिंदू और मुसलमान के झगड़े कराइए।

कमाल चुपचाप उन सबके सामने खडा रहा। वे सब एक-दूसरे का मुह देखते रहे। कमाल चुपचाप वहां से चला गया।

कमाल वहां से सीधे रजा ट्रेडिंग कारपोरेशन के दफ्तर में आया।

पूरे दफ्तर में झाड़ू-पोंछा किया। एकाउंट्स के रजिस्टर में कंपनी का हिसाब-किताब देखने लगा।

करीब एक घंटे बाद आमीर रज़ा वहां आया।

कमाल ने कहा—कहो, दोस्त कैसे हो?

इस सवाल को सुनते ही पहले तो आमीर रज़ा काफी देर तक चुप रहा। फिर सिर झुकाकर बोला—देख लिया न, मैं किस कदर बीमार हूं। मुझ पर क्या तुम अब भी ऐतबार कर सकते हो? क्या अब भी मैं तुमसे माफी मांगने का हकदार हूं? देखो, मैं बिल्कुल बर्बाद हो गया हूं।

कमाल ने थोड़ा प्यार, थोड़ा गुस्सा दोनों को मिलाकर कहा—घबराओ नहीं, हर बीमारी की दवा है। तुम फौरन जाकर पूरे एक घंटे तक स्नान करो। धुले कपड़े पहनकर मेरे सामने आओ। फिर हम सब एक साथ खाना खाएंगे। मैं आज तुम्हारे लिए अपने हाथ से खाना बनाऊंगा।

नहा-धोकर जब आमीर रज़ा बाहर आया तो दफ्तर के कमरे में उसे टेबल पर परोसा हुआ खाना मिला।

आमीर ने पूछा—यह खाना कहां से आया?

—आराम से खाना खाओ और अल्लाह का शुक्र करो।

आमीर ने ताज्जुब से देखा, वहां सामने अपाला खड़ी थी। आमीर ने अपाला को देखकर सिर झुका दिया। उसने अपाला को इन चार सालों में सिर्फ तीन बार देखा था। जब पहली बार देखा था तब वह किस कदर बीमार, बदशक्ल लगी थी। दूसरी बार देखा था तो उसकी बीमारी काफी हद तक दूर हो चुकी थी और शक्ल में भी तबदीली आ रही थी। आज तीसरी बार जब देखा तब उसे लगा जैसे किसी जलती हुई शमा को देख रहा हो। उसे लगा, जैसे अगर वह उसके सामने थोड़ी देर और रहा तो जलकर खाक हो जाएगा।

आमीर वहां से बाथरूम में चला गया।

अपाला ने कहा—लाओ, यह काम मैं किए देती हूं।

कमाल के मुंह से निकला—क्या तुम हिसाब-किताब करना जानती हो? देखो, एकाउंट्स के ये तीन रजिस्टर हैं। इन तीनों में से कोई भी रजिस्टर सही नहीं है।

अपाला बोली—गलत काम का सही रजिस्टर तो हो नहीं सकता। हिंदुस्तान का मुसलमान यही सोचने को मजबूर है कि यह मुल्क हमारी ईमानदारी के लिए नहीं बना है।

कमाल बोला—तुम हिंदुस्तान की राजनीति को समझती हो?

अपाला ने निगाह उठाकर कमाल को इस तरह से देखा, जैसे कह

रही हो कि मुझे कुछ-कुछ मालूम हो गया है।

पिछले साल इन्ही दिनो लखनऊ के गोलागंज वाले मकान में अपाला की बुआ की लड़की की शादी मे रिश्तेदारों के बीच बड़ा झगड़ा हुआ था। औरतों ने आयशा बेगम, तहमीना और गुल, सबके खिलाफ बहुत सारी उल्टी-सीधी बातें कही थी। मर्दों ने गुलफिशां में चिकनकारी के कारोबार और कमाल-अपाला के रिश्ते को लेकर जितनी छोटी-छोटी बातें की थी, उन सबको याद कर तब कितनी तकलीफ हुई थी।

आयशा बेगम ने तब रोते हुए कहा था, अंग्रेज़ अफसर जो हमारे गुलफिशां में डिनर खाने आते थे, उसे गोलागंज वाले क्या जानें? वे अंग्रेज अफसर जिनको सिखलाया गया था कि लखनऊ वाले, ये अवध के बाशिन्दे, जब तुम्हारी कोठी पर सलाम के लिए हाजिर हों तो इन्हें बरामदे मे ही बैठाओ। साथ ही यह भी सिखलाया गया था कि सबसे पहले खानदान के बारे मे जान लो। ऊंचे खानदान के लोगों को ही ड्राइगरूम में बुलाओ। बाकी लोगो को सिर्फ खड़े-खड़े ही डाली लेकर वापस कर दो। लखनऊ के वही अंग्रेज अफसर गुलफिशां में डिनर खाने आते थे। अपाला ऐसे गुलफिशा मे जन्मी थी।

अपाला मुस्कराकर बोलती—हाय अम्मीजान!

एक दिन उसने कमाल से कहा था—देखो, पंडित नेहरू ने बच्चो की तरह एक सपना देखा था। हालांकि, मुस्लिम समाज पर हिन्दू समाज की तुलना मे कही ज्यादा फ्यूडल तत्व छाया हुआ था, मुसलमानों का निम्न मध्य वर्ग, औद्योगिक रूप से पिछडा हुआ है। लेकिन चूंकि उनके यहा समाजी रिश्तों की चेतना ज्यादा मजबूत है, इसलिए ये लोग हिन्दू लोअर मिडिल क्लास की तुलना में समाजवाद के रास्ते पर अधिक तेज़ी से आगे बढ़ेंगे। मुल्क का फ्यूडल तत्व यह भी नही चाहता कि जनसाधारण आर्थिक रूप मे स्वतन्त्र हो। इसलिए उन्होने ब्रितानी सरकार से साजिश कर रखी है। मिडिल क्लास के इंटेलिजेंशिया में फासिज्म के तत्व भी उभर रहे हैं। इन सब खतरों का मुकाबला करने में हमें अपनी पूरी ताकत लगा देनी चाहिए। पंडित नेहरू बहुत जबर्दस्त सोशलिस्ट थे।

इस तरह की बातें अब कमाल और अपाला में अक्सर हो जाती थी। लोगों में बातें होने लगती थी।

एक दिन अपाला कुछ इस तरह की बातें कह रही थी तो कमाल ने कहा था—जो असली हिंदुस्तान की दुनिया है, उसके बारे में नेहरू को जरा भी पता नही था। बल्कि यों कहना चाहिए कि अंग्रेजो ने उन्हें असलियत का पता ही नही लगने दिया। वे बेचारे ख्वाब ही देखते रह गए।

कादा, उन्होंने असली हिंदुस्तान की असली दुनिया देखी होती, जो नीचे से ऊपर तक बर्बाद पड़ी हुई है। यह दुनिया आसाम और दक्षिण भारत के चाय और कहवे के बागों में कानपुर, बंबई और अहमदाबाद और इस मुल्क के कल-कारखानों में है। यही असली हिंदुस्तान है—काम करने वाले मजदूरों मे गांव में रहने वाले किसानों और कारीगरो के बीच। पंडित नेहरू ने फिर भी अपने हिंदुस्तान को खोजने की और जानने की कोशिश तो की थी। मगर नेहरू के बाद के राजनेता अपनी कुर्सी और प्रधानमंत्री की चापलूसी के अलावा कुछ भी तो नही जानने की कोशिश करते। यहा तक कि इस मुल्क के कम्युनिस्ट लोग भी नहीं, खासकर बंगाल के कम्युनिस्ट। लोगों को क्यों नहीं पता लगने दिया जाता कि खेती किसानी के सिलसिले मे अंग्रेजी हुकूमत ने अलग-अलग प्रांतों मे तरह-तरह की नीति अपना रखी थी। बंगाल में जहा उन्होंने मुसलमानों से हुकूमत छीनी थी, वहां मुसलमानों को सब तरह से बिल्कुल तबाह करके हिन्दुओं को उनके स्थान पर ताकतवर बनाया था। पंजाब उन्होंने सिक्खो के हाथों से लिया था, लिहाजा यहा उन्होने मुसलमानो को बढावा दिया।

उत्तर प्रदेश के हिन्दू मुसलमान, राजा नवाबो ने चूंकि अंग्रेज़ों की हुकूमत के खिलाफ लड़ाई लडी थी इसलिए यहां हिन्दू-मुसलमानों को जितना लड़ाया गया, वह बेमिसाल है। पूरे उत्तर प्रदेश को मज़हब और तालीम से तबाह कर अंग्रेज़ो ने यही, अवध मे, एक ओर पाकिस्तान बनाने का नक्शा तैयार कराया और दूसरी ओर यहीं राष्ट्रीय सेवक संघ को मजबूत किया। जो सूबे सबसे अधिक समय से अंग्रजो के अधीन थे, वे सबसे अधिक तबाह थे बंगाल, बिहार, उडीसा, मद्रास। बंगाल में बराबर अकाल पड़े और पड़ते रहेंगे। क्योंकि यहा के लोग सोच-विचार करने वाले हैं। इनमें गुस्सा और भावुकता ज्यादा है, इसलिए इनकी दवा भुखमरी है। पंजाब अंग्रेज़ों के हाथ में सबसे आखिर में आया, इसलिए सबसे खुशहाल सूबा यही था, जिसे अब सरकार तबाह करने पर लगी हुई है।

एक दिन गजब हो गया।

बंबई से कोई पुलिस अफसर आया। आमीर रज़ा गिरफ्तार हो गया। पुलिस उसे बंबई ले गई। आमीर की इस गिरफ्तारी की बात सिर्फ कमाल को पता थी। दरअसल उसे शुरू से ही इस बात का अंदेशा था कि आमीर तमाम तरह के उल्टे-सीधे गलत-सही धंधे करता है। इतनी शादियां करने और इतनी रखैलें रखने के पीछे उसका कोई गहरा डर ही तो था जिससे वह बचना चाहता था। अपनी जिन्दगी के बारे में टुकड़े-

टुकड़े करके उसने कुछ इधर-उधर की ऐसी तमाम बातें बताई थीं जिन्हें एक धागे में बांधकर कमाल उसे अक्सर देखने की कोशिश करता था। यकायक आमीर की इस गिरफ्तारी से उसके सामने बहुत सारी बातें साफ हो गईं और साबित हो गया कि डरी हुई अकेलेपन की जिन्दगी गुनाहों की जिन्दगी होती है। ऐसा आदमी बिल्कुल अकेला होता है। न उसकी कोई बीवी होती है, न कोई महबूबा, न कोई रखैल। यहां तक कि कोई रंडी भी उसकी नहीं होती। क्योंकि वह खुद अपना नहीं होता।

कमाल ने अपाला को आमीर की गिरफ्तारी की बात बताई। यह भी बताया कि उस पर 'स्मगलिंग' का केस है। वह इसी गिरफ्तारी से बचने के लिए ही बिजनेस की आड में लखनऊ की गलियों मे छिपा हुआ था। *लखनऊ में उसकी जिन्दगी, उसकी असली जिन्दगी की परछाईं थी।*

आमीर की गिरफ्तारी की बात बिल्कुल छिपाकर, कमाल कायनात से मिला। उसे रज़ा ट्रेडिंग कारपोरेशन के दफ्तर मे ले आकर आमीर की उसी कुर्सी पर बिठाकर बोला—यह कुर्सी तुम्हारे लिए है। तुम अपने भेजे से काम लो तो कुछ बात बन सकती है।

—*क्या बात ? मेरी समझ मे कुछ नहीं आ रहा।*

—*ऐसा ही होता है। पहले किसी को कुछ समझ में नहीं आता।* धीरे-धीरे बात समझ में आ जाती है या यकायक बात साफ हो जाती है।

कमाल की ये बातें सुनकर कायनात परेशान होने लगी। वह पूछने लगी कि आमीर कहां है ?

कमाल ने जवाब दिया कि वह बाहर गया हुआ है।

वह पूछती—बाहर माने कहा ?

कमाल कहता—बाहर माने भीतर, भीतर माने बाहर।

कायनात उतनी टेढ़ी नहीं थी, जितना कि उसे अब तक हो जाना चाहिए था।

कमाल जितनी ही उसे जिम्मेदारियां देना चाह रहा था, वह उतना ही भाग रही थी। वह सिर्फ इतना ही कहती—मैं तो तो उससे शादी करके उसकी बीवी कहलाना चाहती हूं। वह जब भी चाहे मुझे तलाक दे दे *या मुझे अपनी रखेल बनाकर रखे। मैं किसी तरह से कोई जिम्मेदारी* लेने के काबिल नहीं हूं।

कायनात इस तरह पेश आएगी, कमाल को यकीन नहीं था। उसे इतना तो पता था कि वैसे काम-धंधों में एक बार पडी हुई लड़की, फिर उबर नहीं पाती। जैसे उसकी जिन्दगी का कोई असली हिस्सा ही दरक कर रह जाता है। लेकिन उस दरके हुए हिस्से को बिना कोई परवाह किए

कभी-कभी ऐसी लड़कियां बडी दिलेर साबित होती है और अपनी जिन्दगी को बिल्कुल बदल डालने में कामयाब हो जाती है।

पर इस कायनात को क्या हो गया ?

वह लखनऊ की कैसी ज़मीन पर उगी थी ?

अठारह

वे जुलाई के दिन थे। अभी तक लखनऊ में बारिश नहीं हुई थी। लखनऊ बिल्कुल जल रहा था।

अपाला ने कमाल से कहा—चलो, बंबई चलते है, अब्बा जान के पास देखेंगें कि मुझे देखकर अब्बा क्या महसूस करते हैं ?

इस तरह बंबई जाने की बात सुनकर अम्मी जान को अजीब लगा। वह मना तो नही कर सकीं, मगर उन्हे न जाने कैसा डर लगा। अपाला अम्मी की तकलीफ को खूब समझती थी। वह इसी तरह अपने अब्बा जान को भी खूब समझती थी, इसीलिए तो वह बबई अब्बा जान के पास जा रही थी।

कमाल के साथ बंबई वी० टी० स्टेशन पर पहुच कर अपाला ने कहा—सुनो, अब्बाजान के तीन पते हैं : पहला भिण्डी बाजार, दूसरा कोलाबा और तीसरा बान्द्रा ईस्ट। इन तीनों ठिकानो मे से हम सीधे बाद्रा के ठिकाने पर चलते हैं।

इतवार का दिन था। सुबह के 11 बज रहे थे। सचमुच अपने बाद्रा के फ्लैट में अब्बा जान सोते हुए मिल गये। बाहर से फ्लैट का दरवाजा खुला था। लगता था कि घर की सफाई करने वाला अभी काम करके गया था। अपाला अपने अब्बा जान से लिपट गई। अब्बा जान सोते से चौंके। आख खोलते ही उन्होंने जो देखा उन्हें यकीन नही हुआ। दरअसल क्या यह वही बीमार अपाला थी, जिसके बारे में उन्होंने सोच लिया था कि वह मर गई होगी ? या कोई दूसरी लड़की है ?

वह पलंग से उऊकर कुर्सी पर बैठ गए। और एकटक कमाल को देखने लगे।

अपाला ने कहा—अब्बाजान, यह कमाल है।

कमाल ने बढ़कर अब्बा जान के पैर छुए।

अब्बा जान को समझने में देर नही लगी। जितनी देर लगी, उतनी

के लिए बिल्कुल आसान बात थी। वह पापा से बिना कुछ बोले किचन में चली गई।

कमाल ने कहा—अब्बा जान, आपने बहुत दुख उठाए हैं। अब आप को कोई तकलीफ नहीं होगी।

अब्बा जान ने जैसे बड़ी मेहनत से नजर उठाकर कमाल को देखना चाहा मगर कुछ बोले नहीं।

कमाल ने कहा—मगर आप सताये हुए आदमी के रूप में नजर नहीं आते। इसकी वजह आप जरूर जानते होंगे ?

अब्बा जान भरे गले से बोले—नहीं, मैं इसकी वजह नहीं जानता। क्या तुम मुझे इसकी वजह बता सकते हो ?

कमाल सिर झुकाकर बोला—मुझे इसकी वजह का पता नहीं था। यह अपाला ने मुझे बताया कि हिंदुस्तान हमेशा-हमेशा से दुख सहने वाली रूह है। यह दुख उठाने और दर्द सहने की आदत को बहुत कम लोग समझ सकते हैं। आप लखनऊ के हैं। लखनऊ, फैजाबाद, बनारस, पटना और कलकत्ता ऐसे शहर हैं, जिन्हें बनाने वालों ने जैसे यह सोचकर इन शहरों को बनाया था कि यहां के लोग बड़ी तकलीफें उठाएंगे।

अब्बा जान की आंखों में अचानक एक चमक आ गई। उन्होंने पूछा—यह तुम कैसे कह सकते हो ?

कमाल बोला—दुश्मन आपके शहर को लूटते रहें और आप सिर्फ देखते रह जाएं, यह कितनी तकलीफदेह बात है ! इससे एक अजीब अपराध का अहसास भी तो उस गम में मिल जाता है।

अपाला ट्रे में काफी लिए आई और उन दोनों के बीच टेबल पर रख कर काफी बनाने लगी।

काफी पीते हुए अब्बाजान ने पूछा—यह कौन है ?

अपाला ने कहा—देखिए न, यह कौन है।

अब्बाजान के चेहरे पर न जाने कैसी एक खुशी की लहर दौड़ गई।

कमाल धीरे-धीरे गाने लगा :

मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो,
भोर भयो गैयन के पाछे मधुबन मोहि पठायो'''।

चार दिनों तक अब्बा जान अपने फ्लैट में बाहर नहीं गए। उन्हें अपाला-कमाल के बीच रहते हुए और उनके साथ जिंदगी का हर लम्हा जीते हुए जैसे बाहर की सारी दुनिया भूल गई थी। उन्हें पता नहीं था, जिंदगी की किताब में ऐसे पन्ने भी होते हैं जो बिल्कुल सादे होते हैं। जब हम उनपर

आस लगाते हैं तब हम उन सादे पन्नों पर लिखी हुई इबारत पढ पाते हैं और तब उसका मतलब समझ मे आता है। उन्हें लगा कि उन तीनों ने मिलकर उस फ्लैट के सूनेपन में जो कसीदाकारी कर ली है, उसकी यह कैसी गुप्त भाषा है, जिसे केवल वही तीनो समझ सकते थे।

अब्बा जान ने अपने आपसे पूछा—क्या यही कसीदाकारी गुलफिशां की बेटियों ने की है ?

अब्बा जान धीरे-धीरे उन दोनों के सामने खुलते चले गए। उन्होने उन दोनो से ऐसी बातें की, जिसे अमूनन कोई किसी से नहीं करता। जैसे, मैं कौन हू ? मैं क्यों लखनऊ से इस तरह सबको छोड़कर भाग आया ? मैंने क्यो अपनी ऐसी बेगम को तलाक दिया ? यह तलाक देने का हक किसने दिया ? रुपये ने हर चीज को अपने रूप में क्यो बदल दिया ? मैं हवा को क्यो नही देख पाता ? मुझे बदबू और खुशबू में फर्क क्यो नही महसूस होता ? मुझे हर इसान एक चीज़ की शक्ल मे क्यों दिखाई देता है ?

अब्बा जान के ये सारे सवालात कई दिनों में एक-एक कर उनकी जुबान से फूटे थे। ये सवाल इस तरह के थे, जैसे कोई चोट खाया हुआ बेकसूर बच्चा अपने आप मे बड़बड़ाता हो।

अपाला अब्बा जान से तो नही, पर अपने आपसे बातें करती हुई अब्बा जान के सवालों से टकराती रही। बांद्रा के उस फ्लैट में उसकी जुबान से यह फूटता रहा कि सुनो, अब्बा जान ! ये सारे सवालात सिर्फ तुम्हारे नही हम सबके हैं। तुम उन्ही सवालो से भागकर ही तो इतनी दूर यहा आ छिपे हो। हम कौन हैं ? इस सवाल से हमारा कभी मुकाबला न हो, इसीलिए तो हमने हर रूप को केवल रुपये की कमाई और कमाई और कमाई से अपने चारों ओर किलेबंदी कर रखी है। तभी तो हम सबसे अलग-थलग होकर कटे-फटे होने के बावजूद भी सोचते हैं कि यह मै हूं। कोई और मुझे 'डिस्टर्ब' न करे। मेरी किसी के लिए कोई जिम्मेदारी नहीं। मैं चुपचाप कमाता हू और चुपचाप ज़िदगी बसर करता हूं, यह कोई गुनाह है ?

जी हा, अब्बा जान ! यही तो गुनाह की ज़िदगी है। अपने को सबसे अलग मान लेना और सिर्फ खुदगर्जी की ज़िंदगी जीने की कोशिश करना, इससे बडा और क्या गुनाह हो सकता है ? यह इसानी फितरत के खिलाफ है। वह कभी किसी से अलग रह नही सकता। यही तो उसके दुख-दर्द का असली सबब है। हर इंसान को 'चीज' मे आखिर किसने बदला ? किसने अपने से अलग मदिर-मस्जिद बनाए ? क्यो अपने हाथों से एक ऐसी ईश्वर

की मूर्ति गढ़ी जो सिर्फ किसी एक जाति और एक धर्म की है ? अब्बा जान, तुम मुसलमान हो। तुम्हारे मजहब मे मूर्ति-पूजा नही है। मगर क्या तुम रुपये की मूर्ति की पूजा नही कर रहे ? तुम कैसे मुसलमान हो, अब्बा जान कि अपनी ऐसी बेगम और बीमार बेटी को छोड़कर गुलफिशा से भाग आए, जिन्हे ये तक नही मालूम था कि तुम कहां, क्यों चले गए ? तुम अपने आपको 'नॉर्मल' कहते हो, अब्बा जान ? बम्बई की ये मशीनी जिंदगी और हर कदम पर ट्रेन, कार, लिफ्ट, बैंक, टिकट, करेंसी नोट, चैकबुक, टेली-फोन जैसी असख्य मूर्तियों की पूजा भी नही, उनकी गुलामी करते हो।

एक दिन अब्बा जान ने पूछा — बताओ मैं क्या करूं ?

अपाला ने बच्चे की तरह अब्बाजान के गले से लग कर कहा—यह अपने आपसे पूछिए, अब्बा जान।

बड़ी देर तक अब्बा जान चुप रह गए थे। फिर बोले—अपने आपसे ही तो पूछकर यहा आया था।

अपाला बोली थी—नहीं, पापा ! अपने आपसे कभी नही पूछा। हवा मे कुछ ऐसी बातें हैं जो हम पर थोप दी जाती हैं और हम चुपचाप उन्हे सही मानकर चल देते हैं। हां पापा, यह बिल्कुल सही बात है।

अब्बाजान ने पूछा—यह बात तुम कैसे कह सकती हो ?

अपाला ने जवाब दिया—देखो न, अब्बाजान, मैं कैसे बीमार से तंदु-रुस्त हो गई।

—हां, कैसे हो गई ?

—क्योंकि मैं कभी बीमार थी ही नही।

—क्या ?

अब्बाजान इतनी हैरत से अपनी बेटी को देखने लगे, जैसे उसे कभी आज तक देखा ही न हो।

अपाला ने अब्बाजान की नजरो से अपनी नजर मिलाकर सिर्फ आह कहा और रो पड़ी।

अपाला को पहली बार इस तरह सिसक-सिसक कर रोते हुए देखकर अब्बा जान ने एक ऐसी बात सुनी और समझी, जिसका उन्हें कभी कोई अहसास तक नही था।

क्या ऐसा भी होता है ?

दूसरों की बीमारी और तकलीफों से कोई इस कदर बीमार हो जाता है ?

अपाला की बीमारी हमारा गम था ?

अब्बा जान दोनो को विदा करने वी० टी० स्टेशन आए। गाड़ी छूटने

मे चंद मिनट पहले उन्होंने एक हाथ से अपाला और दूसरे हाथ से कमाल को पकडकर कहा—मेरे बच्चे, अपनी अम्मी से कहना, वह मुझे माफ करे।

वह कुछ और कहने जा रहे थे मगर उनकी ज़ुबान ने उनका साथ नहीं दिया।

लखनऊ आकर कमाल-अपाला जिस वक्त गुलफिशा में दाखिल हुए, रात का वक्त था। अम्मी जान की तबीयत खराब थी। डाक्टर देखने आए थे। उन्हे फिर से 'हार्ट अटैक' हुआ था। कई दिनों से वह बोली नही थी न उनकी आखें खुली थी। वह नींद बेहोशी के आलम में थी। मगर जैसे ही कमाल-अपाला की आवाज़ उनके कानों मे पडी, वह जग गईं। उन्हें अपने पास देखकर पूछा—तुम लोग बा-खैरियत बंबई से लौट आए? वह कैसे हैं?

अम्मी ने जिस लहजे में 'वह' कहा था उसमें इतना दर्द था कि अपाला उससे तड़प गई। वह कुछ नहीं बोली। वह सिर्फ अम्मी की आखों में देखती रह गई।

अम्मी ने पूछा—क्या देख रहे हो, बेटे?

अपाला ने बड़े प्यार से कहा—अम्मी जान, वह ज़रूर तुमसे मिलने आएंगे।

—कौन?

—वह।

—वह कौन?

—अब्बा जान।

अम्मी चुप हो गईं। तहमीना और गुल दोनों उन्हे दूसरे कमरे मे ले जाकर सारी बातें बताने लगीं और बंबई में अब्बा जान के बारे में तमाम तरह के सवाल करने लगी।

अब्बा जान के बारे में जो बातें उन्हें मालूम हुई उन्हें यकीन नहीं हो रहा था। मगर वे बातें अपाला कह रही थी इससे उन्हे यकीन करना पड़ा।

कमाल तहमीना को 'दीदी' पुकारता था। दीदी कहने पर पहले तहमीना ने कमाल का बडा मज़ाक किया था, लेकिन अब मान चुकी थी कि ऐसा दीदी कहने वाला कोई एक कमाल तो है।

उस रात गुलफिशां में बिलकुल खामोशी छाई हुई थी। रात के दो बज रहे थे। कमाल पलंग पर लेटा हुआ सुन रहा था, खामोशी की लहरें

बोसीदा दीवारों से टकरा रही थी। बगल के कमरे में, उसे कुछ आहट हुई। वह उठने लगा तो देखा, अपाला उससे पहले ही जगी बैठी है।

अपाला ने आवाज दी—दीदी।

वह आवाज़ टकराकर रह गई।

कमाल और अपाला दोनों तहमीना के कमरे मे गए। वहा देखा, तहमीना अपने कमरे मे चक्कर लगा रही है। तहमीना का मुंह देखकर कमाल समझ गया कि माजरा क्या है।

अपाला ने दीदी को अपने अंक मे बाधकर कहा—दीदी, अभी तक तुम सोईं नहीं ? बता सकती हो क्या बात है ?

तहमीना ने कहा—पता नही क्यो, मुझे अब्बा जान की बडी याद आ रही है। मैं जब सो रही थी तब जैसे वह मेरे पास आए। मेरे कानो मे कहने लगे—मेरे बेटे, मैं तुम्हारा पीछा कभी नही छोड़ूंगा। तुम्हारा ख्याल था हर पल अपनी जगह कायम रहेंगे, लेकिन तुम्हारा ये ख्याल गलत है। मुझे देखो और पहचानो। सुना है तुम हिन्दुस्तान छोडकर अलीरज़ा के साथ पाकिस्तान जाना चाहती हो। ऐसा कभी नही सोचना, बेटे। तुम अब यह नया सफर करने की बात तक न सोचो। पाकिस्तान तुम्हारा देश नहीं है। नये देश मे जाने के लिए तुम्हें नये सिरे से खाना-पूरी और तरह-तरह के कागजों पर दस्तखत करने होंगे और अजीबो-गरीब सबूत पेश करने होंगे। गुलफिशां से कही बाहर जाने का मतलब, भागना है। यह बात अब मैं अपने लिए भी कह रहा हू। सुनो···सुनो, मेरी बेटी, अब तक तुमने बहुत से जादू तोड़े हैं। एक आखिरी जादू यह भी तोड़ दो कि इस जिंदगी मे कही कोई सुख नहीं है। नये जमाने ने हम सबको इंसान से मजदूर बना दिया है। ऐसे आलम में कही कोई खुशी कैसे हो सकती है ?

यह कहते-कहते तहमीना फफककर रो पडी—तभी अम्मी आकर बोली – जहा खुदा नही है, वहां किसी तरह की खुशी नही हो सकती।

अपाला ने बिल्कुल अम्मी की तरह तहमीना के सिर को अपने अंक में छिपा लिया।

बोली—दीदी, हम एक-दूसरे को कभी नही छोड़ेंगे। अभी हम पर और भी मुसीबतें आएंगी। लेकिन हम उनका मुकाबला करेंगे।

कमाल को ऐसा लग रहा था, वह कुछ ऐसा देख रहा है जो पर्दों के पीछे तह दर तह अंधेरों मे गायब होता जा रहा है। इस अंधेरे में आगे कोई नही जा सकता।

हवा के एक तेज झोंके से खिड़की का एक पर्दा फड़फड़ाने लगा। कमाल के कानों में अजान की आवाज आने लगी।

अपाला ने देखा, नाइट गाउन पहने गुल भी उसके सामने आ खड़ी थी। दोनों बहनों को अपनी बाहों में थामे अपाला कह रही थी—हमारे साथ खुदा है। ईश्वर हमारी हर सांस में है। हमारे पैरों के नीचे बहुत ठोस जमीन है। इसी ठोस जमीन पर हमें चलना है। देखो, हमारे पैर कितने खूबसूरत हैं। इन पैरों से हम कहीं भी पहुंच सकते हैं। रात और दिन दोनों हमारे हाथों में मौजूद हैं। हम सब सखियां हैं। हम एक-दूसरे के साथ मुद्दतों से रहे हैं। हम एक-दूसरे की सांसों में जिंदा हैं। हमने एक-दूसरे का हर रंग देखा है। हमने एक साथ समय बिताया है। हम एक सच्चाई हैं। जैसा भी हो, हम ख्वाब देखने से कभी बाज नहीं आएंगे।

ऐसी ही एक और अंधेरी रात में, अचानक न जाने कहां से गुलफिशा के आंगन में ईंट और पत्थर के टुकड़े बरसने लगे। कमाल ने बाहर आकर आवाज दी—कौन? कौन हो तुम लोग?

कुल छ: लोग थे। भागने लगे। कमाल ने दौड़कर उन्हें घेर लिया।

—कौन हो तुम लोग?

—हमें लाला रस्तोगी ने भेजा है।

—क्या?

—हमें नौची ने भेजा है।

—कितने-कितने रुपये की मजदूरी है?

—पांच-पांच रुपये।

कमाल ने सबको पांच-पांच रुपये देकर पूछा—उन लोगों ने और क्या कुछ करने को कहा था?

एक बोला—बड़ी गंदी-गंदी बातें कही थीं।

कमाल ने प्यार से कहा—घबराओ नहीं, मैं सब कुछ सुनने को तैयार हूं। मुझे जरूर बताओ।

उन सबके साथ कमाल बगल के टूटे हुए चबूतरे पर चला गया। वहां उन लोगों से कमाल ने सारी बातें जान लीं।

अगले दिन कमाल ने जाकर लाला रस्तोगी को गले से पकड़ लिया। बोला—लिखो।

—क्या लिखूं?

—जो मैं कहता हूं, लिखो—मैं अव्वल दर्जे का कमीना और बदमाश हूं। मैं कमाल से पहली और आखिरी बार यह सच कहता हूं कि ईश्वर की वायदा की हुई रोटी मैं इसी तरह झूठ और बेईमानी करके कमाता हूं।

वह लिखा हुआ कागज पढ़कर कमाल ने उसे गोंद लगाकर लाला के माथे पर चिपका दिया और जै रामजी की कहकर वहां से चला गया।

गुलफिशां में आंगन की बिजली रात को नही बुझाई जाती थी। उस रात, रात के सन्नाटे में कमाल को अजीबोगरीब बातें सुनाई पड़ने लगी—यह कोठा है। यहां रंडियां रहती हैं, यहा रंडियों का दलाल रहता है, जिसका नाम कमाल है। यहां माल बिकता है। खरीदार चाहिए, यहा एक भडुआ रहता है···।

कमाल चुपचाप जैसे रात की छाती पर पैर रखता हुआ धीरे-धीरे गुलफिशां के दरवाजे से बाहर आया। उसे देखते ही लोग भागने लगे। वे आंखों से ओझल भी हो गए। गलियों में न जाने कहा छिप गए। मगर कमाल के कानों में वे आवाजें अभी भी टकरा रही थी। वह गुलफिशा के पिछवाड़े गया। कुछ लोग वहां भी खड़े थे। वे भी भाग निकले। कमाल गुलफिशां के चारों तरफ पहरा देने लगा।

सुबह हो रही थी। कमाल गुलफिशा के बाहर चबूतरे पर चुपचाप खड़ा था। उसे एक ओर सुबह की नमाज और पूजापाठ के मंत्र सुनाई पड़ रहे थे, दूसरी ओर उसके कानो मे वही अंधेरे की आवाजें। उसने आखें बंद कर ली थी। भीतर ही भीतर कुछ देखने लगा था। अचानक उसे आहट हुई। आंखें खुलीं तो देखा, सामने अपाला खड़ी थी।

दोनो वही चबूतरे पर खड़े होकर सूरज के उगने और देखने की बाट जोहने लगे।

कमाल और अपाला ने बहनो से सारी बातें की। हर मुद्द पर सबने मिलकर गौर किया।

कमाल ने कहा—औरतों ने बहुत दुख उठाएं है, मगर हमारी कोशिश होनी चाहिए कि तुम सब सताई हुई औरतों की हद से बाहर निकलो।

अपाला बोली—दुख उठाने और गम सहने की फितरत हमने देख ली है। तुम हर घर के चौके मे मटमैली धोती पहनकर क्यो उदास बैठी हो? आओ, उठो। यह कहते-कहते अपाला गा पड़ी—

कुछ लाग हो कुछ लगाव हो,
कुछ भी नही तो कुछ नही।
बनकर फरिश्ता आदमी
बज्मे जहा में आए क्यों?

गुल ने पूछा—इसका मतलब क्या है?
अपाला ने कहा—हर तहजीब की अपनी एक जुबान होती है।
गुल बोली—मैं जुबान नही जानती।
कमाल हंस पड़ा—क्यो नही जानती, यही तो असली बात है।

—सच, मुझे तो कुछ भी नही मालूम।

—सच, कोई न जान सके यही तो सारी कोशिश है।

—कैसी कोशिश ? किसकी कोशिश ?

कमाल कुछ देर तक चुप रहा। बहनें एकटक उसे देख रही थीं।

कमाल ने कहा—जो मुल्क का इंतज़ामकार है, जो हम सबको मजदूर बनाकर काम ले रहा है, जिसने पहले तालीम और शिक्षा को बर्बाद किया, घर और जिंदगी से जिसने इंसान को उखाड़कर सड़क पर ला खड़ा किया, वही कोशिश, उसी की कोशिश…।

दिन के वक्त गुलफिशां में निराश्रित महिला कर्मशाला चलती थी। चिकनकारी मे लगी औरतों, लड़कियों को काम सिखाया जाता और उनसे काम लिया जाता था।

अपाला के साथ कमाल सुबह ही सुबह गुलफिशां से बाहर निकलता। उन सारे मुहल्लों और घरो मे जाता, जहां चिकनकारी के काम मे औरतों की दिलचस्पी होती। अपाला, खासकर, खुशहाल घर की मुसलमान औरतो और लड़कियो से मिलकर बातें करती। उनके तमाम तरह के सवालों के खुशी-खुशी जवाब देती। दूसरी ओर गुल बड़ी हिम्मत से सुलतानखाना से लेकर पूरे हुसैनाबाद के इलाके की मुसलमान और हिंदू औरतो से मिलती। यहां तक कि एक दिन नौची से भी जाकर मिली और व्यापार व दुकानदारी की तमाम सच्चाइयो के बारे मे उसे बताया। उससे भी बहुत-सी जानकारी हासिल की। यहां तक हुआ कि एक दिन नौची खुद गुलफिशां मे ले आई गई। निराश्रित महिला कर्मशाला के बारे में उसे सब कुछ बताया गया। सारे कागजात उसे दिखाए गए।

गुलफिशा की तीनों बहनों की वहा आस-पास और गली-मुहल्लो मे तमाम तरह की बदनामिया की जाने लगीं। उनके इस तरह घर में आने जाने के तरह-तरह के मतलब लगाए जाने लगे। मगर उनके हौसले मे कोई कमी नही आ पा रही थी।

रात को कमाल के साथ तीनो बहने बैठती। पूरे दिन के काम-काज का लेखा-जोखा किया जाता। बहनें अपने तजरबे एक-दूसरे को बताती। फिर उनके वजन पर जिंदगी की सच्चाइयों को पकड़ने और समझने की तालीम मिलती।

अपाला कहती—सारी अच्छाइयां समाज में होती हैं। समाज की वही अच्छाइया तब इसान को अपने आप मिलती हैं। इसान अपने आप मे कुछ नही है। देखो न, जब तक मैं अकेली थी, अपाला थी। अपाला माने

जानती हो न ? अपाला माने जिसका कोई लालन-पालन करने वाला न हो। अपाला जब तक अकेली थी, कितनी बीमार थी। कितनी बदशक्ल थी। किसी को ऐतबार नही था, कि मैं अच्छी होऊंगी। सब मेरी मौत के दिन गिन रहे थे। ऊपर से मैं इतनी बदशक्ल कि कोई मुझे देखना नही चाहता था। ये सब इसीलिए था, क्योकि मै अकेली थी। देखो न, कमाल से मिलते ही क्या कमाल हो गया !

कमाल आस-पास के मुहल्लो मे लोगों के साथ बैठकर, लोगो की बाते सुनकर, उनके साथ रो-गाकर बहुत सारी बातें उन्हें समझाता और उनसे समझता। वह सुबह से रात तक काम करते, मिलते, समझाते कभी थकता नही था, न कभी उदास होता था। रात को जब दोनों बहनें थककर सो जाती तब कमाल अपाला को लेकर गुलफिशा की छत पर जाकर खडा हो जाता। दोनो आसमान के सितारे गिनने लगते। आसमान के तारे गिनना, कितनी नामुमकिन बात है, इस पर दोनों खिलखिलाकर हंस पड़ते।

तब अपाला कमाल से कहती—देखो, इंसान के लिए जब यह भी मुमकिन नही कि वह तारे ही गिन ले, तो वह क्यो मानता है कि जो कुछ उसकी जिंदगी मे हो रहा है, उसके लिए जिम्मेदार वह खुद है। किसी एक आदमी के लिए कुछ कर पाना मुमकिन नही है। जो कुछ हमारे चारों तरफ हो रहा है उसके लिए वे ताकतें जिम्मेदार है जो हमें आंखो से नही दिखाई देती। जो आंखो से नही दिखाई पडता उसे लोग ईश्वर और खुदा मानते हैं। लेकिन जो दिखाई नही पड़ रहा है उसी का नाम समाज है। लेकिन जो आज सबसे ज्यादा दिखाई पड़ रहा है वह सरकार और हुकूमत है। जो चीज जितनी दिखाई पड़ती है वह उतनी होती नही। है केवल ईश्वर और खुदा, यानी समाज और सब कुछ उसी की परछाई है।

इस तरह उन दोनो मे केवल बातें होती रहती। दोनों उस रहस्यमय भाषा को समझने की कोशिश करते।

इसी तरह एक रात जब दोनो छत पर चुपचाप खड़े थे तब पास से ही किन्ही लोगों की ज़ोर-ज़ोर से बातें करने की आवाज़ आई। दोनों ने मुड़कर देखा। बाहर चबूतरे पर खडे लोग बातें कर रहे थे—यहां सब कुछ कितना रहस्यमय है। अपाला और कमाल कितने रहस्यमय हैं। इनके रिश्ते कितने रहस्यमय हैं।

कमाल ने वहीं से ऊंची आवाज में कहा—अरे देखो न, पूरा लखनऊ, सारा अवध, समूचा हिंदुस्तान कितना रहस्यमय है !

उसी आवाज में अपाला ने कहा—यही ईश्वर है। ईश्वर-खुदा के बारे में तुम सबने सवाल करने शुरू किए। उसके बारे मे पता लगाना शुरू

किया। उसके बारे में सबूत ढूढ़ने चले, तभी हमारी यह हालत हुई।

चबूतरे पर से किसी की आवाज आई—हिम्मत हो तो तुम दोनों नीचे उतर आओ।

उसी सांस मे कमाल अपाला के साथ नीचे उतरकर चबूतरे पर खड़ा हो गया। लोग उनको इस तरह से देखकर हक्के-बक्के रह गए।

उन्नीस

अपाला और कमाल जब बंबई से लौटकर अम्मी के पास आए थे, तभी से अम्मी की बीमारी में बड़ा फर्क आना शुरू हो गया था। अभी पिछले दिनों जब अब्बा जान का एक खत अम्मी को मिला तो जैसे उन्हें एक नया जन्म ही मिल गया हो। उनके सोचने और गुलफिशां में अपनी लड़कियों की जिंदगी देखने के बारे में जैसे उनका सारा रवैया ही बदल गया था।

एक दिन जहां औरतें चिकनकारी कर रही थीं, वहां खुद जाकर खड़ी हो गईं और बोलीं—ये क्या तमाशा है, करो रेशम पर कसीदाकारी, खुद पहने रहो चिथड़ा।

एक दिन वह खुद उन औरतों के बीच बैठकर रेशमी साड़ी में जरी का काम करने लगीं। बहुत बारीकी के साथ जरी का काम करती हुई अम्मी ने अपने पास बैठी हुई एक औरत से पूछा—तुम्हारा नाम क्या है?

—हुस्ना।

—कहां की रहने वाली हो?

—यहीं पुल पर रहती हूं।

—शादी हो गई है?

—जी हां।

—क्या उमर है?

—उमर की गिनती नाही है, मुला बड़ा लड़का चौदह बरस का है।

—कितने बच्चे हैं?

—कुल पांच, तीन लड़की और दो लड़का।

—बच्चे पढ़ते हैं?

—कहां पढ़ेंगे, बीबीजी? दो टैम की रोटी मुसकिल से जुर सके।

—कितने घंटे काम करती हो? कितना पैसा मिलता है?

—आठ बजे से लेकर सात बजे तक। बीच मे लंच का टाइम मिलता है। बारह रुपया रोज। ऊपर से मरद मारता है।

—क्यों ?

इस सवाल का वह कुछ भी जवाब न दे सकी। एक हाथ मे जरी का काम दूसरे हाथ में सुई लिए हुए वह बाहर देखने लगी। अम्मी उसे देखती रहीं। वह जड़ बनी बैठी रही। अम्मी के कई बार पूछने पर और यकीन दिलाने के बाद कि सब कुछ ठीक हो जाएगा, वह एकदम उठी और बाहर किवाड़ से लगकर रोने लगी।

अम्मी ने जाकर उसे संभाला और भीतर आंगन में ले गई। उसके कंधे पर हाथ रखा तो वह कराह उठी। रोते-रोते उसने जो कुछ दिखाया, अम्मी सन्न रह गई। 28-30 साल की उस औरत के जिस्म पर जगह-जगह चोटों और जले के इतने निशान हैं, यह बात अम्मी सोच भी नही सकती थी।

अम्मी अब रोज निराश्रित महिला कर्मशाला मे औरतों के साथ बैठकर काम करने लगीं। वह एक-एक औरत के साथ रोज बात करती और उन्हें यह पता चलता कि करीब-करीब ऐसा सारी औरतों के साथ बीत रहा था। हैरानी की बात यह थी कि किसी के चेहरे पर दुख या उदासी की कोई शिकन तक नही थी। कुछ पूछने या उकसाने पर भी तब तक नही, जब तक कि अचानक अम्मी का हाथ उनकी किसी दुखती रग पर न पड़ जाए।

अम्मी को लगा। जैसे ये औरतें खुद एक ऐसी चिकनकारी है, जिनका सब कुछ सिर्फ इनका तन-बदन है। उस चिकनकारी के दायरे किसी काल-कोठरी की दीवारों जैसे हैं जिन्हें तोड़ने की बात सोचना भी उनके लिए नामुमकिन है।

एक दिन अम्मी ने तहमीना से कहा—चिकन के काम में खुद चिकन होना पड़ता है।

अब्बा जान का दूसरा खत अम्मी को मिला। उस खत में लिखा था कि अब्बा जान जल्द ही गुलफिशां लौट आएंगे और अम्मी जान से माफी मागकर उनके साथ रहेंगे।

अम्मी उस खत को लेकर निराश्रित महिला कर्मशाला में काम करती हुई औरतों के बीच जाकर चुपचाप घूमती रही। उनकी आंखें दुआ मांगती हुई कह रही थी कि ये सब तुम्हारी ही दुआ का नतीजा है।

अपाला अम्मी को इतना खुश देखकर फूली न समाती। तहमीना को लगने लगा, गुलफिशां का मतलब क्या है ? वह कभी-कभी भावुक हो जाती थी।

उसे इस तरह देखकर एक दिन कमाल ने पूछा—क्या बात है दीदी ?

तहमीना बोली—अम्मी जान को अब्बा जान से कितनी मुहब्बत थी !
कमाल के मुंह से निकला—मुहब्बत को खुदा के लिए जज्बातों में न बदलो।

एक सिरे पर गुलफिशां, दूसरे सिरे पर नौची का वह अड्डा। गुल दोनों सिरो के बीच में देखती थी। हुसैनाबाद की सराय, पार्क, छोटा इमाम बाड़ा, पुलसरात, गली अनारकली का नुक्कड़, रहमत खाना, खलीलमहल, सुलतान खाना। इसी एक ही निगाह मे वह गुलफिशां की निराश्रित महिला कर्मशाला की औरतों को भी देखती है। उनके पासबुक, पहचानपत्र पढ़ती है। फिर उसे यह देखने में अब दिक्कत नही होती कि आजादी के नाम पर वह जो जिंदगी जीना चाहती थी, वह सब उसकी नासमझी थी। मन का छलावा, नज़र का बहलावा। किसी चीज का कोई मतलब नहीं था।

गुल से अब यह बात छिपी नही रह गई थी कि उसकी पीढ़ी को किसी ने कुछ नही जानने दिया है। पूरे सिस्टम ने सिर्फ यही बताने की कोशिश की थी कि सिर्फ निजी सुख और सफलता ही असली चीज है। यहां तक कि मजहब और खुदा भी 'पर्सनल' चीज मान लिए गए।

उस दिन दोपहर के वक्त गुलफिशां के चबूतरे पर जब अलीरजा साहब ने तमाम लोगों को इकट्ठा कर निराश्रित महिला कर्मशाला के नाम पर बलवा खड़ा करना चाहा था कि मुसलमानों मे निराश्रित महिला का मतलब दारुल इस्लाम के खिलाफ है, तब गुल ने आगे बढ़कर उस भीड़ के सामने कहा था—तुम्हारा दारुल हरब, दारुल इस्लाम, तुम्हारे मजहब, तुम्हारे उसूल, तुम्हारा हिंदुत्व, तुम्हारी कांग्रेस तुम्हारी मुस्लिम लीग सब बकवास है। तुम लोग जो इन्सानियत की किस्मत का फैसला करवाने चले हो, इस मारामारी में इंसानों का तुम सब खून बहा रहे हो।

अपाला ने बढकर तब गुल को रोक लिया था और बड़े प्यार से समझाया था—ये सब बेकसूर हैं, क्योंकि इन्हें कुछ भी पता नहीं है। किसी को कुछ पता लगाने ही नही दिया जाता।

निराश्रित महिला कर्मशाला, इसमें सबको 'निराश्रित' अल्फाज पर एतराज था। कमाल इन बातों के पीछे जो असली बात है उसे बखूबी समझ रहा था। वह लोगों के बीच बैठकर बताने की कोशिश कर रहा था कि ये कौन लोग हैं, वे कौन-सी ताकते हैं, जो हमें बांटती चली आ रही हैं। जो हर चीज को रहस्यमय बनाती जा रही हैं। मगर ईश्वर जो दरअसल रहस्यमय है, उसी का लोग सबूत चाहने लगे हैं। जिसका सबूत मिलना चाहिए, उसके बारे में लोगों की कोई दिलचस्पी नही। लेकिन जो सारे

सबूतो से परे है, लोग उसी का सबूत क्यों मांगते हैं ? ऐसा क्यों हुआ है ? आओ, हम लोग इस बात को जानने की कोशिश करें। आमीर रज़ा यहां इतने लोगों को इस तरह धोखा देकर, कितनी औरतो, लड़कियों से दगा कर कैसे जेल से पाकिस्तान भाग गया ?

लोगों की भीड़ में से किसी मनचले ने कहा—आमीर रजा जेल से पाकिस्तान क्यों न भाग जाए, आखिर वह कमाल की तरह सिरफिरा थोड़े ही था।

कमाल ने लोगों से सिर्फ एक सवाल किया। हम लोग अपनी गरीबी, अपनी जहालत से मुहब्बत क्यों करने लगे हैं ? सब लोग मेरे और अपाला के रिश्ते को शक की निगाहों से देखते हैं, इसकी वजह जानते हो ? इसकी वजह यह है कि अब तुम सबको मासूमियत पर ऐतबार नही रहा। जो मासूम है, उससे तुम लोग सबूत चाहते हो और मासूमियत की वजह जानना चाहते हो। इससे बड़ी वेइंसाफी और जुल्म और क्या हो सकता है ? लोग कुछ नहीं बोल सके। क्योकि उनकी समझ में कुछ नही आ रहा था।

दरअसल वे सब हुल्लड़बाज थे, जिनके पीछे लखनऊ के वे तमाम लोग अदृश्य रूप से खड़े थे, जो उन्हें कर्जदार, मजबूर बनाकर रखना चाहते थे। थोड़ी देर बाद ऐसा लगा, जैसे हुल्लड खत्म हो गया। सब लोग वहां से चले गए। खामोशी छा गई। उस खामोशी में से जैसे कोई आवाज आई—आखिर तुम बताते क्यों नही, हमें क्या करना चाहिए ?

कुछ ही दिनों के भीतर कमाल और अपाला ने मिलकर, तहमीना, गुलनार और कर्मशाला की तमाम औरतों के साथ एक कागज तैयार किया जिसका मकसद था—एक ट्रेडिंग कारपोरेशन लिमिटेड की स्थापना। इसमे शत-प्रतिशत शेयर केवल औरतों का था। ये औरतें पूरे लखनऊ शहर की कोई भी औरत हो सकती थी। इसमे जाति, मजहब, नौकरी-पेशा, वर्ग की कोई सीमा नहीं थी।

कमाल, अपाला, तहमीना और गुल इन सबको अपने साथ लेकर औरतो को यह समझाने की कोशिश में दिन-रात लगा रहा कि हर इंसान की फितरत यही है जिसकी वजह से हर इंसान इसी कोशिश मे रहता है कि उसके पास जो भी जमा पूंजी है, उसे वह इस तरह से किसी काम-काज में लगाए कि उसको ज्यादा से ज्यादा लाभ हो। उसकी नजर मे उसका निजी लाभ ही रहता है, न कि समाज का। लेकिन अपने लाभ को बढ़ाने की कोशिश आखिरकार उसे वही कामकाज चुनने पर मजबूर करती है जो समाज के लिए सबसे ज्यादा फायदेमंद होता है।

इंसान की यह भी फितरत है कि हर आदमी अपनी दौलत को, वह चाहे रकम हो, मेहनत हो, या शरीर हो, या जो कुछ भी उसके पास दौलत के नाम पर हो, उसको अपने रहने के स्थान के निकट ही लगाना चाहता है। इस तरह वह आखिरकार अपने समाज के उद्योग को ही सहारा देता है।

तहमीना चिकनकारी में लगी हुई तमाम औरतों को अपने साथ लेकर समझाती कि चिकन के काम का हर थोक व्यापारी, देशी व्यापार को अधिक पसंद करता है। देशी व्यापार में उसकी दौलत सदा उसकी नजरों में उसके सामने रहती है। जबकि बाहर के व्यापार में ज्यादातर ऐसा नहीं रहता। खासकर अपने ही शहर में इस तरह का व्यापार जिन लोगों के साथ किया जाता है उन पर ज्यादा भरोसा होता है। एक-दूसरे पर भरोसा करना, एक-दूसरे से रिश्ते में जुड़ने का बड़ा सबब होता है। ठीक इसके खिलाफ जो बाहर के व्यापारी, हमारे शहर में अपनी दौलत लगाकर यहां का माल थोक भाव से ले जाकर बाहर भेजते हैं, बाहर, यानी विदेश तक बेचते हैं, उनके लिए यह शहर, ये घर, जहां चिकनकारी का इतना उम्दा काम होता है, वह एक बाजार बन जाता है। दुकान, माल, कीमत, मेहनत, बाजार इन सबका अंग्रेज व्यापारियों ने जो मतलब लगाया था, वह अब हम सबके लिए कितनी शर्म की बात है! उन अंग्रेज व्यापारियों की नजर में हिंदुस्तान का हर आदमी, हर औरत, यहां की तमाम दौलत, उनके लिए सिर्फ कच्चा माल था। अंग्रेजों की इसी जहनियत से पैदा हुए हैं—आजाद हिंदुस्तान के ये तमाम दुकानदार और व्यापारी। इसी का हश्र है आजाद हिंदुस्तान का उद्योग। इसी के खिलाफ महात्मा गांधी ने सबसे पहले लोगों को आगाह किया था कि यह अंग्रेजी सभ्यता की हैवानियत है।

अपाला अपनी बहनों के साथ ट्रेडिंग कारपोरेशन के शेयर बेचने में जितनी सफल होती है, उससे यही लगता है कि किस तरह अंजाने में की गई भलाई उस भलाई से बड़ी होती है जो जानबूझकर की जाती है।

ट्रेडिंग कारपोरेशन लिमिटेड की बाकायदा स्थापना हो चुकी थी। ट्रेडिंग कारपोरेशन लिमिटेड के सौ-सौ रुपए के तीन हजार दो सौ शेयर बिक चुके थे। इसमें दस डाइरेक्टर्स चुने गये थे। वे दसों डायरेक्टर्स औरतें थीं। इनमें तहमीना, गुल, कायनात, कमरून, नूरी के अलावा नौबी भी थी। तहमीना चेयरमैन, गुल वाइस चेयरमैन और कायनात को सेक्रेटरी चुना गया था। इसका दफ्तर हुसैनाबाद के एक किराये के मकान में खोला गया। उसी के निचले हिस्से में लखनऊ चिकनकारी महिला कर्मशाला का

काम शुरू हुआ और ऊपर वाले हिस्से में ट्रेडिंग कारपोरेशन का दफ्तर। इस दफ्तर में तीन पुरुष नौकर रखे गए जिनकी जिम्मेदारी थी—हिफाजत, इंतजाम और बाहर के काम-धाम देखना और दफ्तर चलाना। इस तरह इसकी मिल्कियत औरतों के हाथ में थी और इंतजाम मर्दों के हाथ में।

तभी उन्हीं दिनों अचानक एक दिन अलीरजा साहब शाम के वक्त गुलफिशां आए। वहां उस वक्त कमाल-अपाला के साथ दोनों बहनें भी मौजूद थीं। सबसे माफी मांगते हुए अलीरजा साहब ने कबूल किया कि मुझे अपनी जिंदगी, समाज और हिंदुस्तान मुल्क के बारे में कोई समझ नहीं थी। मैं इस बीच तब से कहां-कहां भटका हूं और मारा-मारा फिरा हूं, बयान नहीं कर सकता। मुझे तालीम और पढ़ाई के नाम पर जो कुछ भी हासिल हुआ वह सब कुछ धोखा था। मुझे पता चल गया, दारुल हरब के पीछे किसकी जहनियत है। जब तक दारुल हरब का फलसफा है तब तक हिंदुस्तान में मुसलमान को रहने का कोई हक नहीं है। मुझे अब दारुल इस्लाम पर पूरा यकीन हो गया है। जो पाक जिंदगी जी सके, वही मुसलमान है, और वही इस्लाम है।

बीस

एक दिन दोपहर को आमीर रजा का एक खत कमाल को मिला। कमाल जानता था कि यह खत आमीर ने खुद नहीं लिखा है, किसी से बोलकर लिखवाया है। उस खत पर आमीर का पता ठिकाना भी नहीं लिखा था। ऐसा उसने जानबूझ कर किया था। वह बंबई की जेल से भागा था। फिर भागकर पाकिस्तान गया था। वहां से अब वह दुबई पहुंचा था।

कमाल के हाथ में आमीर रजा का वह खत था। कमाल की आंखें जैसे उस खत की लिखावट पर जम गई थीं।

कमाल, कुत्ते की दुम !

मेरा यह खत पाकर तुम्हें जरा भी ताज्जुब नहीं होगा, ऐसा मुझे यकीन है। और अगर ताज्जुब होगा तो तुम आदमी नहीं औरत हो। मैं कहां से यह खत लिख रहा हूं यह बताने की कोई जरूरत नहीं है। हां, कमाल, मैंने तुम्हें कुत्ते की दुम इसलिए कहा है कि तुम ये जान लो कि मेरा जिससे काम निकल जाता है वो मेरे लिए कुत्ते की दुम हो जाता है।

तुम्हें शायद अब तक यह पता चल गया होगा कि मैं कैसा आदमी था? खैर, छोड़ो इन बातों को। तुम मुझे लखनऊ में उस तरह अचानक मिल गए और तुम मुझे अच्छे भी लगे। खासकर इसलिए, कि तुम एक बहके हुए वेवकूफ आदमी थे, जिसमें आवारगी का थोड़ा हिस्सा मौजूद था। इसीलिए मैंने उतना वक्त तुम्हारे साथ काट लेना बेहतर समझा। मैं उस तरह लखनऊ में पड़ा-पड़ा और अपना वह सारा बिजनेस करने और चलाने का जो धंधा कर रहा था, वह दरअसल मैं वक्त काट रहा था। और सही मायने में मैं पुलिस और हुकूमत की आंखों में धूल झोंकने की कोशिश कर रहा था। तुम्हें अब तक पता चल गया होगा कि लखनऊ में मैंने जो कुछ खरीदा और बनाया था उसे मैं बाकायदा बेच आया हूं और एक के चार वसूल कर लाया हूं, जिसका तुम्हें तब पता नहीं लगने दिया था। तुम अपने आपको होशियार समझते थे, मगर तुम मेरी नजर में बिल्कुल वेवकूफ आदमी हो। मैं अक्सर जेल जाता रहा हू। जेल से फरार होता रहा हूं। बाहर निकलकर इतनी मौज-मस्ती लेता रहा हूं। और यही सब मैं ताजिंदगी करता रहूंगा, ऐसा मेरा यकीन है। इस यकीन के अलावा मेरा और कोई दूसरा यकीन नही है। तुम मुझसे अक्सर बकवास करते रहे हो और मैं कितने सब्र के साथ तुम्हारी बकवास को सहता रहा हूं। यह इसलिए कि मैं तुमसे खूब काम ले सकूं। कायनात से जो मैंने इश्क का ड्रामा किया था, वह मेरी तमाम आदतों मे से एक आदत है। इसके कई फायदे हैं जिसे तुम जैसे वेवकूफ लोग नही जान सकते। तुम मुझे अकसर नासमझ, हविश के गुलाम, पैसे और औरतों के लालची वगैरह-वगैरह न जाने क्या-क्या कहा करते थे। अकसर तुम मुझे 'कमज़ोरियों के गुलाम' मानते थे। लेकिन अब बताओ, तुम गुलाम हो या मैं? विचारों और उसूलों की गुलामी से बढ़कर और कोई गुलामी हो सकती है? तुम उसी बीमार लखनऊ के जेलखाने मे, जिसका नाम गुलफिशां है, पुलसरात है, नौची का अड्डा है, लाला रस्तोगी का जारा है, चिकन के धधे मे चिकन बनी हुई औरतों का जो दरबा है, उ० प्र० की राजधानी है, अवध का जो मरकज़ है, उसी में बंधकर बरबाद हो जाओगे।

अपाला के साथ तुम्हारा इश्क बिल्कुल झूठा और वेमानी है। उसने तुमको फंसाया है, तुमने उसको उल्लू बनाया है। पूरे एशिया और मिडिल ईस्ट में इश्क नामुमकिन चीज़ है। इश्क के लिए जो सबसे जरूरी चीज है वह है खुली हवा, जिसमे एक ऐसी खुशबू और खुशी मिली हुई हो जो सबकी रगों में खून की तरह बहती हो। तुम जानते हो, मैं बिल्कुल पढ़ा-लिखा नहीं हूं। मेरा सारा बचपन गरीबी को तौलने वाले तराजू में बीता है।

मैं पूरा एशिया और यूरोप कई बार घूम चुका हूं लेकिन फितरन मैं अपने आपको दूसरों के सामने घोंचू बनाकर रखता हूं, ताकि लोग मेरे सामने खुल सकें और मैं खुलकर उनका इस्तेमाल कर सकूं। मैंने जिस तरह सारी औरतों का इस्तेमाल किया है, उसी तरह तुम्हें भी इस्तेमाल किया है। हालांकि, तुम औरत नहीं मर्द हो जिस पर कि मुझे इतनी दूर बैठे-बैठे शक होने लगा है। मेरे ख्याल से मर्द वो है जो कहीं भी टिककर नहीं बैठना चाहे।

मैंने देखा है, तुम्हारे भीतर कई चोर बैठे हैं। पहला चोर यह है कि तुम बड़े ईमानदार हो। दूसरा चोर है कि तुम पॉलिटिक्स समझते हो। तीसरा चोर यह है कि तुम समाज में बदलाव ला सकते हो। और सबसे बड़ी गलतफहमी तुम्हारी ये है कि अपने आपको बड़ा अक्लमंद मानते हो और अपने आपको तीसमारखां समझते हो।

पॉलिटिक्स को हम सब पैसे वाले व्यापारी, सेठ-साहूकार, उद्योगपति अपना नौकर ही नहीं गुलाम बनाकर रखते हैं। एक ऐसा गुलाम जो सरासर चोर है। पैसे वालों की यही कोशिश रहती है कि पॉलिटिक्स मे सब चोर रहें, ताकि लोगों की तवज्जह उन्ही की तरफ रहे। पैसे वालों की तरफ किसी का ख्याल ही न जाये।

तुमने अपने बारे मे बड़ी डींगें हांकी है कि तुमने ऐसा कोई काम नहीं है, जो न किया हो। उल्लू के पट्ठे, तुम्हें पता ही नहीं है, दुनिया में अभी ऐसे तमाम काम हैं जिन्हें करने की बात तुम सोच तक नहीं सकते। मसलन—भोली-भाली गरीब मोहताज बेवकूफ लड़कियों को कबूतर की तरह जाल में फंसाकर उन्हें एकमुश्त दूसरे मुल्कों में किसी के हाथ बेच देना। बता साले, कभी ये काम किया है ? इस तरह तमाम ऐसे काम हैं जिन्हें तुम जैसे चूहे नहीं कर सकते। तुम साले इश्क कर सकते हो वह भी एक बीमार लड़की से।

तुमने अकसर फतवे दिये थे। वे सब कितने झूठे हैं तुम्हें क्या पता ? फतवा वही देता है जो भीतर से खोखला होता है। जो जितना ही छोटा होता है उतना ही बड़ा बनना चाहता है। ये फतवा नहीं है, ये मेरी आंखो देखी हुई सच्चाई है…।

…कमाल के हाथ में आमीर रज़ा का यह खत कितना वजनी होता चला जा रहा था कि उसे और देर तक इस तरह पकड़े रहना मुमकिन नहीं था। उस खत को लेकर कमाल इधर-उधर घूमता रहा जैसे वह

कोई ऐसी जगह तलाश रहा हो, जहां वो इस खत को ले जाकर रख सके। पर उसे ऐसी कोई जगह नहीं मिली। पूरा खत उसकी आंखों में जैसे फडफडा रहा था।

आखिर मे वह खत उसने अपाला के हाथ में दे दिया। अपाला ने उसे पढकर सिर्फ इतना ही कहा— जो आदमी अपना कोई घर तक नही बना सकता वही ऐसा खत लिख सकता है।

बारी बारी से वह खत तहमीना और गुल ने पढा।

तहमीना बोली—हम अपना किस्सा दोहराकर इत्मीनान करना चाहते है, क्योंकि हमें डर लगता है। हम समय से और अंधेरे से डरते है, क्योंकि वक्त हमे एक रोज मार डालेगा।

अपाला ने दीदी के मुह पर हाथ रख दिया—दीदी, ऐसे बातें मत किया करो। बुनियाद तो बुनियाद है, बुनियाद मिट्टी के नीचे छिपी रहती है। इसके ऊपर हम अपना घर बनाएंगे। हमारा घर और हमारा वजूद पहले भी था, और हमेशा रहेगा। देखो न, लखनऊ के इन नवाबी खडहरों में समय की इतनी बड़ी-बड़ी गुंबदें, इतनी ऊंची-ऊंची दीवारें, लंबी गलियां और भूल-भुलैयां, कह रही हैं, हम पहले भी थे और आज भी हैं…।

किस तरह अंग्रेजों ने हिंदुस्तान को अपनी 'कालोनी' बनाया था। कालोनी माने कच्चे माल का बाजार। इस बाजार के अपने नाप-जोख थे, तराजू-बट्टे थे। इस बाजार की अपनी सजाएं थी, अपने इनामात थे। बाजार की पुलिस थी, और बाजार की छावनियां थी। अंग्रेजों ने किस तरह हमारे यहां के राजाओं और नवाबो को सजाएं दे-देकर उन्हे जलील किया, किस तरह उनके बारे में झूठी कहानियां गढ़कर फैलाई। फैलाने वाले हमी लोग थे। अंग्रेज जान गए कि अवधवासियों को कथा-कहानियों मे ही यकीन है, इतिहास में नही। इसलिए उन्होंने यहां अपना बाजार कायम करने के लिए खास तौर पर फैजाबाद, अयोध्या, काशी, कानपुर मे तमाम झूठी कहानियां फैलाईं। तब उन्होंने अपना इतिहास कायम किया यहां नए राजाओ, नई जमीदारी और नई दुकानों और नये दफ्तरों को कायम कर।

अंग्रेजों ने पहले यहां की औरतों से शादियां की। यहां के देवी-देवताओं की पहले पूजा की। यहा के ब्राह्मणो, सूफी संतों और फकीरो से डरे-डरे रहे। यहां के बाजारो, कोठों और सीधे-साधे लोगो को ताज्जुब से देखते रहे। फिर धीरे-धीरे सबको जानवर समझने लगे। फिर कहने लगे, हम इन जानवरों को इसान बनाएंगे। इंसान बनाने के उनके पास दो औजार थे। पहला औरत को सिर्फ 'सेक्स' के रूप में देखना और उसे पुरुष के

इस्तेमाल की चीज समझना। दूसरा हर चीज को केवल नफा नुकसान की नजर से देखना। इसी की औलाद है—सुलतानखाना की कायनात और पुलसरात के मजार के पीछे नौची का वह रंडीखाना। इन्हीं दोनों रज और वीज से बने हैं आधुनिक बाजार के ये बड़े-बड़े दफ्तर, स्कूल, कालेज, पुलिस स्टेशन, अस्पताल और होटल। जैसे-जैसे मध्य वर्ग तेजी से बनता-उभरता चला गया, और लोग नौकरियां पाने की दौड़ में शामिल होते गए, तभी सही मौका देखकर अंग्रेजों ने हमें आजादी देकर बेवकूफ बनाया। यही है आजादी के नाम पर मिली हुई गुलामी—घमंड अपने अतीत पर, पश्चात्ताप अपने वर्तमान पर, आशा भविष्य में।

गुलफिशा में पिछले आंगन के बगल में मुद्दत से बंद पड़ा हुआ एक कमरा था जिसकी तरफ कभी किसी का ख्याल ही नही गया। नवाबी जमाने का उसका दरवाजा, तभी का लगा हुआ नवाबी ताला और पूरे दरवाजे और दीवारों पर न जाने कब की जमी काई। कभी किसी ने सोचा ही नही कि यह भी कोई जगह है।

एक दिन अपाला ने कमाल से कहा—इस कमरे को खोल दो।

—कैसे ?

—तोड़कर।

कमाल ने लोहे के एक टुकड़े से पहले उस जंग खाए ताले को तोड़ा। फिर पूरे दिन की मेहनत के बाद उस दरवाजे को तोडा। मुद्दत से बंद उस कमरे से एक अजीब भभका आंगन में आया। तहमीना और गुल दोनों बहनें डर गईं।

रात घिर आई थी। एक हाथ में जलती लालटेन और दूसरे हाथ में जलती हुई मोमबत्ती लिए कमाल उस बंद कमरे मे दाखिल हुआ। उसके साथ अपाला भी थी। तहमीना और गुल दरवाजे पर ही खड़ी रह गई थी। रोशनी में वहां एक अजीब चीज दिखाई पड़ी। बिलियर्ड का टेबुल, टेबुल के ऊपर बिलियर्ड के रंगीन गेंद और डण्डे।

अपाला ने हाथ जोड़कर उस कमरे की जमीन को अपने माथे से लगाकर इबादत के लहजे में कहा—यह हमारा पूजा का कमरा था, जिसे हमारे परबाबा ने अंग्रेजो की चापलूसी में उनके साथ बिलियर्ड खेलने के लालच मे अधर्म किया। पूजा की जगह बिलियर्ड ··।

अपाला का गला रुंध गया था।

उस रात कोई नही सो पाया। अम्मी आंगन में बैठी इबादत करती रही। उस कमरे के पीछे और दो छोटे-छोटे कमरे थे। उन्हे भी खोलकर देखा गया। जैसे वहा कभी अनगिनत रहस्य थे—धर्म, दर्शन, कला,

रहस्य तत्व, तसव्वुफ, साहित्य, संगीत, यहां क्या कुछ नहीं था।

एक ओर यह महान शक्तिशाली धरोहर, दूसरी ओर लुटेरी अंग्रेजी सभ्यता थी। साइंस और टैक्नॉलाजी थी—व्यापार की, तिजारत की। तब अंग्रेज साहब का राज्य था। आज हिंदुस्तानी साहब का राज्य है। तब भी असेंबली के कानून थे। आज भी वही कानून हैं। आज भी गवर्नर के वही दरबार हैं। तब अंग्रेज अफसर, जो गुलफिशां में नवाबी डिनर खाने आते थे, आज इस उजड़ी गुलफिशां में अपाला कह रही है—मेरा नाम अपाला है, क्योंकि मेरा लालन-पालन ईश्वर के अलावा और कोई नहीं कर सकता। उसके अलावा और कोई किसी का पालनकर्ता नहीं है। उसके अलावा आज जो कुछ इतना दिख रहा है, यह सब परछाई है। यहां इस घर में मेरे बाप-दादा के जमाने में यह किसी ने ख्वाब में भी नहीं सोचा होगा कि इंसान का पालनकर्ता कभी कोई आदमी हो सकता है। जिसको यह पता ही नहीं कि यह जीवन कहां से पैदा हुआ, इस जीवन का दाता कौन है, इसे कौन चलाता है, और यह चलकर कहां चला जाता है, जब किसी को इसके बारे में कुछ पता ही नहीं तो वह करने और होने का फख्र क्यों करता है? मैं ही करने वाला हूं, यही तो 'बिलियर्ड' का खेल है। मैं ही कानून बनाता हूं। मैं ही सबका मालिक हूं, यही है असेंबली और पार्लियामेंट, जिसे अंग्रेज सरकार बनाकर चली गई। भारत की जमीन पर हमें सभ्य और सुसंस्कृत करने के नाम पर वे अंग्रेज बहादुर कैसे सबको मजदूर और मजबूर बनाकर चले गए।

अपाला अपने वक्ष के बीचों-बीच कपड़ों में सुलाई हुई कृष्ण की मूर्ति निकालती है। यशोदा मैया की तरह उस नन्हें से कृष्ण को अपने अंक में लिए बिलियर्ड के टेबल पर जा बैठती है और गोपाल कृष्ण से खेलती हुई गा उठती है :

गुंवालीड़ा थेकाई जाणो पीड़ पराई।
हाथ लाकड़ी काधे कामली बन-बन धेन पराई।
बैठ कदम पर वंशी बजाई गाया से घिर आई।।
पालीड़ा थे काई जाणो पीड़ पराई।।
बाली-बाली गोप सुता थे, त्यागी कुबड़ी मन में भाई।
पालीड़ा थे काई जाणो पीड़ पराई।।

यह गीत सुनकर गुल घबड़ाकर आपाला की ओर दौड़ी—यह क्या कर रही हो?

तहमीना ने बढ़कर गुल को रोक लिया—गाने दो ।अपाला की वजह से ही इस घर में फिर से खुदा आया है ।

कमाल अपाला के साथ गोमती नदी के किनारे घूम रहा था। उन्होंने देखा, गोमती के जल पर बीचों-बीच एक नौका स्थिर खड़ी थी। गोमती नदी में अब बहाव नहीं है। फिर भी नाव में चिराग जल रहा था और कोई वहीं दिल को खोचने वाली भटियाली गाता जा रहा था। गीत के शब्द कमाल की समझ में अच्छी तरह नहीं आ रहे थे, पर अपाला सब कुछ समझ रही थी। उसके पीछे की ओर छतरमंजिल की इमारत थी, जिसमें अब साइंस की लेबोरेटरी खोल दी गई है। पेड़ों के पास लखनऊ के आखिरी रेजीडेंट के जमाने की बनी हुई ऊंचे पीलपावों और झिलमिलियों के बरामदे वाली पुराने अंग्रेज कलेक्टर की शानदार कोठी के खंडहर दिख रहे थे। उससे जरा दूरी पर राजा बलरामपुर के महल की खंडहर था। उसके पास ही पांच मंजिलों वाली छः सौ बत्तीस फ्लैटों की एक इमारत खड़ी थी। सारे फ्लैंटस एक जैसे हैं। सबमे एक ही रेडियो बज रहा है और सबमें एक ही टेलीविजन चल रहा है।

कमाल अजीब नजर से उन खंडहरी इमारतों और फ्लैटों को देख रहा था, जैसे जिंदगी का सारा नक्शा उसकी आंखों के सामने गुजरता जा रहा है।

अपाला ने कमाल के माथे को अपने अंक में गड़ाकर कहा—यही जिंदगी का फानूस है, इसके चारों तरफ रंगारंग तस्वीरें बनी हुई है। ये तस्वीरें कौन बनाता है ? इनमें कौन इतने रंग भरता है ?

कमाल ने कहा—वही, जो पहले हमारे दिल में इतना दर्द पैदा करता है।

अपाला बोली—यह दर्द क्या है ?

कमाल अपाला का मुंह देखता रह गया।

अपाला के मुह से निकला—दर्द नही विरह।

—विरह क्या है ?

चुपचाप अपाला ने सवाल किया और खुद उत्तर दिया—वही अपाला, जिसका यहां कोई दिखने वाला पालनकर्ता नहीं है। मगर जो चारों ओर से अपने आपको हमें दिखा रहा है, वह क्या है ?

इक्कीस

कायनात कई दिनों से काम पर नहीं आई थी। पता नहीं वह बीमार पड़ गई थी या उसे क्या हो गया था, यही पता लगाने एक बार अपाला उसके घर सुलतानखाना गई। उससे भेंट तो, हुई मगर वह कोई वजह न बता सकी। फिर कमाल उसके पास गया और पूछा—काम पर क्यों नहीं आ रही हो?

कायनात ने उससे साफ कहा—मैंने यह महसूस किया है कि चिकन-कारी की इस मेहनत मे औरत वक्त से पहले ही बूढ़ी हो जाती है। इस-लिए अब मैं यह धंधा नहीं करूंगी।

कामनात के इस जवाब से कमाल सन्न रह गया।

कमाल बोला—यह धंधा नहीं, काम है।

वह बोली—काम नहीं धंधा है। इससे लाख गुना बेहतर है मेरा वही धंधा।

कमाल चौंका। थोड़ी देर बाद बोला—फिर वही करोगी?

जम्हाई लेते हुए कायनात ने कहा—शायद फिर कोई आमीर रज़ा जैसा आदमी मिल जाए। अब तो मैं बिल्कुल होशियार हो गई हूं। मेरा इश्क-विश्क का चक्कर भी खत्म हो गया। मेरी इस जिंदगी ने मुझे समझदार बना दिया है।

कमाल ने सधे लहजे मे कहा—ये समझदारी नहीं, बिल्कुल बेवकूफी है। जवाब दो, तुम्हारे पास कोई हथियार है? हथियार माने, जिसके सहारे तुम अपनी हिफाजत कर सको और अपनी जिंदगी जी सको। जैसे बिल्ली के हथियार उसके पंजे है। परिंदे के पास उनके चंगुल और चोंच हैं। मजदूर के पास दो हाथ हैं। शायर के पास उसका हथियार कलम है। आर्टिस्ट के पास उसका आर्ट है। टाइपिस्ट के पास टाइप करने का हथि-यार है। तुम्हारे पास ऐसा कौन सा हथियार है?

कायनात इस सवाल का कोई जवाब नहीं दे सकी।

तब कमाल ने कहा—तुम समझती हो, तुम्हारा ये जिस्म और हुस्न तुम्हारा हथियार है? जिस्म और हुस्न कभी उस मायने में कोई हथियार नहीं हो सकता, क्योंकि यह पराई चीज है। यह पहले से ही बिकी हुई है। ये बाजार का माल है और माल को खत्म होते देर नहीं लगती।

कायनात रोने लगी।

कमाल बोला—आंसू कतई कोई हथियार नहीं है। जैसे गुस्सा करना असलियत से भागने का सबूत है, उसी तरह रोना उसी सबूत का सबूत है।

कायनात आगे कुछ न बोली।

कमाल ने कहा – मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकता हूं ?

वह रोती हुई बोली—मेहरबानी करके आप यहां से चले जाइए और मुझे मेरी किस्मत पर छोड़ दीजिए।

कमाल ने पूछा—ये किस्मत क्या चीज होती है ?

कायनात ने उसे गुस्से से देखा।

कमाल खुश होकर बोला – वाह, ये गुस्सा ! इसे कभी दिखाओ तो सही।

यह कहकर कमाल सुलतानखाना से बाहर चला आया।

गुलफिशां में आकर कमाल ने तीनों बहनों के सामने कायनात की कही हुई वह वजह बताई—"चिकन का यह काम आदमी को वक्त से पहले बूढ़ा बना देता है।"

अम्मी ने यह बात सुनकर कहा – कौन कहता है ये ? जो काम अपने घर में बैठ कर अपनी खुशी से किया जाता है उससे इंसान कभी बूढ़ा नहीं होता।

इस पर गुल बोली—अम्मी, हम ये काम अपनी खुशी से तो नहीं कर रहे हैं, मजबूरी से कर रहे हैं। फिर तो ये कोई काम नहीं हुआ। असली काम वही है जिससे काम करने वाले को आजादी हो, वरना ये सब कुछ मजदूरी है। इस सिलसिले में, मैं कायनात से काफी हद तक इत्तिफाक करती हूं।

तहमीना झुंझला कर बोली – बड़ा आई काम करने वाली !

गुल ने पूछा—लोग हमारे इस काम के खिलाफ क्यों हैं ?

अपाला बोली - हम अपने घर में काम कर रहे हैं, इसी की खिलाफत लोग कर रहे हैं। इस खिलाफत की बुनियाद उस अंग्रेज नजरिये में है, जो यहां की दस्तकारी देखकर बिल्कुल घबरा गया था। जहां दस्तकारी है, जहां हर काम में हुनर है, खुदा है, उसी का दुश्मन अंग्रेज था, क्योंकि उसे मिल चलानी थी। मिल के लिए आर्टिस्ट की जरूरत नहीं थी, सिर्फ मजदूर की जरूरत थी। जैसे कोल्हू के लिए एक खास तरह के बैल की जरूरत होती है। उसे यह पता था कि जब तक आर्टिस्ट रहेगा तब तक मजदूर नहीं मिलेगा। जब तक लोग अपने घरों में रहेंगे तब तक फैक्ट्री नहीं चल सकती थी। इसीलिए घरों को बर्बाद करना जरूरी था।...

गुल तहमीना के चेहरे को देख रही थी। तहमीना अम्मी को देख रही थी। कमाल अपाला को देख रहा था।

अपाला कहती जा रही थी – आदमी, मेहनत जानवर से कराता है।

अगर आदमी वही जानवरों वाली मेहनत करने लगे तो उससे घटिया जानवर और कौन होगा ? सबसे अपनी जुबान में बोलना और सबके साथ अपना काम करना, यही काम है।

अपाला की यह बात सुनकर गुल, तहमीना और कमाल सब ताज्जुब में पड़ गए। सबके मुह से एक ही सवाल निकला—चिकनकारी का हमारा ये काम क्या काम नहीं है ?

अपाला उसी लहजे में बोली—अगर इस काम में आजादी नहीं है तो ये काम नहीं, महज मजदूरी है। मजदूरी और मजबूरी में कोई फर्क नहीं।

यह सुनकर सब चुप रह गये।

अम्मी ने कहा—या अल्लाह पाक, मैं कहती थी न, मेरी बेटियां मजदूर नहीं हो सकती।

अपाला ने बढकर अम्मी जान को अपनी बांहों में भर लिया।

अम्मी जान कहती जा रही थी—बेटी, तूने सच कहा—बोलने और काम करने का अपना आदि है और एक अंत है, जैसे संगीत में होता है। मजबूरी की मेहनत का न कोई आदि है न अंत। बेटी, तुम्हारे अब्बा जान बताते थे कि वाजिद अलीशाह के जमाने में जो रासलीला यहां होती थी, उसमें काम करने वाले लोग नहीं होते थे, एक्टर होते थे। वह बताते थे, एक्टर वह है जो काम करे और बोले भी। अपने काम के अलावा किसी का नौकर न हो।

उसी समय गुलफिशां के फाटक पर एक तांगा आकर रुका। कई बूढ़ी औरतें बहुत दिनों बाद गुलफिशा में दौड़ती हुई आईं।

—देखो बेटियो, तुम्हारे अब्बा जान तशरीफ लाए हैं।

तीनों बेटियां बाहर अब्बा जान के पास दौड़ी। अम्मी आंगन में मस-मली चटाई बिछाकर इबादत करने लगीं।

कितने दिनों बाद अब्बा जान अपने घर में लौटे थे।

घर यानी गुलफिशा।

वह बेटियों के साथ जिस तरह से गुलफिशां की दहलीज पार कर आगन मे आए थे, ऐसा लग रहा था जैसे वह इस तरह रोज आते रहे हैं।

अम्मी ने अपनी इबादत भरी आंखों से अपने शौहरजान को देखा और फफककर रो पड़ी।

अब्बा जान ने अपनी बेगम को बांहों में भर लिया।

अगले दिन सुबह के नौ बजते-बजते बाहर के बड़े कमरे में, जो कभी गुलफिशां का ड्राइंग रूम हुआ करता था, उसमें निराश्रित महिला कर्म-

शाला की औरतें और लड़कियां आ गईं।

अम्मी जान ने अब्बा जान को रात-भर में जैसे सब कुछ बता दिया था, कुछ बोल कर और कुछ खामोश रहकर।

अब्बा जान अपने भीतर के कमरे की अधखुली खिड़की से कर्मशाला की औरतों को काम करते हुए देख रहे थे। कुछ जरी का काम कर रही थीं और कुछ चिकनकारी कर रही थीं। खास बात उन्होंने यह देखी कि सबकी उंगलियां और आंखें उनके अपने काम पर लगी थीं, मगर उनकी जुबान एक-दूसरे से बातें करने में लगी थी और कान एक-दूसरे को सुनने में लगे थे। कोई किसी से अपना दुख-दर्द सुना रहा था। कोई किस्सा कह रहा था। कोई दास्तान सुना रहा था।

अपाला ने अब्बा जान से पूछा—आप यहां से क्या देख रहे हैं? आइए, कर्मशाला में चलिए।

अब्बा जान बोले—अभी मुझे झिझक है। दो-तीन दिन बाद ज़रूर चलूंगा। तुमसे एक बात जानना चाहता हूं, बेटी। ये सब काम करने वाली इस तरह बातें क्यों कर रही हैं?

अपाला के चेहरे पर एक अजीब-सी मुस्कान बरस गई।

वह बोली—काम करना और बोलना, यही तो दो असली चीज़ें हैं। काम उसे इंसान बनाए रखता है और बोलना सबको आपस में बांधे रखता है। माडर्न इंडस्ट्री ने इंसान से काम की जगह सिर्फ मेहनत लेना शुरू किया है। उससे उसका बोलना छीनकर, इंसान की जगह उसे मज़दूर-जानवर बना दिया है। मज़दूर-जानवर से आप जो काम लेना चाहें, खुशी से ले सकते हैं। क्योंकि वह बोल नहीं सकता। उसका मज़े से खरीद-फ़रोख्त हो सकता है, क्योंकि वह अकेला है।

अब्बा जान की आंखें खुली की खुली रह गईं—ये अपाला मेरी बेटी है, ये कौन है जो इस तरह बोल रही है?

अपाला कौन है?

अपाला वह या मैं?

अगले दिन सुबह अखबार में तहमीना ने एक खास खबर पढ़ी। वह खबर लखनऊ की ही थी।

खबर यू०एन० आई० की दी हुई थी।

खबर यह थी कि तीन सौ लड़कियां जिनकी उम्र 9 साल से लेकर 20 साल की थी, उन्हें बिहार और नेपाल बार्डर से एक संस्था द्वारा यहां लाया गया था। उस संस्था से एक बड़े सरकारी अफसर का सीधा

ताल्लुक था। ये सारी लड़कियां 'धंधे' के वास्ते बेची जाने के लिए थी।

तहमीना ने यह खबर पढ़ी तो उसकी तबीयत खराब हो गई। कमाल और अपाला उस खबर को पढ़कर फौरन एक साथ गुलफिशां से बाहर निकले।

पहले पुलिस को इत्तला दी। फिर उस जगह गए, जहां उन्हें लड़कियों के रखे जाने का अंदेशा था। वहां जाकर देखा तो एक तरफ नौची किसी से हंस-हंसकर बातें कर रही थी। दूसरी तरफ कल्पनाथ और बाबूसिंह आपस में बातें कर रहे थे।

कमाल और अपाला ने उस पूरे मंजर को चुपचाप देखा। फिर आपस में बातें करते हुए दोनों लौटने लगे। तभी नौची दौड़ती हुई उनके सामने आ खड़ी हुई।

हाथ झमकाते हुए बड़े नखरे से सिगरेट का धुआं फेंकती हुई बोली—हाय अल्लाह! आप ही का नाम अपाला है। हाय हाय! ये हुस्न और जवानी, ऐसा तो मैंने लखनऊ मे कहीं देखा ही नहीं! हाय! किसी की नजर न लग जाए।

अपाला उसका शुक्रिया अदा कर अपने रास्ते चली गई।

वे अक्तूबर के आखिरी दिन थे। गुलफिशां मे अब्बा जान के आ जाने से पहली बार वह घरेलू माहौल मौजूद था जो गुलफिशा वालो को इधर कभी मुअस्सर नहीं हुआ था।

शाम के सात बजे रहे थे। हल्का-सा अंधेरा छाने लगा था। अब्बा जान, अपाला और कमाल के साथ गुलफिशां की छत पर खड़े बातें कर रहे थे। उसी समय गुलफिशा के सामने, चबूतरे के पास अहाते मे एक मरसीडीज कार आकर रुकी। कार का ड्राइवर बाहर निकला और इधर-उधर देखने लगा।

सबसे पहले कमाल की नजर उस गाड़ी पर पड़ी। फिर अपाला की और तब अब्बा जान की। ड्राइवर उधर से गुजरने वालों से कुछ पूछ रहा था। तभी ड्राइवर के मुह से अपाला का नाम सुनाई पडा।

—यहां कोई अपाला जान रहती हैं?

[illegible] गाड़ी के पास

[illegible] मे घुत्त

अपाला ने पूछा—आपकी तारीफ?

वह बोला—ओह, तो वह आप ही हैं। वाह! क्या माल है!

अपाला ने बड़े इत्मीनान से पूछा—आप किस माल की बात कर रहे हैं ?

वह भी उतने ही इत्मीनान से बोला—ऐसी अनजान क्यों बनती हो, मेरी जान ! मैं तुम्हें मुंहमांगा नजराना दूंगा।

अपाला ने पूछा—आपको यहां किसने भेजा ?

उसने ड्राइवर से कहा—वह कागज दिखाना।

ड्राइवर से वह कार्ड लेकर उसके पीछे लिखे हुए अपाला का नाम और पता पढ़ते हुए बोला—अलीरज़ा एम० ए०, एल० एल० बी० ने यहां भेजा है।

यह कहकर उसने वह कार्ड अपाला की ओर बढ़ा दिया।

वह कार्ड लेकर अपाला बोली—आइए, आप अन्दर तशरीफ रखिए। मैं आपसे कुछ बात करना चाहती हूं।

ड्राइवर ने कमाल को आते हुए देखकर भागने का इशारा किया और गाड़ी धूल उड़ाती हुई तेज़ी से अंधेरे में गायब हो गई।

अपाला गुलफिशां के उसी चबूतरे पर खड़ी थी। उसके सामने एक ओर अब्बा जान खड़े थे, दूसरी ओर कमाल।

अपाला ने पूरी बात उन्हें बताई। अलीरज़ा का वह विज़िटिंग कार्ड भी दिखाया।

अब्बा जान गुस्से से कांपने लगे थे।

कमाल होंठ भींचे उस सीन को याद कर रहा था जब कभी वह उस आमीर रज़ा की मरसीडीज कार का ड्राइवर बना था और कार को सुलतानखाना के चौराहे पर इसी तरह ले आया था।

अब्बा जान तड़पकर कह रहे थे—चलो, हम अभी चलते हैं। देखते हैं वह कमीना अलीरज़ा कहां है ? उस गाड़ी का नम्बर मैंने नोट कर लिया है। मुझसे बचकर जाएगा कहां ?

अपाला ने अब्बा जान का हाथ पकड़कर कहा—सुनिए, अगर आदमी को अकेला छोड़ दिया जाए तो लोग उसे 'करप्ट' कर देते हैं। वही लोग फिर समाज को बर्बाद करते हैं। अगर समाज को उस बर्बादी से बचा लिया जाए तो मनुष्य उसमें से फिर दिखेगा। वह फिर से दिखाई पड़ेगा। यही हमारी तवारीख की दास्तान है।

यह कहकर अपाला ने जिस तरह अब्बा जान और कमाल को एक साथ देखा, जैसे तुलसीदास की कोई चौपाई और मीर का कोई शेर ज़ुबान की बजाय आंखों में उतर आए।

अब्बा जान गुस्से से काप रहे थे। अपाला अब्बा जान से बोली—आप लोग जो कुछ करते हैं वो लम्हे भर के गुस्से और निराशा की वजह से करते है। अब इससे कुछ नही हो सकता।

कमाल ने कोई अनदेखी डोरी अगुश्ते शहादत पर लपेटकर मुट्ठी बन्द की। सीधे हाथ की मुट्ठी कसकर इललल्लाह कहा और बोला—सैंकड़ो सालों से हमने हुनर, मेहनत, कारीगरी, दस्तकारी के सारे कामकाज शूद्र जातियो के हाथो में छोड रखे हैं। मुसलमान हमारे लिए वही शूद्र जाति है, जिसे लोग हिकारत की नजरो से देखते हैं। ..

तीनो ने एक-दूसरे को एक अजीब नजर से देखा।

कमाल ने अपाला की आखों मे वो देखा, जिसे उसने अब तक नहीं देखा था।

अपाला ने कहा—जो कुछ हुआ वो पलक झपकते ही हो गया। ऐसे ही वह काम होगा, अगर हम देखते रहें और आपस मे बातें करते हुए काम करते रहे।

अब्बा जान को लगा कि गुलफिशा की यादो की धूल में दबी पड़ी कोई बात बाकायदा एक शक्ल अख्तियार कर हवा की तरह सांय-साय करती हुई बाहर गलियो मे चली गई।

OO

दास्तान के बाद

जब इस उपन्यास को लिखना शुरू किया था तब उससे पहले मेरे दिल और दिमाग मे यह बात थोडी-थोड़ी साफ हो रही थी कि जिसे 'फिक्शन' के तहद आधुनिक उपन्यास कहते हैं, या नई कहानी कहते हैं, उस विधा में कोई दम नहीं है। यह मात्र धोखा है। इसन कोई कहानी नही कही जा सकती। इसमें महज 'फिक्शन' खडा किया जा सकता है, और 'फिक्शन' जैसे तथाकथित आधुनिक माध्यम से सिर्फ अपने लेखक होने का अहंकार दिखाया जा सकता है। जिसे 'फिक्शन' कहा जाता है और जिसके साथ 'मैनकाइण्ड' को जोड़ा जाता है, इसकी कोई बुनियाद भारतीय कथा-परंपरा में नही है। मैं उसे भारतीय मनीषा मानने को तैयार नही हूं जो आधुनिकता के नाम से हम पर आरोपित की गई है।

मेरा अपना अनुभव है कि आधुनिक भारतीय मनीषा जैसी कोई चीज़ नही है। मनीषा गढा हुआ नकली व्यंजन है। शब्द अगर कोई है तो वह है परपरा। परंपरा माने जो परम से परा है। मतलब, जो परम से परा को हर क्षण जोड़ती रहती है। जबकि 'फिक्शन' की दुनिया एक छल की दुनिया है और उस दुनिया मे एक बनावटी 'मैनकाइण्ड' की ही कहानी गढी जा सकती है, क्योंकि 'फिक्शन' मे परा को—वस्तुगत सच्चाइयों की कोई गुंजाइश नही है।

आज मनुष्य की कहानी कहने के लिए क्या हमारे पास कोई विधा बाकी है? इस सवाल का जवाब पाने के लिए मैं बहुत भटका हू। एक दास्तान मेरे चित्त में धीरे-धीरे उभरी और उभरती चली गई, ठीक उसी तरह जैसे कोई गीत या कथा शुरू होती है और बाकायदा उसका अत हो जाता है।

लखनऊ स्वभावतः मेरा प्रियतम शहर है। पूरा अवध मेरे लिए भारतवर्ष का हृदय है। यहा के लोग-बाग मेरे चित्त और अत.करण के केन्द्र हैं। मेरे विचारों एव भावो के यही लोग आधार हैं। इन्ही से मैंने जाना है कि साधारण से ही असाधारण बात पकडी और समझी जा सकती है। जो ऊंचाइयों पर बैठे कठिन व्यक्ति हैं, उनसे कोई बात नही समझी जा

सकती । ये जो ऊंचाइयां और कठिनाइयां हैं, ये दरअसल आर्थिक दुनिया की सच्चाई है, जिसकी कोई समझ हमे नही दी जाती और न ही हम वह समझ हासिल करना चाहते हैं। इसी का नाम आधुनिक व्यवस्था है। 'फिक्शन' इसी व्यवस्था का अस्त्र-शस्त्र है। इसी व्यवस्था ने अपना यह आधुनिक समाज गढ़ा, जहा मानव समाज महज साधन है। माल भी नही, कच्चा माल है उसके लिए। उस आधुनिक समाज के अनुरूप 'फिक्शन' की बुनियादें डाली गई ताकि कोई इनकी दुनिया को न समझ सके। उन्ही लोगों ने आम आदमी और साधारण लोगों को अपनी 'फिक्शन' की दुनिया में लाकर और फंसाकर एक ओर बाजार का माल बनाया, दूसरी ओर कथा व दास्तान की दुनिया पर एक पर्दा गिरा दिया। पर्दा भी उन्ही का और गिराने वाले भी वही लोग।

बेइसाफी, दुख, गरीबी, शोषण और अघविश्वास के जाल मे फंसे हुए आम आदमी की कोई दास्तान हो सकती है, इसी की खोज मे निकला हुआ कमाल इस दास्तान का एक सूत्र है, जिसका अभिन्न सूत्र है अपाला।

मेरे सामने यह बात बिल्कुल साफ है कि 'फिक्शन' आधुनिक राजनीति और अर्थशास्त्र की देन है। जिन्होने यह राजनीति और अर्थनीति शुरू की, उन्हें इससे पहले एक 'फिक्शन' की दुनिया बनानी थी। उनकी वह 'फिक्शन' की दुनिया हर मुल्क मे सही समय पर ईजाद की गई। जिसे मार्क्स ने 'बुर्जुआ' कहा है, फिक्शन उसी का आविष्कार है। वह चूंकि घोर पदार्थवादी था, उसके लक्ष्य ऐसे थे जिसमें अनेक बाधाए थीं। स्वभावतः उन सारी बाधाओं को खत्म कर देना उसके लिए जरूरी था। कथा-दास्तान उसकी सबसे बड़ी बाधा थी। इसके मायने यह हुए कि उसकी सारी कोशिश यह थी कि जो हो रहा है और जो होगा, सिर्फ उसी का 'फिक्शन' तैयार किया जाए, ताकि क्या बर्बाद हो रहा है, और क्या बर्बाद हो चुका है, लोग इस दास्तान को न कहीं से सुन सकें न ही जान सकें। लोगों का ध्यान सिर्फ फायदा और मनोरंजन तक ही सीमित होकर रह जाए। फायदे और मनोरंजन की दुनिया में फंसा हुआ आदमी न स्वयं कभी आगे देख सकता है, न कभी पीछे। उसे सिर्फ दौड़ते रहना होता है। यह निरतर दौड़ ही 'फिक्शन' का यथार्थ है। यही उसका ससार है। उसके यथार्थ से परे (परा) क्या है, यथार्थ के विपरीत क्या है, यथार्थ के पीछे क्या है, यथार्थ के खिलाफ क्या है, यथार्थ से अलग क्या है, इसी का नाम 'परा' है। यही 'परा' परम से जुड़कर परंपरा हो जाती है। इसको कोई बनाता नही, यह स्वयं बनती रहती है। इसका नियामक वही है जो 'परम' है, जिसकी मूर्ति अपाला कुरान की पोथी के साथ कपड़े में सुरक्षित रखती

है, ताकि सब कुछ बरबाद हो जाए पर न वह कुरान बर्बाद होने पाए, न वह परम-मूर्ति।

'फिक्शन' की दुनिया के मालिक और निरंतर उसे बनाने वाले लोग परंपरा की बड़ी बातें करते हैं। परंपरा को ओढते-बिछाते हैं। परंपरा को खाते-पीते रहते हैं। इससे वे यह साबित करते हैं कि परंपरा केवल उपभोग की चीज है, जीने की चीज नहीं।

फिक्शन में जबर्दस्त तर्क होता है।

फिक्शन में जबर्दस्त यथार्थ होता है।

फिक्शन में हर घटना और चरित्र की बौद्धिक गारंटी होती है।

फिक्शन तैयार करने वाले इसकी बड़ी चिंता रखते हैं कि कोई और सोचने नहीं पाए, कोई और देखने नहीं पाए। वे सबके लिए खुद सोचते रहते हैं और सबके लिए बराबर देखते रहते हैं और उन्हें हर वक्त ये गारंटी देते हैं कि आपको न देखने की जरूरत है न सोचने की। इसीलिए वे सबके लिए अपनी 'फिक्शन' की दुनिया से हर वक्त नई से नई कहानी ईजाद करने में लगे होते हैं। उनकी नई कहानियों में हर वक्त उन नये दुश्मनों और नये खतरों से आगाह किया जाता है, जिनकी वजह से लोगों की जान-माल खतरे में है। इस नई कहानी को गढ़कर वे लोग, जो खुद लोगों के दुश्मन और खतरे हैं, उन पर पर्दा डाल देते हैं।

नई कहानी में तीन तत्व होते हैं। एक ओर 'मैनकाइण्ड', दूसरी ओर 'मैनकाइण्ड' के दुश्मन और तीसरी ओर उन दुश्मनों से 'मैनकाइण्ड' की रक्षा करने वाला कोई एक हीरो, जैसा कि बबइया फिल्मों की कहानी में आप अक्सर देखते हैं। नई कहानी का ये ढांचा हालीवुड का है, या इंग्लैंड या फ्रांस या जर्मनी का, इसका पता लगाना बड़ा मुश्किल है। मुश्किल और कठिन ही उसका स्वरूप है।

नई कहानी का सीधा-साधा लक्ष्य यह है कि जो लोग अर्थ और राजनीति का फिक्शन तैयार करते हैं, उन्हें अपनी नई कहानी में यह दिखाना पड़ता है कि जो उनके रास्ते में रुकावटें डालेंगे, या जो उनकी लक्ष्य-प्राप्ति में बाधक होंगे उन्हें वे इतनी ही आसानी से मिटा सकते हैं और बर्बाद कर सकते हैं, जैसा कि उनकी कहानी में होता है। कहानी का एक हीरो सारी बाधाओं को मिटाकर दुश्मन को खतम कर देता है। सारे लोग उस हीरो का काम सिर्फ देखते रहते हैं। मतलब लोग सिर्फ मूक दर्शक रहें।

फिक्शन भीड़ के लिए, जिसे 'मास सोसायटी' कहते हैं, उसके लिए बनाई जाती है। फिक्शन के बाद नई कहानी में सिर्फ यह दिखाना होता है कि अच्छा जीवन और बुरा जीवन क्या होता है? अच्छा जीवन वह है,

जिसमे आदमी बिना बोले-चालें चुपचाप अपना काम करें। मतलब माल तैयार करे और जो माल तैयार करने वाली संस्था और 'मास सोसायटी' के कायदे-कानून हैं, उनका चुपचाप पालन करे और मजे से अपने घर में रहे। मजे से माने, चुपचाप रेडियो सुने, टेलीविजन देखे और सुबह सात बजे काम पर नही, धधे पर निकल जाए। शाम को सात-आठ बजे सीधे उसी घर मे लौट आए। जो जरा भी इस रास्ते के खिलाफ चले, वही बुरा आदमी है। जो आदमी काम करते-करते दूसरो से बातें करता है, लोगों से मिलता-जुलता है और इधर-उधर की बातें सुनता और करता है वह बुरा आदमी है। और सबमे बुरा आदमी वह है, जो लोगो मे बैठकर लोगो की कोई दास्तान कहता-सुनता है।

उनसे बुरा और खतरनाक आदमी वह है जो लोगों को अपने बाप-दादाओ की कथा सुनाता है। बाप-दादाओं की कथा 'फिक्शन' वालों के लिए इसलिए खतरनाक है क्योंकि वे लोग बाप-दादाओं की तरह काम और आराम की बात सोचना शुरू कर देंगे। 'फिक्शन' की दुनिया में न तो कोई काम है, न आराम है। यहा केवल मेहनत और मजदूरी है। आराम के नाम पर केवल 'हॉबी' है। निजी मनोरजन, एकात का एकाकी खेल।

'फिक्शन' का न कोई आदि है न अंत है। इसमे कोई चरित्र भी नहीं है, हीरो-हीरोइन की बात तो दीगर है।

'अपाला' दास्तान, दास्तान है, जिसे कहकर मुझे इतनी खुशी हासिल हुई है, जिसका मैं बयान नही कर सकता। शायद इसकी वजह यह है कि दास्तान कहने वाला न कोई 'मैं' होता है न कोई एक व्यक्ति होता है। दास्तान तो लोग कहते है, और लोग सुनते है।

दास्तान के जरिए हमने ये जाना कि हिंदुस्तान मे, जिसकी राजधानी लखनऊ, दिल्ली, पटना, बबई, कलकत्ता आदि शहर हैं, भौतिक उत्पादन के सारे कामकाज बडे लोगो ने छोटे लोगो के हाथो मे छोड़ रखे हैं। जब तक छोटे नहीं होगे, बड़े कहा से होगे? जब तक 'लोग' 'माल' नही होंगे तब तक खरीदार क्या खरीदेंगे? इसमे पता चलता है कि हमारे आज के आधुनिक शहर मूलतः सामती शहर हैं और आधुनिक बाजार हैं। दोनों तरह से वसूली-केन्द्रित और खरीद-फरोख्त के अड्डे है।

लखनऊ में हिंदुस्तान के और शहर के लोग भी इस दास्तान को सुनें।
फिर से सुने।
और कहें।!

हिन्दुस्तान प्रिंटर्स, दिल्ली

कहानी संग्रह

लौटती पगडंडियां (सम्पूर्ण कहानियां : भाग-1)	अज्ञेय	35.00
छोड़ा हुआ रास्ता (सम्पूर्ण कहानियां : भाग-2)	अज्ञेय	35.00
ये तेरे प्रतिरूप	अज्ञेय	12.00
मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियां	मोहन राकेश	70.00
सुदर्शन की श्रेष्ठ कहानियां	सुदर्शन	20.00
पहली कहानी	स० कमलेश्वर	50.00
जार्ज पञ्चम की नाक	कमलेश्वर	
कश्मीर की श्रेष्ठ कहानियां	शिब्बन कृष्ण रैना	
माँ (गुजराती की श्रेष्ठ कहानियां)	अनु० गोपालदास नागर	18.00
बारह कहानियां	सत्यजित राय	30.00
दुखवा मैं कासे कहूं	आचार्य चतुरसेन	30.00
ज्योतिर्मयी	शान्ता कुमार : सन्तोपी कुमार शैलजा	20.00
खाक इतिहास	गोविन्द मिश्र	18.00
खुले आसमान के नीचे एक रात	चन्द्रगुप्त विद्यालंकार	8.00
धरती अब भी घूम रही है	विष्णु प्रभाकर	16.00
यथार्थ और कल्पना	विराज	8.00
ललक	कुलभूषण	5.00
शेक्सपियर की कहानिया	धर्मपाल शास्त्री	9.00
रवीन्द्र कथा	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	9.00
हम फ़िदाए लखनऊ	अमृतलाल नागर	10.00
कृपया दाएं चलिए	अमृतलाल नागर	14.00
भारत पुत्र नौरंगीलाल	अमृतलाल नागर	15.00
सिकन्दर हार गया	अमृतलाल नागर	16.00
त्रासदियां	नरेन्द्र कोहली	20.00
अपनी-अपनी बीमारी	हरिशंकर परसाई	(यन्त्रस्थ)
तिलस्म	शरद जोशी	(यन्त्रस्थ)
मुसीबत है	बरसानेलाल चतुर्वेदी	15.00
गंगा जब उल्टी बहे	डॉ० संसारचन्द्र	12.00

राजपाल एण्ड सन्ज़

आप इन पुस्तकों को भी देखना चाहेंगे

श्रेष्ठ अनदित उपन्यास

हरदत्त का ज़िन्दगीनामा	अमृता प्रीतम	20.00
पूरे अधूरे	विमल कर	50.00
*नंगा रुक्ख (सा० अ०)	पी० [illegible]	12.00
गरम भात	[illegible]गोपाध्याय	15.00
कौन ?	विमल मित्र	25.00
विषय विष नही	विमल मित्र	10.00
जोगी मत जा	विमल मित्र	16.00
हम चाकर रघुनाथ के	विमल मित्र	12.00
कैसे-कैसे सच	विमल मित्र	12.00
चरित्र	विमल मित्र	15.00
मुजरिम हाजिर : भाग-1	विमल मित्र	50.00
मुजरिम हाजिर : भाग-2	विमल मित्र	50.00
चतुरंग	विमल मित्र	60.00
*अमृता (सा० अ०)	कमल दास	20.00
अमृत-कुम्भ की खोज मे	समरेश बसु	30.00
शाप मुक्ति	समरेश बसु	25.00
*चित्रप्रिया (भा० ज्ञा० पी०)	अखिलन	35.00
*ययाति (भा० ज्ञा० पी०)	वि० स० खाडेकर	40.00
कठपुतली	प्रतापचन्द्र 'चन्द्र'	15.00
स्वप्नभंग	प्रतापचन्द्र 'चन्द्र'	10.00
बंधन (उ० प्र०)	नवकांत बरुआ	12.00
जड़ें	मलयाट्टूर रामकृष्णन्	10.00
पहचान न सका	गजेन्द्रकुमार मित्र	6.00
खण्डहर	बालज़ाक	15.00
कलंक	नैथेनियल हाथार्न	15.00
जंगल की पुकार	जैक लंडन	15.00
एक औरत का चेहरा	हेनरी जेम्स	15.00
अपराजित	सिंकलेयर लेविस	15.00
लालसा	एफ० स्टॉक फिट्ज़गेरल्ड	15.00

अपाला को सिर्फ कमाल जान सकता था और कमाल को सिर्फ अपाला। औरों के लिए वह एक आश्चर्य थी।

गुल अपने बालो की पोनी टेल बनाकर कानो में जिप्सी रिंग लटकाती थी। तग मोरी की काली पतलून पहनती थी। अपने बाप से नफरत करती थी, जो वचपन मे ही उन्हें छोड़कर वंबई चला गया और दौलत की दुनिया मे खो गया। गुल बाप से नफरत करती थी पर अम्मी पर तरस खाती थी। और खुद हर वक्त अपना मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करती रहती थी। वह अपनी तरह नौजवान लड़के और लड़कियों से सेक्स और 'मार्विडिटी' के विषयो पर खूब खुल कर बातें करती थी। वह 'माडर्न' बनकर 'माडर्निटी' का मजाक भी करती थी। वह घटों अपने कमरे मे डिस्को डांस का रिकार्ड बजाकर नाचती, फिर घंटो आंखें वन्द किए पलंग पर पडी सोचती रह जाती। इस तरह उस घर मे, जिसका नाम गुलफिशां था, उसमे कुल पांच प्राणी रहते थे, आयशा बेगम, तहमीना, अपाला, गुल और बूढ़ा खानसामा, हलीम। इन सबकी दुनिया में एक-दूसरे से बेखबर एक बड़ी दुनिया भी वहां मौजूद थी।

गुलफिशा, फूलों की दुनिया।

मगर असलियत में एक यथार्थ और अयथार्थ दुनियाओ का एक अजीब सगम।

अपाला के कमरे में पता नही क्यों उस रात दावत की एक महफिल संजोई गई। साफ दूध-सी सफेद चांदनी का फर्श। ईरानी कीमती कालीन, उस पर जरवफ्त की मसनदें और गुलगु ले गाव तकिये। इत्र फुलेल की गहरी खुशगवार खुशबू फैल रही थी।

दावतखाने के बाद दोनों बहनें और अम्मीजान कमाल से खूब दिल खोलकर बातेंकरती रही। अपाला खाना बनाने से लेकर, परोसने, खिलाने मे होलगी रही। घर के लोग यह देखकर ताज्जुब कर रहे थे कि अपाला जोकल थी आज विल्कुल बदल गयी। पिछले दिनों उसने जो कहा था कि सोहलवें साल का मतलव है जवानी और 'इंटेंसिटी आफ़ फीलिंग्स' और इसके ऊपर जिंदगी की एक समझ, यही है सोहलवें साल का अंदाज। इसका सबूत आज अपाला के हर कदम से साफ़ झलक रहा था। अभी पिछले दिनों उसी गुलफिशां मे अपाला ने अपनी मा और बहनों के सामने कहा था कि एक पूरे आदमी का पूरी औरत से और एक पूरी औरत से एक पूरे आदमी का मिलन लोगो ने देखा कहां है? बातों-बातों में ही अम्मी ने पूछा—बेटे, तुम मुसलमान हो न? कमाल ने सिर उठाकर कहा—जी नही।

—तुम हिंदू हो ?
—जी नहीं।
—फिर तुम कौन हो ?
—मैं सिर्फ कमाल हूं।

गुल ने बेतकल्लुफी से कमाल को गुदगुदाते हुए कहा—हाय, कमाल। फिर उसके गालो पर हल्की चिगोटी काटते हुए वह बोली—हाय, तुम कितने सच्चे हो! अप्पी दीदी, आओ, अपने महबूब शौहर से बातें करो, हम सुनें।

तहमीना ने कहा—यह हमारी कितनी बड़ी खुशकिस्मती है।

सारे लोग कमरे मे बेहद खुशी के साथ बैठे हुए रात की कॉफी पी रहे थे। गुल ने कॉफी बनाई थी। मां अपने कमरे मे जाकर सो चुकी थी।

बड़ी बहन तहमीना ने बड़े प्यार से कहा—आज सारी रात यहीं इसी तरह बैठ कर गुजार दें।

अपाला बोली—गुजार क्यों दे, इसे जिएं क्यों नही ?

गुल शरारत से बोली—यह जीना 'रिअल' नहीं है।

कमाल ने पूछा—'रिअल' क्या है ?

अपाला कॉफी पीती हुई बोली—क्या जो बहुत लोग जीते हैं, वही 'रिअल' हकीकत है ? जो बहुत कम लोग जी पाते है वह 'रिअल' नही होता ?

बड़ी बहन तहमीना ने कहा—हकीकत तो है, पर वह अकेली की लड़ाई लगती है। अपाला बड़ी बहन का हाथ पकड़कर बोली—अकेली नही है वो। अकेली हो भी तो अकेलेपन की भी लड़ाई बहुत है। उसने अगर अपनी हद को बडी करके देख लिया तो दूसरे भी देख सकते है।

तहमीना ने कहा—ऐसे जी पाने वाले लोग कुछ ही हो सकते हैं।

कमाल ने कहा—इसी कुछ को गुणा करते जाएंगे तो यह बढ़ता जाएगा।

तहमीना ने कहा—लेकिन गुणा हो नही पाता।

अपाला बोली—हो पाता है, कुछ न कुछ जरूर हो पाता है। देखिए एक मोमबत्ती की रोशनी, जितना उसका दायरा होगा, उतनी ही रोशनी करेगी। हर अगली मोमबत्ती उतनी ही जगह में रोशनी करे, जहां वह है तो रोशनी बढती ही जाएगी। रोशनी माने हकीकत, जो है। जो होना चाहिए। जो होना चाहिए पहले हमारी कल्पना की हद में आएगा, फिर हमारी जिन्दगी की हद मे आएगा'''।

तहमीना ने कहा—कुछ लोग जो इसको पहचानने का रिश्ता मानते

हैं, उनके लिए यह निकाह एक 'सेरीमनी' हो या न हो उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन आम लोग हैं जिन्हें कानून की पनाह चाहिए। वरना लोग उनका जीना हराम कर देंगे।

थोड़ी देर बाद अपाला ने कहा—शादी की बुनियाद है स्त्री-पुरुष का एक दूसरे का पूरक होना।

तहमीना बोली—शादी-ब्याह, मैरेज, निकाह इन सारे अल्फ़ाज़ों के माने खो गये हैं। ये बेमतलब के अल्फाज रह गये है। जिन्दगी से घबड़ाकर लोग शादियां करते हैं। शादियों से घबडाकर फिर उसे तोड़ते हैं। कहीं तसल्ली नही है, न शादी के भीतर न उसके बाहर, क्योंकि शादी का मतलब खो गया है।

अपाला बोली—अभी औरत औरत कहां है ? मर्द मर्द कहा है ? अभी तो सिर्फ छीनना और लूटना जाना है। पाना किसे कहते हैं इसे कहा जाना ? अभी साथ कहा देखा है मर्द ने औरत का, औरत ने मर्द का ? अभी तो आदमी ने औरत के नाम पर दासी, नौकरानी, वेश्या देखी है या देवी देखी है, स्त्री कहां देखी है ?

कॉफी का दौर चलता रहा। रात का अंधेरा छंटता रहा। गुल ने एक अंग्रेजी गाना सुनाया। आज बड़ी बहन ने भी मुद्दतो बाद गाया :

शब-ए-वस्ल की क्या कहूं दास्तां।
जुबा थक गई गुफ्तगू रह गई।।
अजब अपना हाल होता, जो विसाल-ए-यार होता।
कभी जान सदके होती, कभी दिल निसार होता।।

सुबह के चार बजे तो अम्मी आयशा बेगम धीरे से उठी और जाकर खुद चाय का पानी चढा दिया।

उस कमरे में जहा रात-भर महफिल जमी थी, तीनो बहनें कमाल के आस-पास तकिये के सहारे सो गई थी। सिर्फ कमाल जगा बैठा था। उसने देखा, आतिशदान के ऊपर एक तैलचित्र लगा था। तैलचित्र में एक दकियानूसी बूढा हरी गोट का जामा और चुना हुआ पाजामा पहने सिर पर मंदील ओढे नक्काशीदार कुर्सी पर बैठा था। यह चित्र नवाबी जमाने मे एक अंग्रेज चित्रकार ने बनाया था। यह चित्र था आयशा बेगम के बाबा का, उसके नीचे अंग्रेजी में लिखा था—नवाबजादा हश्मतुल्ला खा।

जैसे-जैसे सुबह होती जा रही थी, उस घर की एक-एक चीज, एक-एक जगह, कमाल से मानो कह रही हो, देखो—यहां मुहब्बत हुई है, शादियां हुई हैं, निकाह पढे गए है, मेहर की बातें पक्की हुई हैं, शादियां टूटी हैं। देखो, यहा से अपने प्यारो की अर्थियां निकली हैं, बरातें चढ़ी हैं। बेटियां

विदा हुई हैं, और त्योहार मनाये गए हैं। देखो, यहां गमी मनाई गई है। यहां बच्चे पैदा हुए हैं, लड़ाई-झगड़े हुए हैं, हंसे और रोए गये हैं।

कमाल पूरे घर को चुपचाप देखता रहा, जैसे उसके कानों में कोई दास्तान सुना रहा था।

यह सुबह का समय, यह जिंदगी का समय, कमाल की हर वक्त इसी समय से ठनी रहती थी। हर समय उसके कान में सुनाई पड़ता रहता था—देखता हूं तुम मेरी निशानदेही कब तक करते रहोगे ? समय कहता है, कमाल समय के भीतर खड़ा है।

कमाल को लगता है मौसम पलट-पलट कर आता है। साल बीतते हैं, गुलफिशां समय के समुद्र में छोटे से जहाज की तरह लंगर डाले खड़ा था।

ग्यारह

अम्मी आयशा बेगम ने जिस दिन अपनी बड़ी बेटी तहमीना के मुंह से यह सुना कि गुलफिशां की बेटियां मजदूर हैं, उन पर दिल का दौरा पड़ गया। डाक्टर आये, अस्पताल ले जाई गई, तब वहीं जाकर अम्मी की जान बची। मगर तब से वह पलंग पर ही पड़ गई हैं और कहती हैं, अब वह नहीं बचेंगी।

डाक्टर ने कुछ न बोलने की सख्त मनाही कर रखी है, मगर बेचारी आयशा बेगम हर वक्त यही बोलती रहती हैं—हमारा खानदान नवाब गाज़ीउद्दीन के बेटे नवाब नसीरउद्दीन हैदर का है। हमारे घर में नौकर और मजदूर रखे जाते थे। हमारे बाप-दादे नवाब नहीं, बादशाह थे।

अम्मी को बड़ी मुश्किल से इंजेक्शन देकर सुला दिया जाता। मगर जैसे ही इंजेक्शन का असर खत्म होता वह फिर जागकर बड़बड़ाने लगती —ये लोग सरासर झूठ बोलते हैं कि अंग्रेजों ने अवध के नवाबों को बादशाही इज्जत दी। उन्हें नाम ही का बादशाह नहीं बल्कि असल में बादशाह बनाकर दिखाया गया होगा। लेकिन नहीं, हमें यह नजर आता है कि उस जमाने में अवध के बाहर उन लोगों का असर तो बिल्कुल था ही नहीं, खुद अपने राज्य में भी वे इतने आज़ाद न थे जितने कि उनके पूर्वज होते आए थे। अब किसी की ताजपोशी बगैर अंग्रेजों की मंजूरी के हो ही नहीं सकती थी—ये सारी बातें गलत हैं। लोगों को तवारीख का पता

नही है। हमको बदनाम किया जाता है। लोग जाकर देखते क्यों नही कि उनकी कब्रो पर चिराग जलाया जाता है, मजलिसें होती हैं, कुरान पाठ होता है और मुहर्रम में खूब रोशनी होती है, जिसकी वदौलत गरीबों का भी भला हो जाता है'''।

सबसे छोटी लडकी गुल से ये बातें बरदाश्त नही होती। वह कहती है, चलो अम्मी, तुम्हें डालीगंज स्टेशन के पास की वह जमीन दिखा ले आएं जो अब सरकार की कालोनी बन गई है। सारे मजार उखाड़ कर फेंक दिए गए है।

बड़ी बहन तहमीना गुल को डांटती है—चुप रह, तुझे ऐसा नही कहना चाहिए।

गुल हंसकर रह जाती है—कमाल है, लोग किस तरह गलतफहमियों में जीना चाहते है, और अपने बच्चो को भी उन्ही गलतफहमियो का शिकार बनाते है। लोग सच्चाई को जानना क्यों नही चाहते?

अपाला ने गुल का हाथ पकड़कर कहा—तुमने थोड़ी-सी सच्चाई जान ली है, चलो ये मै मान लेती हूं। मगर क्या उसे कबूल भी किया है?

गुल ने कहा—मैं सच्चाई से नही भागती।

—सब इसी गलतफहमी मे रहते है।

—मैं नही हू।

—यह "मैं" क्या है, जानती हो?

—मैं मायने 'आई', 'आई' मायने गुलनार।

अपाला चुप रह गई। थोड़ी देर बाद बडे प्यार से बोली—हमे कुछ भी पता नही है कि सच्चाई क्या है? सच्चाई के ऊपर लोगों ने इतने पर्दे डाल दिए हैं कि उनमे झांका भी नही जाता। अगर सच्चाई का जरा भी पता हो जाए तो कोई किसी को गलत नही समझेगा। हमारी अम्मी अपनी हालत से मजबूर हैं, हम अपनी हालत से।

ठीक दोपहर के वक्त गुलफिशां मे कमाल आया। वह अम्मी के पलंग के पास चुपचाप बैठा रहा। अम्मी की जब नीद खुली, तो कमाल ने अपने हाथों से अम्मी को एक बच्चे की तरह समझा-बुझाकर उनके हाथ-मुह, पैर को गरम पानी से धोकर 'स्पज' किया। इस काम में अपाला भी उसके साथ थी।

कमाल ने अपने हाथों से अम्मी को खाना खिलाया। पलग पर बिना इजेक्शन के सुलाने की वह तरकीब सोचने लगा। अम्मी कुछ न बोलें, चुपचाप आंखें बन्द किए सो जाए, यह मुमकिन कहा था? अम्मी के दिल मे तो आग लगी थी कि वह खुद नवाब की बेटियो की खानदान की और

उनकी बेटियां आज मजदूर ? यही वह आग थी जिसमें बेचारी अम्मी झुलसी जा रही थी। बेचारी का इसमें अपना क्या कसूर था ?

अम्मी ने कमाल का हाथ पकडकर कहा था—बेटे, तुम मेरी बेटियों को समझा दो कि वे अपने आपको कभी मजदूर न कहें, न मजदूर समझें।

कमाल ने कहा—अम्मी, आप यकीन रखिए, आपकी बेटिया न मजदूर है, न वे अपने आपको मजदूर समझेंगी।

अम्मी ने पूरे जोर से कमाल का हाथ दबाकर कहा—बेटे, तुम यह वचन मुझे देते हो ?

कमाल ने कहा—हा, अम्मी !

अम्मी उस वक्त इतनी खुश हुई कि उनका सारा चेहरा खिल गया। तीनो बेटियों को बुलाकर कहा—सुनो।

अम्मी ने फिर वही बात दोहराथी। कमाल ने फिर वही वचन दिया। तीनो बेटियां अम्मी के पास बैठी थी। कमाल अम्मी के पायताने खड़ा था। अम्मी ने कहा—बेटे, मुझे कोई चीज सुनाओ।

—कोई किस्सा सुनाऊं या कोई गाना गाऊं ?

—जो तुम्हारा जी चाहे।

—नही अम्मी, जैसा आप कहें, मुझे वही करना अच्छा लगेगा।

—बेटे, क्या तुम ऐसा कर सकते हो कि कोई ऐसा गाना सुनाओ, जो संगीत भी हो और किस्सा-दास्तान भी हो।

—हां, क्यों नहीं अम्मी।

यह कहकर कमाल मारे खुशी के झूम गया और हाथ से चुटकी बजाते हुए गाना शुरू किया :

'बज-बज रे माटी के बरतन, गा-गा रे माटी के बरतन,
गुन गा उसके वही बजा कसीदागोई कर
जाहिर कर दुनिया के करीब, हम रैयत कैसी खुशनसीब
ऐसा दरियादिल, सखी, अमीर बशर पाकर।
बज-बज रे माटी के बरतन......।

अम्मी को नींद आ गई। सब ताज्जुब से देखते रह गए, बिना इंजेक्शन के आज पहली बार अम्मी को नींद आई थी।

आगन मे आकर बड़ी बहन तहमीना ने कमाल और अपाला से कहा—तुम दोनों कही घूम आओ। लखनऊ में ही जन्म हुआ। यह लखनऊ में घूमी भी नही है

कमाल बोला—जब तक अम्मी अच्छी नही हो जाती, यह खुद चलने-

फिरने नहीं लगती, तब तक हमें इनके पास से नहीं हटना चाहिए।

तहमीना बोली—आप लोग कहीं घूमने जाइए न, हम अम्मी की देखभाल करेंगे।

अपाला ने कहा—घूमना-फिरना कहां है ? जो यहां है, वही बाहर भी है, वही चारों तरफ है।

गुल ने कहा—जो यहां है वही बाहर भी है, यह बिना देखे-जाने कैसे कह दिया ?

अपाला बोली—कहीं जाकर ही देखा जाता है क्या ?

दोनों बहनें हार गईं। कमाल और अपाला दोनों अम्मी के पास बैठे रहे। कसीदा करने वाली लड़कियां, औरतें बाहर के कमरे में अपना काम करती रहीं।

तभी बंबई के दौरे से वहीं अलीरज़ा साहब आए और वहां के सारे समाचार पाकर न जाने क्यों, बहुत परेशान हुए। पहली बात, बिना किसी निकाह-शादी के कमाल का इस तरह गुलफिशां में अपाला के साथ रहना, बड़ा नागवार लगा। दूसरी बात, अम्मी की बीमारी की वजह भी कमाल है, इसे कहकर उन्हें यह उम्मीद थी कि इससे कमाल और उनमें कुछ कहा-सुनी होगी, मगर ऐसा भी कुछ न हुआ। उन्हें तहमीना पर ताज्जुब हुआ कि वह भी उनकी बातों का बुरा नहीं मान रही है।

तहमीना के पहले शौहर से एक बेटा है, जो कानपुर मेडिकल कालेज में एम० बी० बी० एस० करके हाउस सर्जन का कोर्स पूरा कर रहा है।

अलीरज़ा साहब ने कहा—ऐसी हालत में आप अपने बेटे फरीद को कुछ दिनों के लिए क्यों नहीं बुला लेतीं ?

यह सुनकर अपाला ने कहा—फरीद अपना काम पूरा करने में लगा है।

अलीरज़ा साहब खासतौर पर कमाल से कुछ पूछना भी चाह रहे थे, साथ ही उससे बच भी रहे थे। मतलब यह कि कमाल को उस घर में इस तरह पाकर अजीब गुस्से में थे और साथ ही वह कमाल से एक अजीब तरह का खिंचाव भी महसूस कर रहे थे।

कमाल ने अलीरज़ा साहब के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। इसी तरह अलीरज़ा साहब ने भी कमाल के बारे में बहुत कुछ सुन और जान रखा था। मगर इस तरह दोनों की वह पहली मुलाकात थी। अलीरज़ा साहब अपने आपको बहुत पढ़ा-लिखा, ऊंचे घर, खानदान का समझते थे। और कमाल को वे ठीक इसका उल्टा मानते थे।

अलीरज़ा साहब की पूरी शख्सियत कुछ इस तरह की बनी हुई थी

कि उन पर दो तरह के नशे उठते थे। जब वह किसी गरीब और मजबूर को देखते थे, तब उन पर 'कम्युनिज्म' का नशा चढता था और उसी नशे की हालत में वे पूरी दुनिया को देखते थे। मगर जब वह किसी ऐसे मामूली आदमी को देखते जो खुद्दार भी है और किसी की दया का मुहताज नहीं है, तब उन पर दारुल इस्लाम का असर पडता। तब वह हर आदमी को इसान के रूप मे न देखकर उसे हिंदू और मुसलमान मे बांटकर देखते थे। पहले नशे के तहत वह हिंदुस्तान को कम्युनिस्ट इडिया के रूप में देखना चाहते थे और दूसरे नशे मे पूरे हिंदुस्तान को दारुल इस्लाम के रूप में।

बगल के कमरे से बरामदे मे आती हुई गुल बोली—मिस्टर अली-रज़ा साहब, आप आदमी नही किताब हैं। आप कभी इंसान की तरह कोई छोटी-मोटी बात भी तो कीजिए।

अलीरज़ा की निगाह कमाल पर टिकी थी। कमाल का पूरा ध्यान बीमार अम्मी पर था।

अलीरज़ा ने कहा—गुल, आजकल तुम क्या कर रही हो ?

—क्या मैं पूछ सकती हूं कि आजकल आप क्या कर रहे है ? कहां से आ रहे हैं ? कहां जाने की तयारी कर रहे है ? सच, आप तूफान की तरह आते है और आधी की तरह चले जाते हैं।

अलीरज़ा ने गुल की बातो पर जरा भी ध्यान न दिया। ऐसी उनकी बनावट ही है कि वह हर वक्त या तो इस्लाम के खतरे की बात सोचते रहते है या यह सोचते रहते है कि मुसलमानों को कम्युनिस्ट हो जाना चाहिए।

अलीरज़ा ने सबको सुनाते हुए बड़ी गभीरता से कहा—तुम सबको यह मालूम होना चाहिए कि दारुल इस्लाम का क्या मतलब होता है और क्या मतलब होता है दारुल हर्ब का ?

यह कहकर वे खुद बताने लगे, दारुल इस्लाम का मतलब है, मुस्लिम उसूलों और कानूनों के मुताबिक वह मुल्क जो हुकूमत मे हो। इसके ठीक खिलाफ दारुल हर्ब उस मुल्क को कहते है, जो मुस्लिम हुकूमत मे न हो। इस तरह दारुल हर्ब मुसलमानों के लिए लडाई का तब तक सेंटर है, जब तक कि उस पर फतेह हासिल करके उसे दारुल इस्लाम न बना लिया जाए।

कसीदाकारी को रोक कर तहमीना ने बडी सजीदगी के साथ पूछा—तो हिंदुस्तान आपके लिए दारुल हर्ब है ?

—ऐसा तो मैं नहीं कहता, और ऐसा कहने का मेरा मतलब भी नही है, मैं तो समझ रहा था कि क्या होता है दारुल इस्लाम और क्या होता है दारुल हर्ब ?

तहमीना ने सामने आकर कहा—गुलफिशां मे ये फिजूल बातें बकते हुए आपको शर्म नही आती ? पता नही आप किस दुनिया मे रहते है। हमारे क्या हालात है और हमारी असली दिक्कतें क्या हैं, आपको क्या मालूम।

अपाला ने चुपचाप एक ट्रे मे चाय और नाश्ता लाकर उनके सामने रख दिया—लीजिए भाई साहब, नाश्ता कीजिए।

अलीरज़ा साहब नाश्ता कर थोड़ी देर इधर-उधर की बातें करते रहे। मगर जब उन्होंने यह देखा कि उनसे कोई बात नही कर रहा है तो वह चुपचाप जाने लगे। कमाल उनके पास आकर धीरे से बोला—हमें माफ कीजिए। फिर तशरीफ ले आइएगा। अम्मी की तबीयत अब बेहतर है।

अलीरज़ा ने बड़े गौर से कमाल को देखा, जैसे वे पूछ रहे हों, तुम इस घर में घुसे कैसे ? मगर अलीरज़ा के मुह से निकला—तुम लखनऊ मे क्यों रहते हो ?

—और फिर कहां रहूं ?

—हां, यह भी ठीक कहते हो। मगर क्या तुम अब यही रहोगे ?

—जी नहीं।

—माशाल्लाह, क्या जवाब दिया है।

—लो सिगरेट पिओ।

—शुक्रिया, मैं सिगरेट नही पीता।

—तुम क्या काम करते हो ? तुम हो कौन ?

अलीरज़ा ने ये सवाल करके जिन नज़रों से कमाल को देखा और जिस तरह से कमाल ने अलीरज़ा को देखा, पता नही क्यो अलीरज़ा अपने भीतर ही डर से काप गए। ऐसे तमाम लोग हर गली-मुहल्ले में रहते हैं, इनकी कोई जाति बिरादरी नही होती। ऐसा ही है वह सतराम दलाल का पिता वेदप्रकाश शर्मा। शर्मा जी भी इसी तरह जब बातें करते हैं तो अपने भीतर ही भीतर भय से कांपने लगते हैं। शर्मा जी का चेहरा जिस तरह कठोर हो जाता है, और उस कठोरता के भीतर जो कंपकपी हिलती रहती है, वही हालत कमाल ने अलीरज़ा के चेहरे पर देखी।

अलीरज़ा साहब झटके के साथ चले गए।

कमाल उन्हें विदा कर जब अंदर आया तो दोनों बहनें अलीरज़ा के खिलाफ बातें करने लगी। कमाल ने उन्हें समझाया। इसमे अलीरज़ा

साहब का क्या कसूर ? आप लोग देखिए न, वे बेचारे खुद अपने आप से कितने मजबूर है ? उनमें खुद कितना डर समाया हुआ है। उनके दिल पर उनका दिमाग चढ़ा बैठा है। और दिमाग भी क्या है, अपनी बातें उन्हें खुद ही समझ मे नही आतीं। बाते तभी समझ मे आ सकती हैं, अगर वे जिंदगी मे जी जाएं। जो बातें जी नही जा सकतीं, वे कभी नही समझी जा सकती।

गुल ने बड़ी शरारत से कमाल को छेड़ते हुए कहा—जीजाजी, बिना निकाह के आप अप्पी बहन के पति है, शौहर है, या फ्रेन्ड ?

अपाला ने ही जवाब दे दिया—ये मेरे पति है।

—यह पति क्या होता है ?

कमाल ने कहा—मैं खुद नही जानता। मैं इसे जानूगा।

गुल कहने लगी—मुझको तो बहुत से लोग जानते हैं। मैं एक बदनाम लड़की हू। मुझे लोग काली पैंट वाली लडकी कहते है, कोई 'हॉट पैंट वाली' कहता है और कोई घूरता ही रह जाता है।

कमाल ने कहा—लखनऊ शहर 'मिडीवियल' शहर है। मिडीवियल में भी यह नवाबी है। इसका मतलब यह है कि यह सारा शहर अपने-आपको कितना ही 'माडर्न' क्यों न कहे और माडर्न बनना चाहे, मगर ऐसा हरगिज नही हो सकता। यह किस्से और दास्तानों का शहर है। यहां का हर आदमी, चाहे रिक्शा वाला हो, चाहे बटलर पैलेस का अफसर हो, चाहे लखनऊ यूनिवर्सिटी की लड़की हो, चौक का कोई हलवाई हो, हजरतगंज का कोई दुकानदार हो, मिनिस्टर का कोई खानसामा हो, गवर्नर का कोई सिपाही या माली हो, सब दास्तानो की ज़िन्दगी जीना चाहते हैं। लखनऊ में ऑल इंडिया रेडियो है, विधान सभा है, टेलीविजन है। लखनऊ उत्तर प्रदेश की इसी राजधानी मे हिन्दुस्तानी राजधानी दिल्ली बनती-बिगड़ती है। इन सारी जगहो में उन्ही दास्तानो का माहौल है।

किसी से पूछिए कि यह लखनऊ शहर क्या है ? तो कोई लखनऊ के इतिहास को राम के छोटे भाई लक्ष्मण से जोड़ेगा। कोई इसे महाभारत के भीम से, कोई उसे मुगलों से जोडेगा। बहरहाल लखनऊ एक 'मिडीवियल' शहर है, जहां अफसाने हैं और अफसाने बनते-बिगडते हैं। बुरका ओढे कोई औरत जा रही हो, 'जीन्स' पहने हजरतगंज में कोई 'मॉड' लडकी जा रही हो, या भैंसा कुड के पास से कोई आदमी गुजर रहा हो, इन सबको लोग एक साथ ही दास्तान मे इस तरह जोड़ देंगे कि आप देखते रह जाएं। कत्थक नृत्य, ख्याल की गायकी, जिसकी समझ मे न

आए, वह लखनऊ में घूम जाए और यहां के लोगों से दो-चार बातें कर ले, तो उसकी समझ में आ जाएगा कि यह नाच-गाना क्या बला है ? कोई कहेगा कि यार क्या पूछते हो, एक ज़माने में इस खाकसार का वक्त था। यह जो बिल्डिंग देख रहे हो न, या इस मकबरे को देख लो, या इसे छोड़ो, इस इमारत को देखो, इसी में वाजिदअली शाह अपने ज्योतिषी से हस्त-रेखा दिखलवाते थे। इस इमारत की नींव में नवाबों की हस्तरेखायें पत्थरों पर अंकित हैं और नींव में दबी पड़ी हैं। तभी इस इमारत के ऊपर न कोई चिड़िया बैठती है, न इसके ऊपर से उड़ती है। कोई इसके आस-पास पेशाब पाखाना नहीं करता। इसमें से आधी रात के वक्त एक आवाज़ आती रहती है, मुझे पहचानो। मैं बराबर तुम्हारे साथ चलता रहूंगा। तुम मुझे छोड़ कर नहीं भाग सकते। लोग तुम्हें छोड़कर चले जाएंगे। मैं तुमको कभी नहीं छोड़ूंगा।

बारह

सुबह के छह बज रहे थे। फरवरी के आखिरी दिन थे। कमाल आमीर के पास गया। उसे जगाकर बोला—हम लोग, यानी मैं और अपाला बाहर जा रहे हैं।

आमीर ने हड़बड़ाकर पूछा—क्या बात है ? कहां जा रहे हो ?

—कहा न, बाहर जा रहा हूं। लखनऊ से बाहर। शहर से बाहर हिमालय पहाड़ में।

आमीर की आखें खुली रह गईं—क्या बकते हो ? यहां का काम-धाम कैसे चलेगा ?

—जैसे चल रहा है, वैसे चलेगा। बशर्ते कि तुम सुबह जल्दी उठा करो। नहा-धोकर जल्दी दफ्तर पहुंचा करो। हां, बेइमानी और अय्याशी से जितना अधिक दूर रह सको, रहने की कोशिश करो।

यह कहकर कमाल वहां से तीर की तरह निकल गया।

आमीर उसके पीछे दौड़ता हुआ पूछता रहा—कब आओगे ? मुझे खत देना। अपना पता देते रहना।

कमाल ने रुककर आमीर से कहा—बिल्कुल चुप रहो, ज्यादा बकवास मत करना। चुपचाप अपना काम करते रहना।

कमाल सीधे गुलफिशां आया। अपाला बिल्कुल तैयार खड़ी थी। अम्मी की तबीयत काफी सुधर गई थी। दरअसल उन्हीं से इजाजत

लेकर दोनों बाहर जा रहे थे।

ट्रेन से वे लोग काठगोदाम तक आए। वहां से दोनों पैदल चले। अपाला पहाड़ी जंगल के उस रास्ते में पैदल चलती हुई इस कदर खुश थी जैसे उसे उसकी पूरी ज़िन्दगी मिल गई हो। वहा उसे किसी बात के लिए मना करने वाला कोई नहीं था। कमाल उसकी हर बात और हर काम के साथ था। वह दौड़कर चलना चाहती तो कमाल उसके पीछे दौड़ता। वह पेड़ पर चढ़ना चाहती तो कमाल उसे उठाकर पेड़ पर चढा देता।

नैनीताल के रास्ते पर चलते-चलते वे दोनो रास्ते जान-बूझकर भटक जाते। जंगल की पगडंडियों से चलने लगते। दोपहर का वक्त था। चलते-चलते उन्हें फूलों से भरी हुई एक हरी-भरी झाड़ी मिली। झाड़ी जैसे मधुमक्खियो से भरी हुई थी। फूलो पर तरह-तरह की तितलियां उड रही थी। तरह-तरह की खुशबू झाड़ी से निकल रही थी। उस झाडी को देखते ही अपाला बच्चों की तरह चिल्ला पड़ी—आह, यही मेरा घर है। ये मधुमक्खियां मैं हूं, ये तितलिया मेरी सहेलियां है। यह खुशबू हमारे शरीर की है।

यह कहती हुई अपाला ने कमाल को अपनी बाहों मे बांध लिया। कमाल बिल्कुल चुप था। उसने अपनी आंखें बन्द कर रखी थी। ऐसा लग रहा था वह अपने आंसुओ को रोक रहा था। उसका चेहरा आसमान का ओर था और उसकी पलकें अपाला की ओर खिंची हुई थी।

अपाला ने कहा—तुम झाड़ी के उस पार जाओ। मैं इस पार से तुम्हें देखूंगी।

कमाल दौड़कर झाड़ी के उस तरफ चला गया। वह चुपचाप उधर खडा था। अपाला कभी ज़मीन पर बैठकर, कभी झुककर, कभी जमीन पर लेटकर और कभी पंजो के बल खड़ी होकर देखती। इस तरह जब काफी देर हो गई तब कमाल उधर से बोला—क्या तुम मुझे देख नही पा रही हो ?

अपाला ने कोई जवाब नही दिया। वह उसी तरह झुक, बैठ, लेटकर झाड़ी के आर-पार न जाने क्या देखती रही। कमाल उसके पास आकर बोला—क्या देख रही हो ?

अपाला बोली – तुम मेरे पास नहीं आओ, वही जाकर खड़े रहो। मैं तुम्हे झाड़ी के आर-पार देखना चाहती हूं।

कमाल फिर चला गया।

थोड़ी देर बाद अपाला खुशी से उछलती हुई बोली—कमाल, मैं तुम्हे

देखना चाहती हू ये कितनी खूबसूरत बात है।

यह कहती हुई वह फिर जमीन पर लेटकर झाड़ी में न जाने क्या देखने लगी। फिर झाड़ी के चारो ओर घूम-घूमकर मधुमक्खियों, तितलियों और पत्तियों को देखती रही।

धीरे से बोली—मैं तुम्हे देखना चाहती हूं। तुम यहां हो, यह हो। मैं यहां हूं। तुम यह हो, हम यह हैं। हम यहा हैं।

यह कहती हुई वह फिर जमीन पर झुक गई और जैसे गाते हुए कहने लगी—ये मिट्टी, यह घास, यह पौधा, यह लतर, यह मधुमक्खी, भौंरे, तितलिया, यह खुशबू इन सबके बनाने मे तुमने कितना-कितना वक्त लगाया होगा। फिर हमे बनाया होगा।

कमाल ने पास आकर कहा—तुम अब थक गई हो। चलो सड़क पर चाय की दुकान पर तुम्हें कुछ पिलाऊं।

अपाला ने उसके सीने मे अपना मुह गड़ाकर बहुत हल्के से कहा—हम यही झाड़ी हैं। यह झाड़ी आसमान है। इसमे कितने बादल घिरे हैं। तुम मुझे पाना चाहते हो, मैं तुम्हे पाना चाहती हूं। यही इस झाड़ी की खुशबू है।

दोनो सड़क पर आ गए। एक छोटी-सी दुकान पर दोनों ने चाय पी। फिर एक बस मे बैठकर दोनों नैनीताल की तरफ चले गए।

बस नैनीताल के करीब पहुंचने को थी। अपाला ने पूछा कि क्या नैनीताल बिल्कुल पास है? कमाल ने बताया कि यहां से अभी 4 कि०मी० दूर है। अपाला बोली कि हम अगले बस स्टाप पर बस से नीचे उतरकर पैदल चलेंगे। कमाल ने तत्काल बस रुकवा ली। बस से उतरकर दोनो फिर पैदल चलने लगे।

चलते-चलते एक जगह पहुचकर अपाला ने बच्चो की तरह उछलते हुए कहा—देखो ये कितने पेड़ हैं। सब हमारी तरफ देख रहे हैं। हमसे बातें करना चाहते हैं। देखो, ये सब अपने आप मे कितने अकेले हैं, फिर भी सब एक साथ हैं। कमाल, ऐसा करो कि तुम किसी पेड़ के पीछे छिप जाओ, मैं तुम्हें ढूढ़ूगी।

यह कहकर अपाला ने अपनी दोनों आंखें बन्द कर ली।

—कमाल, तुम छिप गए न?

—हा, मैं छिप गया हूं। अब चलो, मुझे ढूंढ़ो।

अपाला ने आंखें खोल दी। एक-एक पेड़ के पीछे वह कमाल को ढूढ़ने लगी। मगर इस तरह वह पेड़ों को नीचे से ऊपर तक देखने लगती थी। पेड़ो की पत्तिया, डालो की बनावट। उस पर बैठे हुए परिंदे, उस पर

रेंगते हुए कीड़े-मकोड़े, सब बड़े गौर से देखती। वह अपने-आप से हर पेड़ के बारे मे पूछती। हर पेड़ अपनी जगह पर खड़ा है। इसे यहा किसने खड़ा किया ? यह यहां क्यों खड़ा है ? यह किसके लिए फलता-फूलता है ?

वह अपने आपको जवाब देने लगती—इनके फूल और फल इनकी जुबान है। अपने फूल और फलो से ये हमसे बातें कर रहे हैं। एक जगह पर खड़े होने के बावजूद दूर-दूर तक ये घूमते रहते हैं।

इन्ही सवालो और जवाबो के बीच वह हर पेड़ के पीछे जाकर कमाल को ढूढ़ रही थी।

जब काफी देर हो गई तब कमाल पेड़ के पीछे से बोला—मैं यहां छिपा हूं।

मगर अपाला उसे इस तरह नही पाना चाहती थी। जैसे पेड़-पौधे, पशु-पक्षी करते है, उस तरह वह नही करना चाहती थी। वह बाकी बचे पेड़ो में से एक-एक पेड़ को देखती, छूती और उससे न जाने क्या बातें करती रही। अचानक कमाल उसके सामने आ गया—ये लो, मैं यहां हूं।

अपाला ने कहा—नही, नही, मैं तुम्हें इस तरह नही पाना चाहती। मैं तुम्हे तलाश करके पाना चाहती हूं। जाओ, तुम फिर किसी पेड़ के पीछे छिप जाओ।

कमाल बोला—हमें बहुत देर हो जाएगी।

अपाला ने पूछा—यह देर-सवेर क्या होती है ?

नैनीताल मे वे दोनों सिर्फ एक रात रहे। किसी होटल या लॉज मे नही, जहां आम मुसाफिर रात बिताते थे वही उनके बीच उन्होंने भी रात बिताई।

करीब ग्यारह दिन दोनों इसी तरह पहाड़ो मे घूमकर पहाड़ की जिन्दगी जीते रहे और पहाड को देखते हुए लखनऊ लौटे।

आमीर रज़ा का दफ्तर तब से बिल्कुल बन्द था। वह इस बीच न जाने कहां-कहा घूमकर अपने घर में बेकार पड़ा था। कमाल को देखते ही वह जैसे फूट पड़ा—अमां यार, तुम इतने दिन गायब रहे, मेरा सारा काम-धाम चौपट हो गया।

कमाल बोला—पहली बात ये, मैं कही गायब नही रहा। मैं पहाडों की सैर पर गया था। दूसरी बात ये, तुम्हारा काम तुम्हारा ही काम है। तुम्हारा काम अगर चौपट होता है तो इसमे मेरी कोई जिम्मेदारी नहीं है। मैं सिर्फ अपने काम के लिए जिम्मेदार हो सकता हूं।

इस बात को लेकर दोनों मे काफी कहा-सुनी हुई। खासकर तब जब